

65/1/1964  
P.M.

30.05.1964  
3/5/64

# बलचनमा (21)

( मैथिली )

NOT FOR ISSUE

मूल लेखक

ना गा जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता



चुन्नी दोसर दिन भोरगरे हमरा उठौलक आ कहलक जे फूल बाबू सँ ई काज भऽ सकत । छोटका मालिक हुनके सँ कनी दबेल भऽ सकैत छथि । चुन्नीक ई विचार हमरा बड़ नीक लागल । हम चुपचाप लहेरियासराय पहुँचि गेलहुँ, गाड़ीयो ठीक समय पर भेटि गेल छल । लोक सब सँ पुछारी कऽ कऽ बरहमपूरा आ ओतऽ सँ आतरम पहुँचलहुँ । पहुँचबा मे कनिको कष्ट नहि भेल ।

दूपहरक समय रहैक । आतरमक अंगनई मे एकटा बड़का आनक गाछ छलैक । गाछ तर एकटा कमलक (कमल) आसनी पर पलथी मारने फूल बाबू मगन भऽ कऽ चरखा काटि रहल छलाह ।

फूलबाबूक पैर पकड़ि कऽ हम कानए लगलहुँ । एकाएक पैर पकड़ने हमरा कनेत देखि फूलबाबूक मोन अकचका गेलैन आ हाथक पीर (पूनी) छूटि गेलैन मुत सेहो छूटि गेलैन । फूलबाबूक बाही मोथ तथा केश बड़ पैर-पैर छलैन्ह । देह छपारै छलैन । ठेहल धरि लघरक धोती पहिरने छलाह । बाबू भैया केँ आई तक हम एहन फकीर भेष मे नहि देखने छलियैन । फूल बाबू ठीक महात्मा जकाँ हमरा वृक्षि पड़लाह । आव तऽ बेरागी बरहमचारी लोकनि केँ बिना देकाए धोती पहिरैत देखैत छियैन । अपना जनकपूरे मे एहिवरहक कतेको बेरागी-बरहमचारी भेटतह । चोरोल, मटिहानी आओ

कतेक महंथान अपना लोकनिक दिस अछि । ओतऽ बेरागी लोकनिक पलटन सेहो रहैत छैन जकरा लोक नागा कहैत छै । ओ सब खूब मेंही मलमलक धोती घेंट सँ बान्हिक डोर मे लपेटने रहैत छथि तकरा बेरागीलोकनि बरहमगांठी कहैत छथिन ।

आतरम मे पहुँचिकऽ फूलबाबू के ओहि भेष मे जे हम देखलियैन तऽ भीतरक सब सरथा (अब्दा) उमड़ि आएल । एना तऽ प्रथमे जखन हम हुनका मालिकाइनक ओहि ठाम देखने छलियैन तखने हमर मोन हुनका मे गड़ि गेल छल । बाद मे चारि छोमात ओ हमरा पटना मे संगे रखलैन । बड़ा परेम सँ रखैत छलाह, जेना बाप बेटा केँ रखैत छैक आ आव एहि भेष मे देखिकऽ हमरा चोटेल मोन के एहन लागल जे इएह फूलबाबू हमर उच्चार करथि तऽ करथि नहि तऽ छोटका मालिकक परकोप सँ छुटकारा पाबक बार कोनो रस्ता नहि अछि । से हम हुनकर दूनू पैर छानिकऽ लुद्धसँ माटि पर परि रहलहुँ आ हिचुकि-हिचुकि कानऽ लगलहुँ ।

फूलबाबू हमरा उठा जेलनि । बेर-बेर पृष्ठऽ लगलाह जे कि भेलौ—बाबू कोन सकट तोरा ऊपर आवि गेलोक अछि ? भाए तऽ ने दुखित झीक बलचनमा तोरा बहिन के तऽने किछु भऽ गेलोक अछि ।

हमर हिचुकी बन्धे ने होइत छल । बड़ीकालतक ओ हमरा देह पर हाथ करैत रहलाह । आँगुर सँ कतेक बेर नीर पोखलनि । हमर दशा देखिकऽ हुनकर चेहरा सपेता मालदह जकाँ भऽ गेलैन । ओहि दिन हमरा बूझऽ मे आएल जे दिल भरल हो, आ भारी ठेस लागल हो तऽ खूब कानक चाही । अइ सँ मोन हलुक होइत छैक । बहुत नीर भरेला पर हमरो मोन जखन हलुक भेल तखन हिचकी बंद भेल ।

फूलबाबू ओतए सँ उठलाह, खादीक लच्छी आ पीर बला पसिया अपने बलचनभा



छटा लेलनि। आसनी आ चरखा हम लऽ लेलियनि। ओ आगो-आगो चललाह आ हग पाटी। दूनु गोटे ओइ कुटी मे अपसहुं जतए फूलवाय रहैन छलाह। फूलवाय मोने-मोने सोचने हेताह—खेत-पीत, एमहर-ओमहरक बात करत, पूनि-पामि कऽ बाधमक चीज बस्तु देखत, मोन हलुक भऽ जेतैक तखन अपने सब बात कहि देत।

कहिए चुकल छिअ जे फूल वायुक स्वभाव बड़ मीठ रहैन। हुनका बात सँ मधु चुबैत छलैन, हुनका आँखि सँ दूधक ठंढा धार फुहारा बनिकऽ बहइत छलैन। देखहो मे बहुत सुन्दर रहिय।

अपना कुटी मे जखन ओ पहुँचलाह तऽ दिनक एगारह वाजि चुकल रहैक ओ काठक बरग मे सूतक लकड़ी सभ्यारह लगलाह। हम चारु दिग देखैत छलहुं। ई कुटी एक बरका जूसक घरक एक छोटा कोठली रहैक। कौमक पातर बेबास एक कमरा के दोसर कमरा सँ फराक करैत छलैक। खम्हेली शीशोक रहैक। बरेंडो मे नाम आ पातर सरुआक व्यवहार केल गेल रहैक। ऊपर चार खट सँ छाड़ल गेल रहैक। कौमक देवाल सँ काटिकऽ चौकीम खिड़की बनाओल गेल रहैक। ओसारा सँ बातीक जाफरी सँ बीच-बीच मे घेर देल गेल रहैक। बाँसक एहन कारीगरी छह सँ पहिने हप कसो नइ देखने छलियैक। फूलवायुक कमरा मे मामूली बनु-जात रहैन। भल एकटा खाट आ काठक एक बरग। आगनि दू-दूटा ईँठ राखिकऽ काठक एक तखता राखल छलैक ओहि पर गोठ दम-बारेक पोथी। एक कोन मे माटिक घेल धानि सँ भरल राखल रहैक। छोट छिन कलमहणो लोटा लैओ रहैक। दूनु किनार मे दोरी बानहल अगगनीक नाँव पर बाँसक लागल लटकैत छलैक। ओहि पर पचहरवीं खरर का एक छोट छिन बगबोछा लटकल सुगन्धित छलैक। शीशामे मइस तीन मूख तीन दिस लटकैत छलैक। ओह

दिस लौंखि गइने ऐललनि तऽ फूलवायु अपन गरदन ईँठुवेय बजलाह—महात्मा गाँधी छिय।

महात्माजीक नाँव सुनने तऽ हम अवस्ते रही आ सुनगो एना रही जे सरकार बहादुर सँ केओ लोहा लऽ सकैत अछि तऽ गाँधी महात्मा लऽ सकैत छिय, अंग्रेज बहादुर के ओ नाक मे कौड़ी बान्ह देलखीन अछि। सरकार हुनका सँ हरान-हरान अछि। गाँधी के पकड़नाइ आ पानि मे धामि लगेनाइ दूनु मुश्किल अछि। महात्माजीके अफसर लोकनि बहलखाना मे राखि बैत छैन्ह, मुदा भैया दोसरे दिन हुनका दोसर ठाँव खराम पहीर कऽ टहलैत देखि सरकार बहादुर के पेटक पानि डोलऽ लगैत छैक। बगई मे पकड़ि कऽ बंद डेलकनि तऽ लोक महात्माजी के कलकत्ता मे देखलकैन। बहमदीबाव मे पकड़ल गेलाह तऽ मद्रास मे मीटिंग करैत पाओल गेलाह। मनिवार ककाक मुँह सँ सुनने रही जे गाँधी महत्मा के पूनाक जेलर खिसिया कऽ कोरु मे गोति देलकनि आ दू मोन सरिसो पेरवाक लेल कहलकैन। जेलर गोचने होयत जे दुबर-पातर कमजोर आदमी छिय, कोरु मे कि बहता, माफीनामा लिखि कऽ बेस जेताह। मुदा भैया, मनिवार कका कहलैन जे गाँधी बाबाक हाथ लगिते देरी अपनहि दूनु मोन सरिसो करु तेल मे बदलि गेलैक। मनिवार काका कहैत छलाह—कारी पहाड़ जेकोँ हुटा बड़का बड़का बेताल गाँधी महत्मा के दातो दास भऽ कऽ हुनका संग चलैत छैन। ओहि बेताल लोकनिक ई खेल रहैक—एहि तरहक अजीब बात सँ भरल गाँधी-महतमाक नाँव अखन हमरा जिला खबार मे फैललनि, तखन हमरा कान मे लुकर नाँव पड़ल। हम सोचैत रही जे गाँधी महत्मा केहन हेताह। मुदा हुनका मे किछु नहि गावए। सोचि-सोचि कऽ रहि जाइत छलहुँ। से बाद फोटो मे देखलियैन तऽ मोन सँ सन्तोष भेल। माथक केश छड़ल, कान छोट-छोट



आ बड़ल, बाहर कपार चेहरा कनेक नीचा दिम कड धूमल । ई रूप देखिते हमरा अतगुल लागल जे ई महतमा गाँधी छथि । ई तऽ अनमन हमरा चुभान बवा सन गेत छथि । दोसर कोटी रोबदावक रहैक । बड़िया अंगा पहिरने आ भाष पर सुरेठा बन्हने । बड़का-बड़का सौँह । सैन-सखल ओलि—ई के छथि हम फूल बाबू सँ पूछलिवेन । उत्तर भेटल—लोकमान तिलक । तऽ इही काँग्रेस के भारी थपसर छथि । ओ कहलनि जे—नहि, छथि नहि । झिनकर खगंवास भऽ गेलैन मुदा बड़का भारी गेठा छत्राह ।

तेसर कोटी दिस हाथ रेखा कऽ फूल बाबू कहलनि—ई तऽ अपना अइ ठामक राजिन्दर बाबू छथि । अपना अइ ठाम—दरिमंभाक । फूल बाबू ई छि कऽ कहलनि हुन पागल कहाँ के । अपने अइ ठामक माने खाली अपने जिला अवार मइ होइ छइ । एकर माने होइ छइ अपन प्रांत, अपन कमिश्नरी, अपन जिला, अपन थाना, अपन इलाका आ अपन देश । अइ भारत देश मे छोट नमहर नो चीज छैक । हमरा लोकनि कतए रहैत छी ते बिहार प्रांत कहवैत छैक । एकरा अन्दर उड़ीसा सेहो मिलल छैक । छोटानागपुर, भोजपुरी, तिरहुत आ मगहक इलाका सामिल छैक । राजिन्दर बाबू धरौ के रहऽ बला छथि आ गाँधी महतमाक बड़का भारी चेला छथि । आला दरवाके वकील छलाह । बहुत बड़िया प्रैक्टिस रहैत । सै, इलार मोफिल रहैत । खानदानो रोब-दाव रहैत, जमीनदारी ठाठ-बाट । सब छोड़ि-छाड़ि कऽ गाँधी महतमा के पाछाँ फकीर भऽ गेलाह अछि ।

फूल बाबू एना तऽ थम बजैत छलाह मुदा कखनी-कखनी जेना बोललक ठेकी फुजि जाइत छैक ओहिना हुनको मुँहक ठेकी फुजि जाइत छैनह आ सखन गोवा हुनका सँ दुनिया भरिक अलम-गलम सुनि कऽ । एहन समय मे किहु बार पुछनाइ आनि सेधी देनाइ हुमकह । अहीजेल हम खुप रहलहुँ ।

ओ बजिते दलाह कि घंटी बजलै । हम अकचका गेलहुँ । फूल बाबू कहलनि भोजनक बनावट छैक । बिक्रमो बूझह । हमरा मलिकान मे भोज-भात होइते रहैत छलैक । टोल-परोस आ कहियो-कहियो सबसे गौमक बाभन देवता गोज खएवालेल अवैत रहैत । बूढ़, नेना, दुआन सब केओ जखन आवि आवि तऽ केओ घरधेवा आवि कऽ जोर सँ ई आवाज लगबितथि जे बिहयो हो । बिक्रमो हो । से बिक्रमो के माने हमरा बूझल रहए मुदा भोजनक बनावटक लेल घंटी बजा कऽ ई बिक्रमो हमरा लेल एकदम नब वारा छल । मालिक कहलनि चल संगे खाएव । एतऽ ऊँच नीचक मंडल नहि छैक । गाँधी महतमा केँ गुन मानऽ बजा आश्रम निवासी ने छूत-छात मानैत छैक आउने ऊँच नीच । सत कहै छिअ भैया फूल बाबूक ई बात सुनि कऽ हमरा बड़ा अतगुल भेल, सोने-माने हँसी आवि गेल । ऊँच नीचक भेद बहुत दिन सँ चलि अएलैक अछि आ बराबरि रहवैक । चारि आदमी केँ मानला सँ की होइत-जाइत छैक । फूल बाबू कहलनि जे छोटा लड्डे आ जहदी चल ।

बातरमक भनसा पर दोहरा कात बलुथार दिस रहैक । दू चारक छोट झिन घर, कौतनक टाट आ सीशोक दू टा खास छलैक । बड़ेरी पर टिकल चार, आ पाछा दिस धूँवा बहार देवाक लेल जाफरी बला खिड़की छलैक । खैवाक कारते एक चार बला नाम एकचारी । ताइक पातक छोट-छोट बासनी ओइठाम ओछाओल छलैक । एक पाँती मे मालिक आ कऽ बस गेलाह । धारो दग बारह बाबू लोकनि छलाह । अपना सन हम एसगरे रही । कए गोटे हमरा मालिक सँ पुछलखिन—बशाकऽ अपलाह अछि । फूल बाबू ओइ बेचारी केँ आहाँ बेकारे सतवइत छिवइक हम बूझि गेलियह जे ई इशारा बाबू लोकनि के कहरा दिस रहैत । बल्लह भइया । ई इशारा छैक फूल बाबूक स्त्री दिस । हुनका फूल बाबू नहर से छोड़ि देने रहथिन ।



अपने आसुरम में बदरागिक जीवन बिता रहल छलाह । फूल बाबू हुनका लोकनि के कहलखिन आहीं लोकनि अहिना अलग टप्पू मारइत छी । ई हमरा घर सँ नहि पीलीक ओइठाम सँ आएल अछि । हुनके लोकनिक बहिषा छैन्ह ।

एक दोसर बाबू हंसइत कहलखिन—तऽ आहींक बारते कोनो शीघर बुलहिन ठीक होइत अछि अइ पर सब बाबू भऽभास कऽ हँसि पड़लाह ।

आगाँ में पुरइतक पात परतल जा चुकल छलइक । पानि भरि-भरि कऽ गिलास राखल जा चुकल छलइक । बाबाजी महाराज आब भात परतइत रहथि । हम देखल जे छठहर घोडाएल खहरक बपड़ा पहिरने चिक्कन चुन-मुन चेहरा-कोहरा चला ओइ बाबू लोकनिक सोभा में भनतिया करैकुल जकाँ लगइत छलइक । बड़ पातर टाँग, नाम देह, धँसल अँखि आ डोंड में सइल थोती लपेटने रहे । जनक सेहो सइल रहैक । छातीक हथुी देखाइत छलइक ।

हम सोचल जे वंम सँ अंगरेज बडादुर, चलि जेतइ तऽ फेर इऐह बाबू भइवा लोकनि अकसर बनतऽ आ लखन अइ बाबाजी महाराजक सेहो उद्धार भऽ जेतनि । हिनका हथुी पर साउत चढ़तनि आ चेहरा पर चिकनई अएतनि । बूढ़ सुगा भऽ गेलापर पढ़ि-गुन तऽ ई को सकताह मुदा बांकी आराम सुभीवा हिनको सेतइत । सोराज भेना पर कि हेतइक ? इ बात पटना में एक बेर हम महेन बाबू सँ पूछने रहियनि । ओ नि अबाव देने छलाह भइवा जे कि कहिय ? महेन बाबू इऐह कहने छलाह जे सोराज भेला पर सबक रिनु फिरतइक, तभक भाग चमकतइक । हमरो, तोरी ।

पात पर भात परतल गेलैक । पीतरक बांटी में शहरिक बालि । बिना मिरचाइक आबूक सरकारी छलैक । एक-एक काँक पिशाच भेटल छल । बाबू लोकनि भीजनक समय अजेत-बतियाइत रहलाह । हमर तऽ माने ठीक नइ

रहे, कोनो तरहेँ दग कीर मारि लेलहुँ आ हाथ रोकि कऽ बैस गेलहुँ । देखल, के ओ पात में ऐँठ नहि छोड़ने रहथि । उठैत बेर पात केँ लपेटि कऽ सब केओ बाहर बहरेलाह आ एक नमहर दाकी में राखि देलखिन । हाथ मुँह बोधाक हेतु कोनो खात जगह नइ छलैक, पैस मैदान रहैक ।

फूल बाबू आ हम खाकऽ ओही कोठली में अवलहुँ । फूल बाबू बिना ओछाइन के खात पर ओघरा गेला आ हमरो बैस जेल कहलनि । फूल बाबू केँ सुगरीक कतरा आ दखिनी खेवाक शोक रहैत मुदा अइ आभग में आएला पर तऽ ओ इहो छोड़ि देने रहथि । एमहर-ओमहर अँखि मारि कऽ कुटी में हम देखल तऽ थूको नजरि नहि आएल, हँ खराम अवश्य रहैत । लखन हमरा फूल बाबूक पठनपढ़ा जीवन मोन पड़ल । किमिम-किमिमक गंजी, कमोच, कुरता, पाँच-पाँच, छो-छो कोर, तीन-तीन जोड़ जूता, चारि-चारि जोड़ बीना, दू तौलिया, दू छोट अंगपोछर, दूध तन पोश मुन्नर मुतइरी, ओछाइन में गयाबला लजर कम्मल, मुन्नर सतरंजी, तोसक, जहाँच, बीन गो बैसबा । हमर फूल बाबू राजा जकाँ रहैत छलाह, आब फकीर भऽ गेलाह अछि । मोन में बड़ कचोट भेल । मुदा संगे-संग सर्वाँ से हों बड़स लागल ।

कनी काल बाद फूल बाबू पुछलनि जे कियाक अएलह अछि । फेर तऽ हम एक-एकटा पऽ सब बात कहि बेलियनि । अंत में पुछलियनि—छोटका मालिक थाना में रिपोर्ट कऽ देलखिन अछि, हमरा ऊपर चोरीक अपराध लागैलनि अछि । दरोगा तऽ नइ मानतैक । की तऽ घुस जेतै वा बात के आभा बढ़ा देतैक । अइ सँ हमरा छुटकारा कोना हेत ?

एतेक बात गुनियो लेला पर फूल बाबूक मुँह सँ एकी आखर नहि फुटलनि । हमरा सब बात के ओ पीबि गेलाह । हम सोचल जे छोटका मालिक हिनकर फूफा लगैत बथिन, इ यदि सिवारिस कऽ देतऽ तऽ छोटका मालि-



कक मोन ठंदा भ जएतेन । धाना मे के गाने मालिक रिपोट कऽ देलखीन अछि मे शांति खतम भऽ जाएत । फूल बाबू पुर्नी कीलि कऽ हमरा बऽ देतऽ अथवा कीनी दोसर खादमी के मालिकक ओइ ठाम पठोथीन । कहुना हो, काज तऽ हमर भइए जायत । मुदा फूल बाबू तऽ अगम कुआ बनि गेलाह, जाइ मे तकलो सँ लोड केँ डर लगैत छैक ।

हम सोचल जे आइ बाबू मोचि-गोचि कऽ कीनी बात कहलाह । मोर मे जखन हम जाए लागब तऽ कीनी पुर्नी जरूर देताह । हम बहुत बात सोचने रही । यदि फूल बाबूक इच्छा छैत तऽ हम मात पुस्तक अपन डीह ओड़ि कऽ हुनके गुलामी करब । फूल बाबूक मोन छैत तऽ रेवनीक गोना जइदी कराकऽ माएक संग हम भटना चलि जाएक, ओतऽ भिक्षा खीच बऽ वा दीवा घाट पर जहाजक माल दी कऽ माएक या अपन जिनगी सुदृष्ट करब । नइ जौ फूल बाबूक इएह राय छैत तऽ कि कटिहार, गिलीगुड़ी वा जलपाई गुड़ी जाकऽ चटकल मे मचरी करी तऽ ओही करब । तहि तरहक बहुत बात सोचि कऽ हम आंतरम पहुँचल रही । हमरा इही भरोसा रहे कि फूल बाबू जखन गोँधी महतमा के चेला बनि गेलाह अछि तऽ हमरा मालिक के एहि जोर जुलूमक आन्ते ओ दु बात जरूर कहथीन । गोँधी महतमा नइ बड़ा लाट सँ केराइत छथि नइ छोटा लाट सँ, नइ सरकार सँ या नइ अमला सँ । गरीबक पच्छ होत छथीन । फूल बाबूक ओही गोँधी महतमाक चेला भऽ हमरा वास्ते कि एतवी नहि करताह, कि अपना फुफ्फू-फुफ्फू के कने हुका देखीन । ओइ दिन फेर फूल बाबू हमरा सोझा मे मुँह नइ फोललनि । हम बड़ी काल तक सूतल रहलहुँ । जेठक भास रहैक । आंतरम एक बड़का कलमयागक बीच मे रहला सँ ठंदा रहैक । कुटीक बाहर ओगारा मे एक सीतलपाटी पड़ल छलैक, टूट-फूटल तन । ओच पर हम चित गऽ कऽ जे

पड़लहुँ मे तखने निन डूटल जखन गोँधीवाँ लुआकुक करैत रहथि, सौँझ होबई बला छलैक ।

ओखि नहोत उठलहुँ आ फूल बाबूक कुटीक नगदीक पहुँचलहुँ । भिजिर चढ़ल रहैक आ दूनु बरवाजा बन्द रहैक । हम कोइली फोशिकऽ भीतर नइ गेलहुँ, एतहर ओतहर घूमैत रहलहुँ । एतेक मे फेर घंटी बजलैक । ई की छैक ? खेल जे एक चौमुहाँ दलान मे बाबू भैया लोकनि जमा भऽ रहल अथि । हमहुँ ओतहरे गेलहुँ ।

बरवाजा तम्हर नइ रहैक । मुदा ओकरा दक्षान नइ कहि मंडप कही तऽ बढ़िया । चौकोर मंडप, डाँड़ भरि ऊँच । ऊपर चढ़वाक लेख चारि ईँट राखि कऽ तोक सीढ़ी बनल रहैक । खबरक पालक बनल बड़कीटा सीतल-पाटी ओछाएल रहैक, हाँसुक रूप मे लोक सब बेत गेलाह । तब बाबू भैया रहथि । हमर छोटी मलिकाइन तन चेहरा-मोहरावाली एक स्त्रीगत सेहो रहथिन । पच्छिम दिग कमलक एक चितकावर आतनी राखल रहैक । ओइ पर अंतर छमिरवला भीती चारी एक बाबू बैस गेलाह । एकर बाद सब एक प्रवाज मे श्लोक पढ़ऽ लगलाह । हमर हिमत नइ मेल जे मंडप मे जाकऽ बैसी । नीचे फराक ठाढ़ रहलहुँ । कनीकालक बाद ओ महिला भवान गाथऽ लगलीह । बाकी बाबू-भैया ओकर गाओल पद के दोहरावए लगलाह ।

अधिक किछु नहि बुझोपर एतेक तऽ हम बुझिए गेलहुँ जे गोँधी महतमाक पूजा पाठक इएह तरीका छैन्ह । हमर फूलबाबू सेहो मगन भऽ कऽ भजन अभैत रहथि । आशा छल जे राति मे भोजनक उपरान्त फूलबाबू किछु बजताह । मुदा नइ बजलाह, तऽ कछमछा कऽ आ कनी नरमी सँ हम-पुछलियैन—सरकार हमर निस्तार केना छैत ?

अइपर कनीकाल गुम रहिकऽ फूल बाबू बजलाह—हमरा तऽ बाबू गोँ-



घर से कोनी सम्बन्ध नई रहल। माय आ बाबूजी आव सेहो हमरा सँ हारि मानि लेलेन अछि। पहिने चिहो लीखिकऽ बात-विचार पूछैत छलाह। अखन हमरा दिस सँ बरोबरि ओ उदासी देखलनि तऽ थाप ओइतरहक बात चिहो मे नई लिखैत छथि। पीसीक ओइठाम हम धू बरख सँ नई गेलहुं अछि। पीसा सँ भेंटकएला हमरा तीन बरख भऽ गेल। बालचन, आव लोही कहऽ जे एहना हालत मे हमरा कोनो बातक तोरा मालिक पर कतेक प्रभाव पड़ैतैन।

अन्धारिआ राति रहैक। सोसा कुटी सँ खानऽ खखारक आवाज छठैक तऽ पहिल रातिक हज्जक निर्जनता फाटि जाइत छलैक। खगवासक मौस सँ कुकुरक मुकनाइ साफ-साफ सुनाइत छलैक। राति अधिक नहि देह पहर बीतल रहैक। सुदा आभरम मे रहऽबजाक लेल दिन मे सुतनाइ मना रहैक। नींदक भीक सँ गरमी दिन मे आभरमक बाबू-भैया कोनो मोरचा लेब छलाह? जमेत छह भैया? कोनो-कोनो मोराजी बाबू जरखा नशाकऽ दुपहरिया बितबैत छलाह कोनो बाबू नइक। सोमारा पर टहल-धूमिकऽ अपन नीन पचबैत छलाह। कोनो कोनो बाबू दू-तीन गोटे मिलिक गीता ब समाएन तऽ बेसैत छलाह। एगो बाबू एहन रहथि कि छोट-छोट शीशी मे सँ दबाइक सरितबा दाना निकालथि आ गनि-गनि कऽ ओही शीशी मे फेर ओही शाना कें रखैत जाथि। इहो आलस औचो पनेबाक एक उपाय छलैक।

माने ई कि दिन भरि सुतऽ पर आभरम मे बड़ कठिन पहरा रहे। जही सँ सौक-सकाले बाबू भैया लोकनि भोजन कऽ कऽ अपन-अपन ओखैन पर हेर भऽ जाइत छलाह। मोर एकवम खनरोखे घंटी बजे आ चठनाइ अरुी भऽ जाइक।

हम सोचल जे अखन मालिक के सुतऽ देवाक चाही, मोर भेलापर बाकी गप्प करब। सुदा फूलबाबू तऽ ई कहिकऽ बात खतम कऽ देलेन जे ई तऽ तोहर आगतक इगडा छोक, बहिषा-महतो कें। एकर निबटारा सेहो लोही इतू गोटे, कऽ लेवे। अइ मे हमर कोनो जरूरति नहि। ओजा कऽ अपन मालिक के हाथ पर पकड़। ओ तोड़ा माफ कऽ देयुन। फूलबाबू सँ हमरा जइ बातक समीप नई छल। भरोता रहए जे ओ हमरा बचावक कोनो ने कोनो रहता जरूर निकालताह।

केहन भोखा मे हम पड़ल रही। हमर सब मोह क्षणभरि मे टूटि गेल। साफ-साफ बुझाए लागल जे बाबू भैया लोकनि ओतने कालतक हमरा लोकनिक पछड़ लेताह जाबत तक हुनका लोकनिक अपन मतलब रहैतैन। देखह ने फूलबाबू एक छोटका पुरजी अपना पीसाक नाँव सँ हमरा दू दीक्षि तऽ लऽमे हुनकर महात्म कि बिगारि जेतनि। अन्धार छलैक सुकैत नहि छल। सुदा हमरा साफ-साफ बुझऽ मे आएल जे फूल बाबूक माथा भारी भऽ गेलैन अछि आ गेहना पर एक दिस गुड़कि गेलैन अछि। भैया! हो भैया! पीसा आ तरबेटाक सम्बन्ध थाप बेटाक सम्बन्ध बूझह। अइ सम्बन्ध मे ओइ छोटका पुरजी तऽ खरोज नई पड़ि जेतनि। सोराजी भऽ गेल छलाह तँ कि, छलाइता आखिर बाबू-भैया ने। गरीब-बुढ़वाक दुःख ई लोकनि की दुकथिन।

सच बूझलह भाई तखन हमरा मीन मे ई बात बँस गेल जे जेना अंगरेज बहादुर सँ सोराज लेबाक हेतु बाबू भैया लोकनि एक भऽ रहल छथि, हल्ला-फुला आऽ कंगडा कंकट मचा रहल छथि ओहिना जन बनिहार, कुली-मजूर आ बहिषा खवास कें अपना हकक लेल बाबू भैया सँ लड़ऽ पड़ैतैन।

फूलबाबू सँ कनिनो भरोसा नई रहल। कनीकाल अन्धार मे हम



बसल रहलहुँ। फेर बाहर जा कऽ दोसरा आ ओहि दूठल पटिया दिस बढलहुँ। निपट अन्हार छलैक। फेर सँ टटोरिकऽ पटिया भेटल आ ओइ पर एकि रहलहुँ। ओइ के बाद कखन नीन आबि गेल आ केना मोर भऽ गेलैक से बूझ मे नहि आएल।

ओखि मलिकऽ छठलहुँ आ फूल बाधूक कोठली दिस गेलहुँ तऽ देखल जे जिजिर चढ़ल छैक। केदार बन्द रहैक। बाबू नहाए गेल गेटाऽ हमहुँ पोखरि दिस बढलहुँ। एतए कनेक आसरमक विषय मे तोरा लोकनि केँ कहि दैत छिथइ।

ई आसरम दस बीघा जमीनक हाता मे पसरल छलैक। ताकिन बरहनपूरा, थाना लहेरियासराय जिला दरभंगा। अहठामक बहुत बड़का जमींदार बाबू शुभकर भूँहार खनवान के रहथि। नीक जमींदार मे हुनकर गनती रहैन। अस्ती-नस्ती हजारक मलपुजारी अपूल होनि। जेद हजार बीघा घनहर खेत अपना जोत मे रहैन। बीजू आ कलमी आम बाग पचासो बीघा मे छलैन। केरवनी, खदौर सब रहैन। गाय, बरद घोड़ा आ महीनक चर छलैन। जोयर पचासो बीघा जंगल रहैन। आठ-दस छोटा नमहर पोखरि रहनि। गुमश्ता, बराहिल, अमला-कमला, नीकर-चाकर देवान जी मुनशी जी सब रहैन।

बूढ़ा मालिक इलाका भरि मे राजा बाबू कहाइत छलाह। दूटा बेटा रहैन। एक हीराजी, आ दोसर मानिकजी। हीराजीक दोसर नाँव छलैन, किशुन बल्लभ, नारायण ठाकुर। मानिक बाधूक नाँव छलैन राधा बल्लभ नारायण ठाकुर।

मानिक जी पढ़ मे बड़ा तेज रहथि। कलाकला मे रहि कऽ बी० ए० तक पहुँचे छलाह। ओकरा बाद गौधी जीक लहरि मे हमरा फूलवाबू जकाँ

मानिक जी सेहो बहि गेलाह। जय-वाल्लिस्टर नई बनि कऽ अपना जिलाक नेता बनि गेलाह। अपने दरबारी नाँव मानिक जी छोटिकऽ ओ लोके राधा बाबू कहयैत छलाह। बड़ा पक्का कांछेली छलाह। एहन पक्का कि बाप आ बड़का भाई सँ झगड़ा कऽ कऽ आसरमक लेल एतेक टा अहाता ओ दफानि लेने छलाह। वैह ओइ आसरमक सबे-सवाँ रहथि। हुनका पाछो सोराजी बाबू लोकनिक एक छोटा पलटैन रहैन। शुरू-शुरू मे हिनकर शाइखनी अइ जिला मे गौधी महतमाक काज आगा बढ़ावऽ मे काफी मदद केलकैक। नकरा बाद बाप आ बड़का भाई इस्टेट कऽ एको पैसा देनाइ रोकि बेलखीन। वइ सँ नाराज भए राधा बाबू घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ बेलनि। असहयोग कि होइत छैक भाई?

गौधी महतमा ई तरीका निकालने रहथि जे शत्रु यदि बली हो तऽ लो लाठी सँ ओकर मुकबिला नद कऽ सकैत छहक, ई ओकरा सँ बजनाइ-सुकनाइ शब्द कऽ जे ओकरा कोनो काज मे मदद नहि पहुँचावह, शत्रु दक्खिन दिस मुँह कऽ कऽ डाढ़ रहेतऽ तो मुँह फेरि कऽ उतर दिए कऽ लऽ। सहयोग क शर्त होइत छैक, संग देनाइ, संग मे जुटि गेनाइ।

से भैया राधा बाबू अपना घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देने रहथीन। एतेकतक कि हुनकर आकबच्चा तक मानिक मे रहैत-रहैत। हुनकर स्त्री अपना नहर मे रहऽ लगलैन। भगवानक परताप सँ लसुर सेहो हुनक बड़का भारी जमीन्दार रहैन। आ भैया, राजा अपना बाल-बच्चाक विद्याइ रजे-खनवान मे करैत अछि। राधा बाबू केँ नगद पचास हजार तिलक चढ़ल रहैन। हाथी, घोड़ा, पालकी, खवास, जमीन-जगात सब दरेज मे भेटल रहैन। राधा बाबू जखन सोराजी बनला तऽ हुनका बाल-बच्चा के सम्हारऽ मे गलुरक धन बहुत मदद केलकैन। जिला भरि मे दु-तीन बाबू भैया अपना पलखनमा



अपना स्त्री के परदा से बाहर निकालने छलाह। ओहि मे सँ एक छलाह राधा बाबू। दूदा मासिक लखन अपना पुतोहुक बेपर्वागीक विषय मे सुनलैन तऽ हुनकर विभाग पथरा गेलैन। ओहि चीन्हा मेलेन। ओ राधा बाबू के कडा पटोलखीन जे छ्यांहीक अन्दर पैर नहि राखए। बादे सँ असहयोग शुरू भेल रईक, बेडा असहयोगक अंत कऽ देलकैन। राधाबाबूक माए मरलैन तैयो ओ घरक लोक के संग नहि देलखीन। लोक सब कहैत छलैन जे राधा बाबू अकरी नास्तिक भऽ गेलाह अछि। माएके मरला पर ते केश कटौलनि आ ते अशीच मानलैन। आनरमक तथ काज पहिने अकौं करैत रहलाह। जखन हुनकर माए मरल रैन तखन याना सवेपुर आ फुलपरासक दिस बड़ जोर बाढ़ि आएल रईक। आवमी-जन, माल-मवेशी सबक बड़ खराब दशा भऽ गेल छलैक। राधा बाबू चारि टा डेही कऽ कऽ ओइ इलाका मे अपना सगीक संग रिलीफक काज कऽ रहल रहथि।

सौंभ कऽ मंडप मे कराक आसनी पर जे बाबू बैस कऽ पूजा-पाठ करैत रहथि आ पाछौं भगन भऽ कऽ भजन गथथि वैह राधा रहथि। पोखरि दिस जएथा काक जे ओही राधा बाबू सँ हमर भेट भऽ गेल। किकि कऽ पुछलनि—बाबूक छे कि भवार। स्वार छी सरवार—हम कहलियैन। ओ चारि डेग आगां बढि अएलाह। हम गरबनि टेढ़ कऽ कऽ हुनका दिस देखैत रहलहुँ। एकाएक रुक कऽ राधा बाबू पाछा सँ हमरा दिय देखैत रहलाह आ कहलनि—आसरम मे रहबे ? तोरा अपने संग रखबो, किछु पढ़ियो लीखि जाएबे। दल-पाँच रूपैया ऊपर सँ दऽ देबो, घर पठा देल करिबे। हम किछु कहलियैन नहि। एकदम गुन-गुन रहि गेलहुँ। ओहुर सँ ओहुर पकरक बेछा करैत रही।

राधा बाबू एकदम लंगीच आबि हमरा कन्हा पर अपन हाथ रखलैन

बलचनमा

तऽ बड़ नीक लागल। नहाकऽ आएल रहथि, हथेली हेमाल भऽ गेल छलैन। हम सुति कऽ उठल छलहुँ। राति भरिक गरमी देहपर होलैत छल। कन्हा पर हुनकर ठंडा हाथ हमरा बड़ नीक लागैत छल। एक नजरि हुनका दिस देखि कऽ फेर हम अपन पयनी नीचा खसा सेलहुँ।

की बात छे—बाबू पुछलनि। हम फेर चुप रहलहुँ। आव बार लग मे आवि कऽ ओ हमर टुड़दी उठौलनि। लाज आ किझक सँ मरल हमरा ओहि मे अपन ओहि दैत ओ बजलाह—नहि रहबे आसरम मे ?

माथ हिला कऽ लखन हम हँ कहलियैन तऽ ओ झोड़ि देलैन। फेर कहलैन जो हम 'लूल बाबू' सँ बात कऽ लेब।

हम पोखरिक भीड़ पर पहुँचलहुँ। दुपुख पुरान पोखरि छलैक। हरिवर कचौर पानि। चारु दिस सिमिटक पक्का घाट। भीड़ पर तीन दिस कलमी आमक गाछ, एक दिस शीशोक सुन्दर पांती देखि कऽ किछु काल तक ओही ठाम भोज गइल रहल। भीड़ सँ नीचा उतरि कऽ खेत मे दीसा फिरलहुँ आ पोखरिक एक कोन मे जतऽ पैरक चेन्ह बनल छलैक आबि कऽ खोज कएलहुँ। पक्का घाट पर आवि कऽ हाथ मटिअएलहुँ। आमक पल्लव ताकि कऽ दातमानि कएलहुँ ओकरा चीर कऽ ज़िम्बिया बनेलहुँ आ जीह के साफ कएलहुँ।

कपडा हमरा नामूलिए छल। आठ हाथक मैल पुरान धोती छल। देह पर गंजी आ दू हाथक अंगपोछा। धोती फेरि कऽ पहिरऽ लेल राखि लेलहुँ। बराबोरि मे अंगपोछा के बान्हि डाँड़ मे लपेटि कऽ पोखरि मे नहाय लेल उत्तरलहुँ। कहबी छै, 'आन गामक पोखरि आ अपना गामक गाँधी,' डेरावन होइत छैक। हमरो पानि मे जाइत किछु जर भेल। थुदा हम होइत तऽ बनिबे छलहुँ तखन डर कथी के ? ई ओइ नमहर पोखरि वा झील मे अवश्य इरवाक चाटी, राइ मे, गोहि, बीच, धरियाल, सोस या बड़का-बड़का रहु,

बलचनमा



सुना आ भाकुर माछ रहैत छैक। ई गाँव धारक कात नइ भेला सँ अइ पोखरि मे मोहि धड़ियाल भइए नइ सकैत छैक, से निश्चिन्त भइ कइ बड़ी काल तक पानि मे बोहियाइत रहलहुँ। हेलाइ आ मोहिनाइ दू फराक बात छैक भैया। हाथ-पैर मारैत जाह तइ हेलाइ भेलइ। एना बेसीकाल अथाह पानि मे कैल जाइत छैक। गरमीक दिन मे अधिक काल तक तरा-बटक मत्ता लेबाक हेतु लोक थाह पानि मे पड़ल रहैत अछि। सछँसे घर पानि मे रहैत छैक आ माथ ऊपर। एकरे बोहियेनाइ कहैत छैक। बुझलइ भैया।

मीन जखन तिरपित भइ गेल आ देह हेमाल भइ गेल सखन शहर भेलहुँ। जइसी-जइसी धोती पहिर कइ अंगपोछा खिचलहुँ आ ऊपर अएलहुँ।

हमरा तइ होइत छल जे आतरम मे रहि जाइ, मुदा माए बहिन के बोइ दशा मे छोड़ि देनाइ खराब बुझइत छल। दोसर बात ई रहैक जे छोटाका मालिक थाना मे चोरी के रिपोर्ट कइ देने रहथीन। हमरा बुझाइत छल जे चारि छी माम जेल मे मज्जाए भोगइ पड़त।

नहेला सँ देह तइ ठंडा भेल मुदा मीन के किर्किर फेर गरमावइ लागल। मारिए पैर लइ कइ हम आसरम घुसलहुँ, आ फूल बाधूक कोठलीक भीतर अएलहुँ। ओ पितसिल सँ किछु लिखैत छलाह। हमरा हुँकारी भरि कइ इशारा कएलनि जे लग मे आविकइ बैठ जा। हम बैठ गेलहुँ। लिखनाइ समाप्त कइ कइ बतलाह—राधाबाबू हमरा तोरा बिषय मे कहैत छलाह। ओ तोरा अथना संग राखइ चाहैत छथिन। किथाक ने रहि जाइत छै।

हम कहलियैन हमर गरदिन तइ फँसल अछि—जइल हेत कि घुरमाना के जाने। बाबू कहलनि किछु नइ हेतौ, तौ राधा बाबू के सने रहि जा। भव बात ठीक कइ लेल जाएतैक।

हमरा थड़ा बजसुत लागल कीना सब बात ठीक कइ लेल जाएतैक।

बलचनमा

कीना केओ छोटाका मालिक पर अंकुश देतैक। फेर मोने मीन हमइ तय कएलहुँ—जे होने हो राधा बाबू फूल बाधू सँ सब बात नइ तइ किछु बात अवश्ये बुझि नेने हेताह आ वैह कोनो ध्योत लगेताह। नहि तइ फूल बाबू सँ कि हेतैन। ई तइ अपने मारी दबू छथि।

बातो इएह रहैक भैया। राधा बाबू नामी तोराजी रहथि। हमरा थोड़ामक थड़का मालिक सँ राधा बाबू के कोनो सम्बन्ध सेहो छलैन। ओ एक चिट्ठी बड़का मालिकक बेटाक नाँव पढोलखीन आ दोसर चिट्ठी दरीगाजीक नाँव। दरीगाजी एक पैर एस० पी० ओखि सँ राधे बाबूक बदोक्त बाबल छलाह तहिना सँ दरीगाक दिलमे राधा बाबूक लेल बहुत सम्मान भइ गेल छलैन। कहबाक मतलब ई थीक जे हमर मामला समाप्त भइ गेल। सजाए-तबाइ नहि भेल आ ने जरियाना भेल। बात अतै-ततै दबि गेलैक। छोटाका मालिक अइ के बाद गाँव सँ चलि गेलाह।

छोटाका मालिकक ई करनी चोरेल नइ रहि एकलनि। हमरा बहिन पर जे ओ हमला कैने रहथीन से बात सहे-सहे सछँसे गाँव मे कैल गेलैक। बाबू-भैया लोकनि भीतरे-भीतर एक दोसरा पर सह चलबैत रहैत छथीन। समाजी शत्रुता बड़ खतरनाक होइत छलक। हमरो मालिक सब मे आपसक दाम पेंच खूब चलाइन। एक दोसरक कमजोरीक नक्का छठावइ मे बाबू भइया अपन एब बुद्धि लगा दैत रहथि। कहबी छैक जे सतरंज खेलखला के बागाक दस चालि गोचिकइ राखि देवइ पढ़ैत छैक। बाबू भैया लोकनि अपना मे एक दोसरके माइ करवाक हेतु सतरंज जे जे शह पर शह सोचैत रहैत छथि।

से जखन छोटाका मालिक पर मलिकानक छोटाका-बड़काबाबू लोकनि नाजक भौं सिक्कोइस लगलाह तइ दरंड गाँव सँ चलिए जाय मे अपन नीक दुष्ट-

बलचनमा



लौन । रेवनी, हमर माए आ हमरा पर ये खीक रहैत तकरा ओ दुगता कऽ सोनक कोनो गौठ में बान्हि जेलौन आ कलकत्ता दिस चलि गेलाह ।

हम राधा बाबूक संगे रहऽ लगलहूँ । सब सँ पहिला काम ओ जे कएलनि से इ जे हमरा वास्ते ओ असमानी रंगक पैजावा लिया बेलौन, खांकी रंगक हाथ कमीज आ लज्जर टोपी । सब छहरक जखन हम पहीर कऽ तैयार भेलहूँ तऽ कहलौन—बेओ पूछो तऽ ई नइ कहि अही जे आसरमक हम नोकर छी । पूछलियैन जे कि कहबैक ? तऽ कहलौन जे कहियही जे काँगरेसक भोलोटियर छी, बुझलै ? हम मथा छिला देखियनि । आव फूल बाबू सँ हमर कोनो लागि-भागि नइ रहल । रहे बाबू हमर मालिक छलाह ।

हमर छमेर सतरह पार करैत रहे । मोछत पम्ही आवि रहल छल । देखऽ मे सुन्दर नहि छलहूँ तऽ खराबो नइ छलहूँ । कहिए ऐने छि भइ जे हमर बाबू दाव बढ़िया फाडीक नज्जल लोक छलाह । छाती चाकर, विस्तृत कपार, विशाल चेहरा हाथ पर सऽटल थाला । हमर माए सेहो पिण्डस्थाम जरूर छल, मुदा चेहरा मोहरा, लँचा-ढाँचा बड़ मीक रहैक । छोटि छमेर के हम रही तखने बाबू मरि गेलाह । घर पर कष्टक बहाड़ खति पड़ला सँ हमर गिरस्ती चौपट भऽ गेल छल । दादी आ माए नइ जानि कतेक कठिन सँ पालिपोति कऽ हमरा दुनू भाई बहिन के समहर कएने छल । नइ जानी कतेक बेर नीर सँ हमर बचपन पटाथील गेल छल ।

राधा बाबू आसरमक महंथ रहथि । बहुत पढ़ल-लिखल छलाह । मामलपुर कलकत्ता मे रहिकऽ अपन पढ़ाई ओ पूरा कएने छलाह । पूरा कि कएने रहथि पार पहुँचनि किनारा के छुटि देने रहथि । थोड़े जार पश्चितति तऽ परफेसर भऽ जइतथि । धन-बौलत केँ लोनी कमी तऽ रहैत नइ तऽ चित्ताइत सेहो भऽ खोस छलाह आ बालस्तर भऽ सकैत छलाह ।

मुदा बीचे में दिमागि बढति गेलैन । लोक सब कहैत अछि जे नूदा मालिक राधा बाबू सँ बड़ आशा रखने रहथि । ओ कहथीन जे मालिक जी कि तऽ कलहर बनता वा एत० डी० ओ० बड़ सँ छोट हाकिम ओ कि हेताह ? फेर बूदा मालिक ई सपनाइत रहैत छल हेताह जे मालिक जी कलहर बनि कऽ अइ जिला मे अएताह तऽ हमरा खानदानक कतेक रोम दाव बढ़ि जाएत । जिला भरिक बड़का-बड़का लोक सब मालिक जीक सोझा मे हाथ जोरि कऽ ठाढ़ हेताह । बड़का-बड़का बाबू लोकनि मालिक जी सँ हाथ मिलएवा मे खान बयन श्रीभामव बुझाव । खरोरे खानदानक भारी भारी राजा-राजकुमार आबर आ जतन सँ मालिक जी के भेंट-सौगात पठौथीन । महाराज सेहो मालिक जीक आदर सम्मान करथीन ।

ई सब सोचैत-सोचैत राधा बाबूक वार, नूदा मालिक चौधरी शुभंकर टाडुर एतेक मगन भइ जाइत छलाह कि कलडरक कलडरी बितरिह हुनका वास्ते अपोती-निरासत जकाँ बुझाइत छलैन । कनिक सोचह भैया कि राधा बाबू एकाएक पढ़ाई छोड़ि कऽ अपन नूद पिताक आस-मरोस पर कसेक जारी बज्जर खसोलखीन ?

राधा बाबूक सगुर सेहो बड़का भारी जमींदार रहथीन । अपन जमाएक नियम मे ओही बड़ पैस आस लगौने छल हेताह से ओ बेचारा सेहो चिचंग भऽ छल छल हेताह । राधा बाबू जेह सालक सजाए काटि बाएल रहथि । रत्ना कम्प जेल मे हुनका राखल गेल रहैत । जखन महत्तमा गाँधी के लाट शहादुर इगविन सँ बुझारत भऽ गेलौन तऽ देश भरिक सब जेल सँ कैदी सब केँ छोड़ि देल गेलोक । फूल बाबू से तखने जेल सँ छूटि कऽ आएल छलाह । राधा बाबू सेहो ओही समय मे छूटल रहथि ।

आसरम जे बाबू-भैया आ नोकर-चाकर मिला कऽ बीस आवमी रहथि ।



महत्मा जीक हुकुम नइ रहनि जे सोराजी लोकनि आसरम मे ककरो नोकर चाकर-बनाकऽ राखि। तइयो आसरम मे हमारा लोकनि चारि आवसी रही मे नोकरे रही कहऽके लेल मोल टिबर कहिलए, सेवक कहिलए, मुदा रही हम सब केशी नोकरे। एकगोटऽक नौव छलोक स्वलाल, दोसरक छट्ट, तेसर मंगल आ चारिम हम। स्वललवा, छट्टा, मंगला, बसचनमा। हम चार भिन्न-भिन्न जातिक रही। स्वललवा धानुक रहे, छट्टा मलाह, मंगला पासी आ हम भार। एगना बछोरक एक निसर जी रहथि, ओ भानव बनाथक काज करथि।

मिसर जीक सेनाई-बीनाई दऽ कऽ ऊपर सँ बारह रुपैया भेटेन। हमर दरमाहा जीक नइ रहे। कहियो सात, कहियो आठ आ कहियो दस। राधा बाबू मोजी जीव रहथि। हमरा ऊपर हुनकर खिनेहो बहुत रहैन। सेनाई पनाई, कपड़ा-लत्ता बढ़िया अर्को भेटे। अपन खास मोलटिबर बना कऽ ओ हमरा रखने छलाह। दूर मे जहाँ जाथि हमहुँसंग रहियनि। राधा बाबू केँ हमर बड़ ध्यान रहैत छलैन। लोक सब हुनका देवता अर्को माननि। चढ़ावा हुनका जे सेटैम से थोड़-बहुत हमहुँ पाथि जाई।

स्वललवा सेनाई द्वाड़िकऽ नाठ रुपैया दरमाहा पावे। छट्टा से हो आठ। मंगलाक दरमाहा छौ रुपैया रहैक।

स्वललवा आसरमक खेती-थारीक काज देखैक छट्टा लग पासक गाँव सँ अन्न बटोरिकऽ लावे। मंगला आसरमक चपरासी छल। काडूदेनाई, घेत मे पानि भरि कऽ रखनाई, डाक सेनाई आ लऽ सेनाई, दुखित भगिनी पर बाबू भैया लोकनिक पय पानि सेनाई मंगलाक काज छलैक। एनाकऽ राधा बाबू हमरा आसरम भरिक लोक सब सँ इएह कहने रहथीन जे हमरा छौ रुपैया महीना भेटत। मुदा दैत काल बाबू सब बेर किछु अधिक देथि। एना

किसेक होइक।

बात ई रहैक भैया जे राधा बाबू राजा जनदानक छलाह। पढ़ाई कर-वाक समय इस्टेटक रुपैया फूँकैत रहथि आ आब पबलिकक। चन्दा आसरम मे खूब अवेक। केशी हुनका सँ हिसाब लेबऽ वाला नइ रहनि। जेना इच्छा भेलैन तेना खर्च केलैन। हमरो ओही मोक मे कहियो सात, कहियो आठ कहियो दस आ एकाध बेरऽ बारह रुपैया हमरा हाथ मे ओ भन्हा देने छलाह। एकर अतिरिक्त मेला डेला, हाट-बाजार, पावनि-तिहार अवसर पर एकम्नी, दुअम्नी, चोअम्नी, अठन्नी दैते रहैत छलाह।

गवका मालिक सँ हमरा खूब पटें। फूल बाधूक दिस सँ जे लदाही मोन केँ घेरने रहे से आब फाटऽ लागल। आसरमक हवा-पानि, बाजब-भूकब रंग रंग हमरा नीक लागे। एतए दू चारि बाबू-भैया एहनो रहथि जे भीतर सँ मरीबक दुखल बड़ दुखधिन। बातचीत मे हुनका मुँह सँ मलिकाना गन्ध नइ अथनि। राधा बाबू से हो बहुत मरमी सँ बजैत-बतियाइत रहथि। कसनो-कसनो नाक-भौ चढ़ाकऽ ओ अपन रोब अवश्य परगट करथि। मुदा हुनकर कोथ आ नाराजी आसरमक लोक वास्ते ओहने रहैक जेना कोनो बढ़िया जनदान के ईमनदार सुखिया के होइत छैक।



हमरा जातिआ में लोकक विवाह लड़िधारिये में होइ छैक । तई सँ एकरा विवाह की कहय, सगाइये कहय से डीक होएत । छ बरीय के उमेरि में हमर विवाह भऽ गेलै । आर तइ किछु भोजन-तोन नहि अछि, मुदा बरिआती में बाजा बजवै बला समक मुंह नहि बिसरल अछि । बजका गीरहय सवारी में पालकी भडनी बेलैथ । तकरा लोक कनैलक पूछ सँ कजि हमरा ओइ पर बौला देलक । बरिआती में दस आरह गोटे सँ गेल । पीरा घोती, हरिअर डोरिवाक अंगा । माथ पर जरी बला थोपी । पैर खालिए । हमरा सबटा तऽ मोन नहि अछि मुदा केड़ा आर खाइ के खाइ लेल देलक से खूब बढिआ जकाँ मोन अछि । पाकल-पाकल पिअर केरा की सनगर रहैक मूरहीक लड्डूके हमरा बेराबरी में जाइ कहै छै । विवाहक खातिर के दिन वक हमरा माए आ दाइ तँ कराक रहऽ परल । किएक तँ हमर सासुर हमरा गाम सँ बारह कोस दूर छल । बरिआती में हमरा सम में जमी-जाइत के छं लइये नहि जाइ छैक ।

सुनऽ में आएल अछि जे पच्छिम भर ई रेबाल छैक । एतेक छोट उमेर में अइ सँ पहिने हम गाम घर सँ बाहर कहै ने गेल छलहुँ । हमर कनियो इए तीन चारि बरिषक छल होएत । हम दूगू जमी पतेक में छोट रही जे भोजन भात ब्राजा-ताजा छोरि कऽ आशोर किछु भोजन-तोन कहौ किछु अछि । ई रते

मोन अछि जे हम दूगू गोटे एके सवारी में बैसकऽ ओइ गामक मलिकान समक ओतइ बिलीकी मांस गेल रही । आइ तक हम तोरा अपना विवाह तऽ नहि कहलिओक मुदा आइ तऽ कहहि परल । सतरह बरिषक उमेर हमर भऽ गेल । माथ वसके साल सँ कहैथे जे दूरागमन कऽ ले । से सींचि एही लेख हमर नाए अपन बेटीक विवागरी नहि करवइ छल । ओ चोचइ छल पहिने पुतहु लऽ आनी तखन बेटीक विवागरी करी ।

ई तऽ बीच में गीरहय सँ भगड़ा भऽ गेल तइ दुआरे मोना रुकि गेल ने तऽ भऽ गेल रहिते । विवाह आर दूरागमन के बीचक दिन हमरा खेलए के दिन छल । एहि बीच कहिओ सासुर नहि गेलौ । सँ दूरागमन पहिने हमरा सम में जेबाक रीति नहि छै । हमरा समक विवाहक बजका जाति बला सँ अजगे रीति छैक । एक ई जे बीमा जनउ भेने हुनका लोकनि में विवाह नहि होइ छैन । दोसर ई जे विवाह दूरागमनक बीच में ओ सब सासुर जाइछथि । मतलब ई जे माए के जोर देवऽ सँ हमरा गवना करय लथ तैआर होअ परल । छोटकी गीरहयनी माए के बोल भरोस देलखिन । गीरहय गीरहयनी सँ छेराथि आ हमरा बहीनक मामला सँ तऽ गीरहय बाबू अपना जनाना के मुंह देखबहि ने चाहथि किएक तऽ देखयऽ योग नहि रहि गेलाह । बहुत दिन तक चौदो पतरी बन्न छल बहुत दिन तऽ मालिक घरों नहि अएला ।

गीरहय बाबू के नहि रहला सँ गिरहयनी के किछु बीगरे नहि । ओ तऽ अपने सात मनुष्यक एक मनुष्य छली । जरूरति परला पर हुनकर भाइयो पोढ़ापर चढ़ि कऽ पहुँचि जाइ छलैन्ह । हरबाह चरबाह रहैत खेती में रातिदिन खटैले बमिहारक कमी नहि रहैत । खानदानी रोवदाब रहैत । सोना के टूकरा मनसे करो बिषा खेत छलैन्ह । बाग बगैच, गल्ली बिरछी, फार भंखार, पोखरि



इनार कधुक कमी नहि । चारि जौरी बरद रहै । गुहाराती महीम । छोटकी मलिकाइन घर गृहस्तीक इन्तिजाम खूब बहियौ रखै छलीह । ई गूत भडिरेक छलेन । कुल बाबुक बापो बड़ चलाक गीरहय रहथिन । पैघ घरक जनाना बर अकिलमन्ती होइ छै । कहियो चोखटि सँ बाहर पैर नहि रखै छलथिन । सघर भैयूर, सरारी, पुनारी, मूँसी गी, देवानजी, कर्मचारी ककरो सँ जो बातस नहि करैत छलथिन । की खवातनी सँ कहवीतैथ नेतऽ देवाल खामक लोठ सँ अपने कहितैथ । कोनो फाज छोटकी गीरहथनीक सकल नहि रहितैक । गीरहथ रहौथ कि नहि मलिकीनो अपने घर चलबथि ।

ई स्त्रीगन बड़ चलाकि छल । लड़ाई कऽकऽ मेल सँ जेना होइतऽ तेना अपन काल पूरा करैथे लीतइम । सच पूछी भाइ तऽ जे ओ पूछल रहीत त डेनवी साइब सनक कान काटति ।

से हो भैया ! हमरा माए के नैजानि के कोन जरी सूझा देलकै । अपन बेइजति बिमरि कऽ हमर माए सोक भय भेल । कु माय आसरम मे रहलाक बाद हम माए तें मेंठ करय गेलहुं तऽ गीरहथनीक गूतगान करैत ओकर रोइयौ-रोइयौ लहरऽ लगलै । ओ कहय-एहिमे मलिकाइनक कोनो कएर नइ छइन । ओतऽ एतऽ रहयो ने करथिन । हम कहलियेक—मलिकिनिए कोनो कि देवता छथुन जकरा ओइ ठाम हमर निर्वाह नहि भेल ओकरा ओहिठाम तौ रहै छै तकर माने जे तो अपन धूक चटइ छै ।

हमरा कोथ मे देखि भाय चुप भय गेल । ओइे कालक बाद दुरागमनक चर्चा छल । खर्चा कहाँ सँ आओत ।

मायबाजलि—भगवान कोनो उपाय करबे करथिन की ।

हमरा ई दुमल छल जे काहि बातक जबाब माय के नहि करार छइक ओहि मे ओ भगवानक नाम लइत अछि । ई ओकर पुरान आदति छइक ।

तइयो हम कहलियेक—भगवान कहाँ सँ ओ उपाय करथिन । हम चोरी तऽ करथ नहि डाका तऽ देय नहि । आगू पाछू तऽ कियो खोज खबर लेबऽ ब्रता नहि अछि । तखन फेर भगवान की करताह ?

एहि पर माय किछु नहि बाजलि । हमरा भेल एहि बेर माय मानत नहि । बिना पुतहु के देखने एकरा जैन कहौ । आ आइ नहि काल्हि, परस नहि चारिम दिन, कहियो तऽ दुरागमन करहि परत । जेना तऽ नहि होएत जे आइ गरीबो अछि तऽ काल्हि बपया सँ भइल प्रेस मेडि जाएत । एनातऽ नहि होएत जे आइ खैवाक उपाय नहि अछि आ काल्हि कुशेरक भंडार मेडि जेत । गरीब गूरवाक विवाह दुरागमन साजबाज सँ नहि साधगीर सँ होइ छइ ।

इएह सब सोचति सोचति मोन मे संतोष भेल । राधा बाबू हमरा बुक्कवऽ लागल छलाह तऽ सेहो फकीर सुरा शाही फकीर । बड़का-बड़का महन्थ महात्म पइय-पइय साधू बाबाजी दूध सन सक्कर मखमल सँ ओ हपने जे बैरामो महाराज रहै छथि से सब साहिब फकीर छथि । डोर मे अंगवोछा सन चारि हाथक कपड़ा बान्हय बला ने एक खास नेता देखाइ दैत छथि से हो फकीर छथि । शाही फकीरक लीला अपार होइ छइ । ई जे कनिको कोष करताह तऽ भगवान जानथि आर कहैत छी जे ओ अहाँक सातो पूरखा के चकार कऽ देताह ।

हमर राधाबाबू सेहो अपन राजकाज छोड़िकऽ सोराजी (कापेसी) बनि गेलाह परंच हुनकर सुडी खूजल छइन थखनी कहियो ओ हमरा गनि कऽ बपया पैसा नहि देलथि । जहिआ देलइन तहिथा जेबो मे हाथ दइत जे खाजिजाइन तऽ देथि । हमई पहिने कहि चुकल छी जे ई गांधी महतमाक जमाना छलैनह । जाहि दिन ओ जमाना रहै कापेसी भइया क छोड़ी देवता जहाँ हुकाइक । जतहि पैर पड़ि जाइन ओतहि चडूतरा बनि जाएलैक । ई जाहि बिष



ताकि देताह ओहि दिन जेजेकार भऽ जेत ।

एहन सेनाक संग हमरो भाग कमकि रेल । आहो भइया । जहन एहन बात रईक एहन हमरा फिकरे कथिक ? तोच कंकोच केहन ? मोन खुशी सँ नाचि एउक हम गीरह बान्हि लेलहुँ जे दुरागमन करवे करब ।

दोसर दिन माय के पूछलियेक—दिन तिन तकवेने छहिन ? ओ हरहि पीसि रहल छल । लोही सिमोटेक घिसि घिसि आवाज होइ छलह तँओ पहिल बेर हमर शब्द नहि सुनि सकल दोसर बेर मे कनी जोर सँ कहलहुँ तऽ बीच मे माय लोही रोकि कहलक—तोहर मोन होअ तऽ दिन तिन तकावऽ मे की लगभक ।

ककरा सँ पुछवही ?

डोह टोल जाकऽ बरिच बाबू सँ पुछवनि । नी तऽ अहिना हमरा ठकइत रहै छै, कतेक दिन तक हमर मोन टोवे ।

मायक भण्य सँ ई धूमि पडल जे ओ अपना समर्थ पुतोहुँ सँ देखनालेल छटपटाइल अछि ।

साधारण जिनगी मे हेर-फेर के नहि चाहत ? अरि, बारहो महीना जाई रहै तऽ ककरो नीक लगै ? आ तहिना जो भोर-वाँछ नहि होइ छदिखन जेठक दुपहरिवाक रोदे रहै तऽ केहन लगतैक, मनुखक जिनगी ? कहवाक अर्थ ई जे मनुखक जिनगीक गत्ये कोन समुचा संसार आई परिवर्तने पर जले छै । परिवर्तनक पहिवा मदिखन चलित रहै छै ।

हमरा तैयार होमव पडल । हमरा दुरागमन दऽ मुनि माय खूब दुशी भऽ रेल ।

आखिनक मास छलै । ओहि वखन भदऽ खूब भेल छलै । आठ मन गहुआ अपना बटाइ बाला खेत मे सेहो भेल छल । दू अढ़ाथ मन धानक आशा सेहो

बलाचनमा

छल । अगहन मे हमर दुरागमन होइतह हम जेतल छलहुँ । माय के विचार छलै जे एक मासक छुट्टी कऽ की धनकटनीक दिन मे । माय, रेवनी धार हम तीनू गाँटे सलिकाइनक खेत मे धानक कटनी करब । सजूरी मे जे धान सेठस ओहि सँ दू-अढ़ाई मासक दहस्तीक खर्चा अवश निकलि आबत । हमरा मन मे छल जे धान कटवाक समय मे एहि बेर परदेश नहि जायब । यदि पूछल जाय तऽ खेत मे कार्य करवाक लेल हमर मोन छटपटाइ छल । डॉर मे अंगपोछा लपेटि या लंगोटी बान्हि कऽ खेत मे धान रोपक हेइ उत्तरी तऽ दुइना आइ छल जे कि दू मोतल शाक नशऽ सवार अछि तथा दुनिया बाबोर किछु छैक नहि खाली हम की धार खेत धैक । हमर हाथ अछि आर ई छोटे-छोट हरियर-हरियर मनमोहक गांछ अछि । कनेको जोति कऽ तैयार कएल खेत मे हमरा सम-सन आओरी कनेको लादमी अछि जे धानक गाछ रोनि रहल अछि । पानि बला खेत मे धान रोपव के समय छुप-छुप सुप-सुपक आवाज अर्थैछ । ई आवाज एहि कानक हेइ तिनेभावाली सुरैयाक दान सँ ओ नीठ होइछ । हमरा जिला-जवार मे नाभी-नाभी चपैचा छथि बिनकर पीत जखन लोक यूँ अछि मगन भऽ आँखि बल कऽ लै अछि । डाँड़ लोकनिक चरक जनीबाइत जखन अपना मेडी स्वर सँ मलार, बटवनी आ समझाउन गवै छथिन जखन माय बरद चरब छोरि कऽ इमहर-उमहर ताकऽ ह्यै छै । तहिना धनरोपनीक समय छप-छपक आवाज सँ बढि कऽ हमरा कोनो दोसर आवाज नीक लगितहि नहि अछि । तहिना धान काटऽ काल हँसूक जे खप-खप शब्द होइछै ओकरा आगू तान-तनूराक सूरी ने नीक लगइये । जो ई खेत ई चास अपनहि रहैत त ई आवाज लोगूना मीठ लगैत ।

मे हम ई पका केलहुँ जे ई अगहन गाँवे मे धिताबी । धनकटनी, गोना भु भऽ जाइत । धर-दहस्तीक रस सेहो भेटत ।

बलाचनमा



मल्लाक रोटी खाव में केहन बड़िया होइ छइ तहिना देखहु मे।  
रंग सऽ बैंगनी होइ छइ सुवां स्वाद केहन सोनहगद, आ मधुर केहन ? बन-  
बनिहारक स ई लहु-पेड़ा हमरा सभ दिस छइक । जकरा गाय महीम छइक  
ओ दूधक संग खाइये । ओना नून सरिसो तेल आ हरिदर मिरचाइक संग  
रोटी खाइये । ताउन-भादव में तिरहुत में तरह-तरहक सरकारी होइ  
छइ । गरीब सँ गरीब आदमी अपना घरक पछुवति में छिननी, रामप्रमनी,  
ठहिया साग, मेनहारी, पीरो, घेरा, करैल, ओक, अरिकोट, तैकुना, खम्हावर,  
हरदि, आद, मिरचाइ, मोटा, कटीमा, कुम्हार, सजमनि रोपने रहैये । बाबू-  
भैयाक पोखरि सँ चोरा-चोरा कऽ माछ मारि अवैछ । हमरा सब दिस माछ  
बड़ पैघ बस्तु अछि । के अमावस ऐछन हैत ओ भदवारि में जलसीम भोग नहि  
लगाओत ।

जलसीम ! कुम्हरा जोगर भेलह की नइ भैया ! तापू-बैरागी के भगना-  
दक लेल बाबू-भइया जलसीम कहलखिन अर्थात् पाइन में करय बला सीम  
तछिप सँ जलसीम चालू भय गेलै ।

हमरा तिरहुत में पानिक अकाल नइ होइ छइ । नदी, नाला, डबरा,  
पोखरि कतऽ नहि भेटत । गाँव-गाँव में पोखरि, गली-गली में डबरा, जगह-  
जगह पर धार, कहीं-कहीं समुद्र सन पोखरि देखबइ । एहन-एहन  
पोखरि के वैश्यक खूनल पोखरि कहैत छैक । जानव के खूनल एहिलेक  
कहबैक जे ओकरा खूनय बलाक पता कबरो नहि छैक । परंच हम राधा  
बायूक पहुँ सुनलियन जे जहम राजा सबक मिजाजि सनकि जाइ तऽ समाजक  
लोक सँ इएह बेगारी में लगाकऽ बड़का पोखरि खूबैक । एहन पोखरि  
नाम शिवमागर, गोमासागर, बऽ दे । एतमी ई नाम सब छैहै । सुतऽ  
में आइल जे सगर के सति हजार बेटा खनि-खनि कऽ समुन्द्र तैवार

बैलकनि । से भैया ! जहाँ कतहु बड़को पोखरि सब तैवार होइत देखाइ  
छइ से भरती भैयाक हजारों टा बेटा मिलि कऽ खूने छैक । दोसर पोखरि  
नाम राखम काल बाबू लोकनि अपना नाव बापक नाम रखैत छथि । एहिना  
तेठ लोकनि चावर, कीनी मिलक नाम अपना भाइ बापक नाम पर रखैछ ।  
जलसीम सँ सरकारी कार्य चलैछ । भूँइओ समुहर सेहो खत्ता छपैछ कऽ  
सेर आध सेर गईचा-पोड़ी माछ डबरा सँ छानि अने अछि । आनि में  
भुलि कऽ बिना नूनक माँछ छाल तइको बराब नहि लागत । गरीब गूरवा  
गव महुगी अकालक समय में छथो मास माँछे पर गूरु जरैत अछि । मध्य  
बैरागी कष्टक कंठ में कंठी बान्हैत फिरत । कोटी बखारी में धान चावर  
मरल होइ, बारी डारी बेर में तर-तरकारी फल-फूल लागल होइ तखने कंठीक  
हजत बाँचल रहत गरीब कंठ में चारिपो दिन ठीक सँ नहि बान्हल रहि  
तकैत अछि ।

मतलब ई जे बाहर नोकरी करऽ वाला वर्ष में छः महीना घरो पर बिता  
सकैत अछि । देह समांग ठीक रहैक तऽ सब ठीक छै । हम सोचलहुँ खीगनी  
हव किहु ने किछु करिसे रहत खेत में गोबर दऽ आएत, घरक कान-साज  
सेहो किछु-किछु करत । माइयो केँ तखने सुख भेटतैक । दम्भो मारबाक  
फनिक-मनिक अवकाश भेटत । रेवनी क बिछुड़न नाव के अधिक नहि दुभेतैक  
किएक तऽ पुतोहु लगे में रहतैक । हम छः मास गाँव पर रहब आओर छः  
मास परदेश रहब ।

आसीन-कासीक, अगहन, पूल आ माघ । एखन पाँच मास बाँकी छल ।  
छः एच्चे तीस । तीस सपैया भेल । किछु ऊपर सँ सालिकी देवे करताह ।  
किछु पहिलुका जमा अछि । समटा मिला-झुला कऽ काज चलैए जाएत ।  
बात एकदम ठीक भऽ गेल । दुरागमन देखे करत । सुदा अगहन में नहि ।

सलबनमा

६६



मांस में। चारि मांस खूब बढ़ियाँ सँ गोमे रहत। चेत में ओरहा साफ  
गाम छोड़व नहि तऽ इहो मऽ सकवे जे बेसाख में नवआ पटोनी कइए  
कऽ गाम छोड़व।

अहिना सोचैत-सोचैत आश्रम चलि एलहुँ।

राधा बाबू जेल सँ छुटि आणल रहथि। गोपी महात्माक आवा सँ खहर  
आओर चरखाक प्रचार करथि फिरोथ। मधुबनी में बाबू भइया समहक  
गुह्य चलेक। लग-वास के इलाका में हजारी चरखा चलऽ लागल। सैकड़ों  
मधुरिया जगह-जगह काटल छतक लक्ष्मीक दिवाय लेत छलाह। तकरा  
धरला में काटऽ वाली स्त्रीगण ऐसा सेहो पबैत छलीह तथा कपड़ोक बढ़ियाँ  
स्नतनाम छल। राधाबाबू इलाका सभ में धूम-धूमि कऽ काज देखैत छलाह।

जतऽ-जतऽ ओ जाथि हमरू जाइ पाछू-माछू। हमर काज छल, बाबूक  
कपड़ा साक केनाइ, कागज-पत्तर सरिया कऽ रखनाई, ककरो ओतऽ पठवैथ तऽ  
ओतऽ सँ मऽ एनाई, कखनो पैदल चलल होइथ तऽ पैर-डोंड जाति बेनाई आओर  
जीज समहक विश्राम रखनाई। काज कखनी-कखनी भारी मऽ जाइत छल।  
ई रखन होइत जखन की बाहर सँ कोनो सुखिया आयल रहैत छल। सुखिया  
के अथलाक पश्चात ओका लकऽ इलाका सभ में धूमऽ पड़ैत छैक। कखनो  
टम-टम सँ कखनो रेलगाड़ी तँ। एकाध बेर राधाबाबू हवागाड़ीक जोगार  
सेहो कऽ लेत छलाह।

बहुतौ सौराजी बाबू जमा मऽ जाइत छलाह। राधा बाबूक टहलुआ छलीं  
तँ सभ-खहरधारी बाबू हमरा अपन टहलू बुझैत छलाह। हजारी करमाइय  
हुनकर तमक पूरा करैत तंग मऽ जाइत छलहुँ। जे सुखिया जतेक, बड़का कुँ  
के होइ छलाह हुनका वाइय सँ ओतवे मलिकाना गन्ध अवैत-छलेन्ह। तब  
राधाबाबू जकी संत-महत्तमा तऽ छलाह नहि। ई हुनकर समहक अपन-अपन

आवैत रहैत। अपन अपन स्वभाव रहैत, रुचि छलेन्ह। किनको चुनि  
धीती चाहिय तऽ किनको शरीर के धंदा भार मोलिथ बेबाक चाहियैत।  
सुतऽकाल पैर जतएव कोनो बाबूक जेल जहरी छलनिह तऽ किनकी साहोरक  
पलमनि चाहियैत। कियो पानक पाछु बसाइ रहैत छथि तऽ किनकी  
बढ़ियाँ तिगरेट चाहियैत।

किनको आँगूर फारेबाक शौख छलनिह तऽ किनकी माथ पर जादा कुसुम  
क तेल सुतऽकाल मलेबाक शौख रहैत। दूटा बाबू एहनो रहैथि जे अपन चरखा  
रखने रहथि। पैह पटोवाला चरखा जकरा यवदा चक कहैत छै। ई चरखा  
हमरा राधा बाबूक सग में सेहो छलेन्ह। परब जखन अन्वह धूमक लेल  
निकलैत छलाह तखन चरखा सग में नहि लेत छलाह। आसरेन में रहैत  
काल में राधाबाबू चलवैत छलाह। कखनी-कखनी एहन होइत छल कि बाबू  
लोकनि अपने बड़का सुखिया संग हवा गाड़ी में लटकि कऽ चलि जाइत छलाह  
आओर हुनक चरखा इनरा लऽ जाए पड़ैत छल। एक बेर एना भेलैक कि  
ममरुपुर के कोना बाबूक चरखा एही धरफर में पाछू छुटि गेलैन्ह। भिनसर  
धाम विनयक बाद ओ १५ मिनट चरखा चलवैत छलाह, सुवा जोहि दिन  
सयोग सँ हुनकर चरखा पाछू रहि गेल छलेन। बाबू रुचि कऽ बइस गेलाह  
ने पानि पीन आ ने खएवे करव। हमरा तऽ भैया बड़ नीक लगैत छल बाबूक  
एहि नाटक में। अंत में कहता कऽ बाबू के मनोल गेल में आ समलोका बेदना  
बैबाक श्रेष्ठ तैयार भेलाह। राधाबाबू इनरा डोंड लगलाह। किएक ओपति  
बाबूक चरखा छोड़ि एलहुन्ह।

एहि तरहें सुखिया समहक गोष्ठी में डर सँ हम थर-थर कपैत रहितहुँ कि  
अधु भूल चुक नहि मऽ जाय, बाबू तमसा नहि जाइथ। परंच जतैत  
क्षिपेक भाई ताहेव, राधा बाबू अपना रुचि क हेष हमरा ओड़वे छैथि नहि।



राधा बाबूक स्वभाव कड़ा अवश छलैन लेकिन हमरा लेल नहि । ओतस हमरा  
बड़ मानैत छलाह । असगर मे कहियो कहियो भिन्नेह सँ हमरा कान नाक मलेथ ।  
कहियो पीछतर दवा देथ । सुतए काल मे हम जी हुनका लगवैसल रहितहु तऽ  
ओ अपन टांग हमरा गोदी मे की नाँव पर राखि देथ तथा घर गिरहत्थी  
क गण्य पूछैथ । ओ एकाएकी हमरा घरक सभ बाट दुहिलैत छलाह ।  
हमर दुःख सुखक लियार रखैत छलाह । ओ नहि चाहैत छलाह के हम मैल  
ओ छोट कपड़ा पहिरी । एक बेर आत्तिन मे घर सँ बिदा भऽकऽ जखन आस-  
रम मे पहुँचलहुँ तऽ सोती ओ हमरा किनि देखैत, कमीज बनवा देलैन । चट्टी  
कीमि देखैत एक दिन राधा बाबू हमरा सँ कहलैन खरास क समान नहि,  
मनुखसक ममान रहऽ पड़लोक, टहलुवा थना कऽ नहि, संगी क्या कऽ तोरा हम  
राखऽ चाहैत छिथोक ।

पहिने हम सभ गण मे जी सरकार सरकार कहैत छलिनन्हि हुदा  
बाबू एक दिन जोर सँ बँटलन्हि । तोहवा सँ खासो जी-ओ कहऽ लगलिनन्हि  
ई तऽ भेलैन्ह राधाबाबूक बात । परख दोपर सोराजी बाबू सभ मे सँ सैकड़े  
मे नब्बे एहने भेटैथ, जिनका 'जी सरकार' सुदवा मे बढियो हुकाइत छनिह ।  
नहि कहिओन तऽ गुररि-गुररि कऽ ताकेत रहताह । जिनगी भरि जियकर  
कान 'मालिक-मालिक', 'सरकार-सरकार', 'हुजूर-हुजूर' सुनेत अपलनिह  
अछि हुनका लेल अहि बात सभक सबऽ महात्म छनिह । बिना छोकल  
शालिक समान बिना जी हुजुरीक गण हुनका निक नहि लगैत छलनिह ।  
पच्छिमक मुलुक छैक गुजरात राजपूताना, पंजाब । एक-आध बेर पच्छिम  
क सोराजी बाबू सँ हमर भेंट भेल हुनका दु-चारि बेर हम सरकार-सरकार,  
हुजूर-हुजूर कहलिनन्हि तऽ वड़ मड़कला भैया ! कहलगलाह—वेइन मर-  
जवान छौड़ा अहि ! आ-गण मे हुजूर-हुजूर, सरकार-सरकार करैत अछि ।

बलचनमा

वेदा, हुजूर ओ सरकार सभहक विरुद्ध तऽ हमर झगड़ा भौंटी चलि रहल  
अछि, तखन हमरा बारि देत अछि । हम बड़ कठिनाई सँ हुनका बुझोलिनन्हि  
जे हमरा ओतस बाबू-भैया लोकनि 'हुजूर-सरकार' क बिना गप्पे नहि सुनेत  
छथि.....ई आनि कऽ पच्छिमक सोराजी बाबूक अछि दुगुना भए  
मेतनिह आओर जोड़ कट सँ निकालि लेलनिह, एहन गप छै । अतः तोरा  
के ! हम कहलिनन्हि—जी हुजूर, जी हुजूर, हमरा ओतस पैह परथा छैक ।  
हुखिया सभक गुठ वेड़-दू महीना परऽ होइक । तखन हमर कान बढि जाइत  
छन, कहिय देने छी । आओर मोजे छन । राधाबाबू कुरता-कमीज, गंजी,  
बनिआइन नहि पहिरेत छलाह । सिथल बोमी कपड़ा नहि । कखनो तीन  
गजक, कखनो चारि गजक धोती पहिरेत छलाह । देह पर छोट मन  
चदरि रैथे छलनिह । जाइक दिन मे काश्मीरी लोई ओढ़ैत छलाह ।  
एखाध पहला अंडी सेढी रैथे छलनिह । माने ई की खींच वाला कपड़ाक  
गिनती चारि सँ बेतो कहियो नहि भेलनिह । देशी कपड़ा आ देशी सादुन  
साहि पर सँ देशी हाथ । अतऽ चारि चोट मारेत छलनिह कि कपड़ा साफ  
भऽ जाइत छलैन । हाफ खहर, सार मैली जहदीए होइत छैक आओर साफो  
बलिदए होइत छैक । चारि-चारि दिन पर राधाबाबूक कपड़ा हम साफ  
करैत छलहुँ । सुनलहुँ कि पहिने अपन कपड़ा ओ अपने साफ करैत छलाह  
परन्तु बाद मे कान बहुत बढि गेलसँ ई जिव हुनका छोड़ पड़लैनिह ।  
जेनाई ओ ओढ़ने खाइत छलाह जेहन आकरमक बाकी आवमी । महतमा जी  
क ओतस सँ टमाटर आओर पिवाउज सेनाई सीख ब्याल छलाह आसरमक  
बनीचा मे खुब टमाटर लागल छलैक । पिवाउज सेहो ओतस उपजेत छलैक ।  
गौसम मे चारि टा पिवाउज आ आठ टा टमाटर खाइत छलाह हमर राधा  
बाबू । पिवाउज तऽ हमहुँ खाइत छलहुँ सुदा बनाओल टमाटर खेवाक ओरियान

बलचनमा



केली कहियो खा ने मचली। विआख ततेक ने मछरी के बुझ मे  
अथैत जे सरकारी अस्पतालक फर्पोटरक सरे होइक। सरकारी मे दस कस  
पच्चासो बेर ठमाटर हम खेने हव परख आमक समान बाकल ठमाटर चुगनाई  
हमरा कहियो नहि नीक बुझावल। कामरन मे माछ-मछरी खेनाई मना  
छलेक। हमरा मांस मे एकाव बेर मौख भेटि जाइत छल। केना भेटैत छल ?  
छट्टू भाई मलाह छलाह। हुनके चाचीक नेहरक लगहि एक गाम मे पड़ैत  
छलैक। छट्टू जाइते रहैत छल। पुरअइनक पात मे छपेट बस हमरा लेल दू-  
चारि कुटिया अथैत छल। हम दोनो मे लस जा कस जलसोमक भोग लागैत  
छलहुँ। एक बेर राधाबाबू हमरा सँ कहलन्हि हरो, तोरा, मुंह सँ तस माछक  
गन्ध अथैत छैक। हम भाया भुला लेलहुँ तस बाकल छलाह—कोनो  
बात नहि, हम वेण्णाव छी तस अहि सँ की समूचा दुनियाँ कटीये बान्हि लेत ?  
ई कहिक मुगहुरे लगलाह। पछू, कहलन्हि माछ खरवाक बाद एकाध टा  
पान खा लेवाक चाही। अहि सँ माछक मूक भरि जाइत छैक।

हम तस मुच्च सँवार ठहरलहुँ। हमरा की बुझल की केकर गन्ध केना  
मरैत छैक। तेरो हमर राधाबाबू बड़ नीक आदमी छलाह। खुल्ल मिजासक।  
कहियो ओ हमरा नना नहि केलन्हि, हम बीड़ी पीवैत छलहुँ, माछ खाइत  
छलहुँ। कहियो ओ मना नहि केलन्हि।

अगहन मे हुनकर सार अण्डखिन। संग मे आदमी छलखिन। धानक  
चूरा, पकवान, गुड़, अचार, आ आदमीक मुरब्बा। दू घंटेरा सनेस छ  
अनने छलखिनह। लोक सभ खूब खेलक। चारि बिल रहलाक उपरान्त  
बापस मेलाह तस ओ हमरो संग मे लेने गेलाह। पता लागल, मालिकिन आक  
वाली छथि। मालिक के दू गोद बैठा छन्हि, कोहो अण्डखिनह। मोद  
बोक दोअक लेल एक आदमी उमहर सँ सेहो अण्डक आ हमहुँ रहबइ।

एखन तक मालिकिनक हम नामो नहि सुनने छलहुँ, दरसन तस केने छलहुँ  
नहि। अहि सँ हमरा मीन मे इलदही पैस गेल। अगर हमरा छोटकी  
मलिकाइनक सभान इहो मालिकिन भेलीह तस चारिये दिन मे आसमन  
छोड़िबस भागस पड़त नहि, अगर झुलवाबूक मायक समान हेतीह तस  
निरबाह होयत।

अहि प्रकारे सोचति-बिचारति हम कुटुमक संग भस गेलहुँ। लहेरियासराय  
सँ समस्तीपुर। ओतस सँ—पहलेजा पहलेजा सँ महेन्द्र। फेर पटना  
जइसन।

आइ तक हम बड़की गाड़ी पर नहि चढ़ल छलहुँ। तावेतक पटना  
जकसनक ई नयका-नकान नहि बनल छलैक। आज तस खैर बहुत बड़का मकान  
छैक पहिने अहि सँ छोट छलैक। बाहरी मे एतेक बड़ियाँ तिलमिट बला चिकनी  
तड़क नहि छलैक। परख गाड़ी तस बड़के ठहरल। हम पहिने सीचैत छलौं  
कि बड़का गाड़ीक टिकट ( पात ) सेहो बड़का होइत होयतैक, तासक समान।  
परख नहि, टिकट मे किछु अंतर नहि। हँ, टिकट काटस मे ओहन अकान-  
धुक्की नहि, जेहन कि हराही ( दरभंगा जकसन ) मे होइत छैक।

भया भाग वाला हम सभ सीन गोटे छलहुँ। कुटुम, हुनक मोकर  
बार हमर कुटुम ठहरला जमींदारक वेदा। गाड़ी के सने कोना बैसतिऐन ?  
मिकिन्ड निलासक टिकट लेलहुँ। बाँकी दू टिकट सैसर किलाव छलैक।

भया लेनक गाड़ी तेसर पलेटफारम सँ तटिकस लगैत—छलैक। पहिल  
शेतर—पलेटफारमक बीच होत छलैक। पूब दिश जेव तस तोके हवका  
पूँचव। पश्चिम दिश जाएव तस लखनऊ आओर दिल्ली, बड़का-बड़का इंगन  
बड़का-बड़का दिवडा। आवए—जाएक हेत खूब खुसकैल रास्ता। खूब  
है पाठक। सभ रिछु पैस। कुलियो पकी थाली अथैत छल। बीड़ीयो तिग-



रैठ बेचने वाला काहे कुहे में बसेत छल ! सवारी ठाट-बाट में कोट-पेण्ड वाला बचायो आदमी । कियो जमशेवपुर जाइत छल तऽ कियो बनवाइ । बड़की लैनक गाड़ी के आवा में छोटीको लैनक मधुबनी, भंकारपुर वाली गाड़ी बकरीक नमान लगैत छैक । पटना दिश रहबआ बात बेसी अछि । उमहरा खरना कहैत तकरा हम काम घरना कहबै । उमहरा लोक ताफ बाट बसेत अछि । एतना गाड़ी में बाबू सभहक मुँह सँ किहिअ-दिहिअ निकलैत छैन्ह, तऽ उमहरा हुनका सभहक मुँह सँ 'कियादिया' हुनबैक । आकाम-वातालक करक पड़ि जाइत छैक, भइया ।

रातिक समय छलैक । गाड़ी पर बेतते हमरा नौद लागि गेल ।

गवा पहुँचला पर नौद जूजल । ओतऽ सँ दोसर गाड़ी पकाइ कऽ नवादा पहुँचलहँ । नवादा सँ आवा कोन पड़ैत छैक मोहनपुर । दूरे सँ कोठा चमकै लउल । कुटुस सभहक लेश टमटम आएल छलैक । ओ—ओही पर चढ़ि गेलाह । हम दूनू गोठा पाँच पैरल ।

राधा बाबूक सखर लाखपती जमीनदार छलखिन्ह । दू पट्टी में इस्तेर बाँटल गेल छलैक । उपजा आ आमदनीमें बढैत छलैक, जमीन जगह एकके ठाम छलैन । हाथियो छलैन । मटरो छलैन । टमटम सेहो बगनी भेही छलैन । खखरिया-पालकी सेहो छलैन । पक्का-बैसाक छलैन्ह । कुरमी, आराम कुरमी, कोच, बैच, टेबल सब किछु छलैन । नौकर सभहक लेल बच्ची ईटाक दू-तीन घर आहि दिश बनाएल गेल छलैक जाहि दिश राधे महीसक रहक जगह छलैक । हमरा रहक लेल छुट्टनक नौकर (आदमी) ओही कोठरी में लऽ गेल ।

दम नौदिक नाम छौड़ि । दूनू दिश बन्हल बीस भैंसा । भैंसाकेँ उमर वाला 'पाड़ा' कहैत छैक । ओही सँ इमहर हर जोतल आइत छैक परब

बलबलमा

राधा बाबूक सखरक एकोठा भैंसा नहि छलैन्ह जेकर पीठ आओर पांजरक इही छकड़क नहि करैत होइक । बीस-बीस ठा भैंस, बीकरा खुएवाक कोनो निश्चय नहि । सब कनेत रहैत छलैक । सभहक आँख में हम काँची देखलि-येक । पर आचार—रीआ में अठगोरवा, कीड़ा बजबज करैत छलैक । मत बुझि सियऽ भैया बहुत बड़का कुकरन केने हँत तँइ जमींदारक ओतऽ भैंसा जनम लेने हेलाह—ओतम । नहि सरब, नहि जीबब, हुकहुक करब । हम एक आदमी सँ पुछलियेक—ई कमजोर भैंसा कोन प्रकार हर खिचोम अछि ? ओ कहलक—खेहीक समय में हिनका थोड़-बहुत खायक वास्ते देल जाइत छैन्ह, जखन खेही भऽ गेलै तहन सतराम । पोखार नार, वाली-भूसी केँ जमला लोक सभ चोरा-चोरा कऽ देखैत रहैत छल । किराया पर मकान लगाव बला केँ जेहक ममटा अपना मकानक प्रति होइत छन्हि, ओहि सँ कने समता जमीन-दार के अपना माल-जाल दित सँ होइत छन्हि । नौकर-चाकर अमला-कमला बहुत नामूनी समखा पवैत छलाह ओहि दिन में कइरी दरमाहा दू रुपैया महीना, किनको चारि आ किनको सात । दस सँ ऊपर दिनकहु नहि ।

भाई साहेब, आहाँ पृथ्व के एतेक कम दरमाहा में जमीनदार भ नौकरक दुनियाँ—जहान कोना चलेत छल होइयेक ?

जवाब कठिन नहि अछि, विलकुल सोक । नौकर सभ दरमाहाक कमी लूट-पाट सँ पूरा करए । रैयत के लूट में जमीनदारक नौकर चाकर कोनो बातक परबाइ नहि करऽ । हरिकर बगैचा सँ लऽकऽ सजमनि, कदीमा तक रैयतक एक-एक चीज पर मालिकक एक दम अधिकार होइक । एहि में सरकार बहादुर अपन पुलिस, पलटन सँ जमीनदारक मदैत करैत छैक । नौकर-चाकर-लूटि-लूटि कऽ निवार्ड करैत अछि । जमीनदारक खजाना सेही भरेछ तथा अपन घर भरेछ । जमीनदारक नौकर के सभ ठाम इएह

बलबलमा



हाल होई।

कुटुम दरवाजा पर टाठ काटक कमी नहि छलै। हालमे दूटा आर्म बुरी  
चारिगो मंगुली कुरती, एकटा गोल डेबुक पड़ल अछि। मोटका गद्दीक एकटा  
भारी भरकम कोच पड़ल छलैक। साथ राखक जगह रेल सँ काडी काथोर  
कोकन भऽ गेल छलैक। कोचक बाँहि पर जहाँ तहाँ नून आओर चुँचनीक  
दाग पड़ल छलैक। जहरे बैस वाला चुँचनीक शी नीम रेशाह, पान खप-  
काक उपरान्त उपर सँ नून खाइत होएताह।

दोसर दिस वैद्यक मे दूटा बच्चा-बच्चा सखतपोष पड़ल छलैक। ओहि  
मे कतहु-कतहु कौटो सखारल छठल हुँहबउने छलैक। शतरंजक खाना चकू सँ  
खोधि कऽ कड़िया कीनो आदमी रनोमे छलैक, ई चेन्ह सिही प्रखन तऽ  
छलैक। सखतपोषक मोचा मकड़ा जाल बना कऽ रखने छल, जहर खाए  
देवद बला बेफीक आ अछी छल। बक्कर हुनरीव दितका क दूटा बाहुन  
उहरल छलैह।

राधाबाबूक सार के हमरा बारे मे बढिषी जकी बुकल छलैन्ह। अपन-  
आँखि सँ देखि लेहो लेने छलाह। अहि प्रकार हमरा संग मंगुली मजदूरक  
समान बरताव नहि करैत छलाह। खारा टहकुआ क लगान हमरा भितरिया  
हुकल गेल।

मलिकिनी दूइल भाई-बहीन छलीन्ह। नाम अछिन्ह लक्ष्मणता। भाईक  
नाम बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह छलैन्ह। सरकारी अफसर बाबू  
के० वी० एन० सिन्हा कहैत छलैन्ह। हमर मलिकाइन दुसरक द्वारे बध्नी  
कहल जाइत छलीह। हुनकर रहनाई नेहरे होइत छलैन्ह। राधाबाबू भेलाह  
सोराजी, अपना घर बला सभ सँ सममुदाय चलीत छलैन्ह। बाल-बच्चा  
सभ के गमुरारिमे मे छोड़ने छलाह। एतहु कीनो बस्तु क कमी नहि छलैन्ह।

लाख सँ ऊपरक जमीन जायदाद छलैन्ह। पच्चीस-तीस हजार क  
लहना छलैन्ह। हजारौ मोनक उपज छलैन्ह। पुस्त-पुस्ताहन सँ बाएल  
खानदानी इज्जत छलैने।

बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह फोफेजक पढ़ाई समाप्त नहि कऽ सकल  
छलाह। बाप के आसुरक जंगल सभ मे हाथी पैसावक शौल छलैन्ह।  
अग्नीगौरवक कारण बेचाराक ज्ञान सेही गेलैने। कहल जाइत छैक, एक  
घेर छोटका छाटसाहबक कोनो दोस्त विलाएत सँ अएलछिन्ह। हुनका हाथीक  
बारे मे वड इच्छा छलैन्ह। केना आलामक जंगल मे हाथी पकड़ल जाइत  
छैत? कोना ओकरा पालतू बनाएल जाइत छैक? कोना फेर ओ बिकाएक  
देव हरिहर क्षेत्र मे आनल जाइत छैक? ई सभ लाट बहादुरक पोस्त साहेब  
अपने आइचये सँ बुझऽ चाहैत छलाह। एही सिलसिला मे राम बहादुर  
जानकी नाथ कुँवर के छोटका लाल ताईय आसाम पठौलखिन डिपबोर्डक लग  
भऽ कऽ जंगल में डेरा खसाएल। हाथी पकरय बला क अभावधानी सँ हाथी  
कएक टा गूठ हमरा सभक डेरा पर टूटि परल। साहेब बहादुर एकटा गाछ  
पर चढ़ि कऽ अपन ज्ञान बचएलाह। परंच राम बहादुर एक टा तमसाह,  
खिसियाह हाथीक सिकारी भय गेलाह। हुनकर लाल धर तक नहि पहुँचि  
सकलनि।

छलने १२ वर्ष क पैग मे बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह क कान्ह पर  
स्टेटक भार पड़लन्हि। बाबू के नहि रहला सँ चाचा क नीयत बदलऽ लगलन्हि  
परंच मायक चलाकीक कारण सँ हिनका हुकसान नहि पठावऽ पड़लन्हि।  
बाबू साहेब क माय बड सरनी मजोमात छलछिन्ह। हुनके शान क परवाह  
कहु कि इ स्टेट तरकी करैत गेलैक।

अपन नवकी मलिकाइन के अहि सँ पहिने हम नहि देखने छलछिन्ह।



बड़का झील-झील, चाकर-मुँह, बड़का कमान, पनरल जॉलि, औपत दरजाक ताक, पातर होड़, खेल क ममास सरदमि। रंग मेहुँआ छलन्हि। हाथ-पेर मङ्गला-वङ्गला छलैन्ह। धानी रंगक तीन पढ़िया भारी पहिरने छलन्हि। बाउस सँ पहिने जॉलि गमारिकस माथा ननचक आदत छलन्हि। मोन अछि, हमरा देख कऽ ओ गर्मभरता सँ माया हिनीने छलीह आबो। किछु समयक लेक हमरा दिग देखोत रहि गेल छलीह। पेर लू कऽ हम प्रणाम कएलिअन्हि तऽ मुसकुरे पड़ली। दाहिनाक ललाक समान हुनकर दाँत पानक हल्लुक लाली क कारण सँ लूय बहियौ लगेत छलन्हि। किछु बालल नहि छलीह। किछु काल हवेली मे सैगकऽ हम आहर जति एलहुँ।

जालिकक मग छलैक। जालक प्रारम्भ। मोर मे चाउर क मुँजा नून, हनिअरका मिरचाई ई भेल जलली। ओकर बाद हम बाबू साहेब क धोती मे सावुन लगवैत रहलहुँ। फेर अपन मालिकक छोटाका बच्चा सभ केँ संग खेलिकऽ जिनटा परिचय बढ़लहुँ। बच्चा हुनका तीन छलन्हि। एक बेटी दू बेटा। बेटी नौ वर्षक बच्चा सभ मात आ गौँत मालक, बेटा सभहक मुँह बाप सँ मिलैत छलैक, बेटी क नहि। बड़का घरक बच्चा सभ तनुकार तऽ होइते छैक। अमंड, फौब आओर मूठ—ई बड़ सुलभता सँ हुनका सभ के अंदर पैत जाइत छन्हि। मचलनाई, रुतनाई, विधुधनाई, रंज भेनाई—ई सभ ओ माये-बापे सीखवैत छन्हि। बहियौ—जे किछु सीखैत छथि ओहि मे वं जेमी हिरसा नोकर-चाकर आर गरीब पड़ोनी सभहक देल रहैत छैक।

हमर मालिकक बच्चा सभ हमेशा नानिक गाम मे रहैत आएल छलन्हि। बाप, बाबा क रोआम हुनका सभ केँ नहि भेटल छलैन्ह। नानीक मानक नोकर-चाकर हुनका दिन एक विचित्र प्रकारक लापरवाही देखवैत छलैक। परिणाम ई भेलैक कि ओ नोकरक बच्चा सभ सँ हिल-मिल कऽ खेलाइत

छलन्हि। अन्मा जी ( राधा बाबूक सासु ) अपन समय पूजा पाठ आओर कथा पुराण सुनऽ मे बितवैत छलन्हि। हवेली क काज के देखनाई-हुननाई बाबू साहेबक माता कऽ माई करैत छलन्हि हमरा मलिकाइन के कितान पढ़ऽक भारी आदत छलैन्ह। खिस्ता-कहानीक पोथी सभ खूब पढ़ैत छलन्हि बच्चा सभहक देखनाई हुननाई नौकी करैत छलैक।

हमरा दादा लागल की मलिकाइन सेही आव आधम मे रहती। बच्चा सभ आव एतहि रहि कऽ पढ़ाथिन्ह। ई बुझि कऽ हमरा बड़ आनन्द भेल।

अहि मे खुशी हेबाक कोन बात छलैक भइया, बुझलहुँ नहि। बात ई छलैक कि आधम पुरुष सभ सँ भरल छलैक। एक देवी छलन्हि। कहियो रहैत, तऽ कहियो नहि रहैत छलन्हि। आओर आव राधाबाबूक परिवार बरोबर आधम मे रहतन्हि। स्वीयण आर बच्चा सभहकवात हुनक लेल भेटक, हुनकर मुँह देखक लेल भेटत। आधम जहलखानाक समान नहि लगलैक। इमड मे ओतैक जे घर छइ।

साइ गेलहु तऽ थारी मे दू तरहक भात देखऽ मे आएल। बाबू सभक बास्ते मेहिकवा चाउरक गमकैत भात होइत छन्हि। अइठ मे अगला-खुजला पर गमकैत मेहिकवा चाउरक भात नोकर-चाकरक कर्म मे जाइत छैक। हम देखिते बुझि गेलहुँ की राधाबाबूक सारक अइठ अछि। कहिये देने की पहिने की ओहि दिन बाबू-भैयाक अइठ हम बड़ मोन सँ खाइत छलहुँ। या एना कहियोक की बहियौ वस्तु के खाइत छलहुँ ओ सभ अइठ होइत छलैक। नोकर सभक बास्ते मोटाका चाउरक जे भात नै छलैक ओहि मे थानक मूसा आ अंकरी छलैक। बाह ई तिरहुत। की मजाल की तिरहुतिया चाउर मे एक्कोटा कंयड़ कन निकालैक। ई अंकरी-फकरी गंगा क उत्तर दिग जाए क साहस नहि करैत छैक। खैर खेनाई कोनी खराब



नहि छल । मुदा बेगनक सुजिया अहि बातक गथाह छैक की हवेकी मे कंजुसीक राज अहि बूढ़ भरि लेल देखैक आ चाहवैक की बढिया सुजिया बनि जाम तऽ ई केना होएत ? अचार अलवचै बढिया छल । भारी देखऽ मे कठौतक जकाँ छल । हमरा दिशि का बड़का घर सभ मे भारी सभ बड़ बढिया आओर बड़ मोट कान्ह बला होइत छैक । एहन नहि की देखला पर परात परए मौन ।

खा जेला पर मलिकाइनक कनखी सँ बाबाजी कनी सन दही देलक । ई हुनकर दवा छलन्हि । मालिक सभ के कहनाईक सुताधिक 'निाकर, चाकर, टहलू आओर खबाम के दही खएवाक एक मति छैन्ह' केर जहन कीजीमनी दही भेटल ओहि सँ हमरा नइ खुशी भेल । खुशी अह लेल नइ की दही भेटल । खुशीक कारण छलैक की मलिकाइन के हमर ख्याल छलन्हि । मलिकाइनक मौन के कोनो कोन मे जरूर बैठ गेल छलहुँ । अहि बात सँ ई याक भऽ गेलैक कि आगु सेहो मलिकाइन इनर ख्याल रखतीह ।

जेलाक बाद तऽ हाथ ओ कऽ जखन हम लाटा राखऽ आंगन गेलहुँ तऽ सरोता सँ सुपारी कहरैत मलिकाइन बजलीह—पुरना स्वीटर छैक अयादे पुरान नहि, दुबालक पुरान । तोरा देह मे अँटो त पहिर ले ।

ओ सरोता बला हाथ केँ चढा कऽ अंदर टुकक तरफ इशारा केलन्हि । ओहि पर कपडाक मोटरी पड़ल छलैक । अहि मोटरी मे ओ स्वीटर सेहो छलैक । हम जा कऽ ओकरा उठा लेलैक । मलिकाइन ओखि नचा कऽ पहिरक इशारा केलन्हि तऽ हम ओकरा पहिर लेलहुँ । बिना बाँहिक ओ स्वीटर हमरा देह मे बैठि गेल । बैसला मलिकाइन के देहक रहल इशारेक, ई सोचि कऽ हमरा बड़ खुशी भेल ।

एकटा कुर्त्ता सेहो सिपा देबो की बजलीह । उपकारक बोक सँ हमर

गरदिन सुकि गेल । मौन मे कहलहुँ जुग-जुग जिवैथि हमर ई मलिकाइन । सिनेह सँ भरल नजरिक ऐहन जादू होई छैक भइया । बाल बच्चा बलाक मौन बड़ नरम होइ छै । हमर छोटका मलिकाइनक कसाई सन हृदय पसोलन्हि । यदि ओ अहाँ के अनिरती बेतीह तऽ ओहुँ मे करैले सन स्वाव लागत ।

एलथा महरिजऽ पैस कऽ पामक डिब्बा खोलिकऽ बड़ कएदा सँ पान लगेती, दू बीड़ा मलिकाइन पहिने आना मुँह मे भऽ जेतीह लखन बाहुन चा ककरो अनका देखीन्ह । साईं कतिन हुनक ओतऽ रहितथिन्ह तऽ पहिने हुनके बीतऽथीन्ह । आखरी मे काते सँ एकटा छोटका पातक बीड़ा लगा कऽ हमरा दीतथि चानीक डीब्बा सँ अनारखी सुरती निकालितथि आओर अपना मुँह मे छुटकी भरि दऽ लीतथि । ओहि मे क्यो दोसर हिस्सेदार नहि छलन्हि । बाबू कामेन्द्र बाबूक ससुरारि छपराक देहात मे छलैत । ससुर नेता छलन्हि । नेह्री के लौथीजीक आश्रम मे राखि कऽ पढ़ै-कीखवैत छलाह । आगु तलियऽ हुतका लोडराती बनवाक छलन्हि हुनकर एक फोटो कामेन्द्रबाबू केँ उहऽ तवा घर मे छलैन्ह । मुखएल नेहरा, भसल ओखि तथा मिचकल माल कोका मे एकटा चरछा पड़ल छलैन्ह नाम रहैन्ह कनक किशोरी ।

राधाबाबू आओर कामेन्द्र बाबूक शीत स्वभाव मे तऽ अंतर देखऽ मे आएल छल हमरा । एक केँ फकीरी बढियाँ लगेत छलन्हि तऽ दोसर केँ खमीरी । हमर मालकीनी सेहो भाईक समान छलीह । राधाबाबूक फकीरी हुतका पसंद नहि छलैन्ह । आधुनिक जीवन सेहो हुनका पसन्द नहि छलैन्ह । पाछल कए साल कात एक दोसर सँ अलग रहल छलाह । आव किछु दिन तक संग रहक मौन भेलन्हि ।

सम्बन्ध के एक भाईक संग हमर ई नवकी मलिकाइन बरइभुरा आनि



मेलीह। हम उस खोर में छलहुं। राधाबाबूक परिवार के आवि मेला सँ हमर खुशीक ठिकाना नहि छल। खुशी येह छल कि आश्रम हमर हरदम सुखाएल-सुखाएल मन लगैत छल। कहक लेल आठ हरिदारी बहुत छलैक आग-बगीचाक की कहूँ परधन खाशी हरिदारी सँ की यदि मोन बचाव रहल। आश्रम मानक उदासी के भगावक बारते सुमकुराहत मुँह सभहक आवश्यकता पड़ैत छैक। जरूरत पड़ैत छैक किलकारी भरैत बच्चा सभ के। मायक हिनेह, भोजीक हँसी-ठट्ठाक आनन्द, केहनी विपत्ति मे मोन खुशी करऽ बला संगी साधीक आनन्द जाहि घर मे नहि छइ ओ तऽ मात्र काठ-बाँस क पिचड़ा कहल जा सकैय ओकरा घर किछहु मे कियो कहैत। ओ ओकरा घर कहलौं करैत तऽ ओहनु घरक कोन काज।

आश्रम एकदम उदास छलै ओइ ठाम कोनो आनन्द नइ छल। हमरा थोड़वे दिन मे मोन अक्छ मऽ गेल। राधा बाबू के संगे छलौं एखर फेना चलि ऐब सँ कहनुऽ दिन बटैत छलौं। आश्रमक भीतर आरौ एकटा टट्टी छोट छिन घर छलै। अमौरा पर आकरी लभल छलै आ कात मे एकटा भरपतक टाट छलै। अंगनाक बीच मे एकटा बड़ पैघ गाछ छलै। सब मिला कऽ तीनटा छोट छोट कोठरी छलै। कहनुऽ एकटा छोट-छिन परिवारक गुजर करऽ बला घर छलै। बाल-बच्चाक संग हमरो मोन कनी मनी लगैत छल। मलिकाइन के सेहो घर खूब पसिज नइ छलैत तेषो की करतोह कहनुऽ खुशी छली। ओ घर मे किछु चकनकी आइम देखलिन। एकटा खिड़की लगवा देखलिन। बेल राखऽ ले एकटा बैस पैघ बेलची चमचा लेलिन। पाइन रेखाना, मड़ेवाक नीक इन्तजाम मऽ गेलै। अलेक दिन तऽ राधा बाबू कुवा-दर (कवाटर) मे रहे छलाह, ई घरक झमेला आ आश्रमक चिन्ता सँ कोन मतलब छलैन। आव सुवा नून-तेल लकड़ीक चिन्ता लागि गेलैन।

आश्रम मे चाह पीनाई मना छलैक, परंच मलिकाइन नहि मानैत छलथिनह। सब दिन तऽ नहि, कहियो-कहियो बड़ प्रेम सँ चाह बनबैत छलथिनह। दूध आओर चीनी ओहि मे खूब दैत छलथिनह। पटना मे कूल बाबूक संग रहैत काल मे चाह बनाथऽ हम जानि गेल छलहुं। ओही चाह मे दूध चीनी खूब दैत छलथिनह। महेन बाबूक आठऽ जे चाह बनैत छलैक ओ हमरा कहियो पसंद नहि भेल। बेसी मोठ भेला पर महेन बाबू चाह के ठोढ़ सँ लगबैत देरी छोड़ि दैत छलथिनह। करैत छलथिनह--की शरवत् बनौलहुं है। छी...। जनेत छीऐ भैया, चाह पीव वाला अखल पिचकड़ केहन पसंद करैत अछि। पानि के खूब इन्होर कऽ लीअऽ आ तकर बाद केदली मे चाछक पत्ती दऽ कऽ कनी काल अहिना छोड़ि दिअौ। केर कप वा गिलास मे छानि ली ओहि मे छोठकी चम्मच सँ डेढ़-दू चम्मच दूध आर ओतवै चीनी दिओक। मिलएवाक पश्चात् गुल्लिक रंग सन चाह लागत। बड़का-बड़का विभाग बला बाबू सभ अही कौदाक चाह पसंद करैत छथि। एतऽ हमर मलिकाइन जे चाह बनबैत छथि ओ तऽ भैया सोलहो आना शर्वत बुझ। पुतक भोर-बोँस कऽ जहन टंडा हवा चले छैक की धीया पुता के सदी सौ मऽ आइ छैक तऽ चाह अवश्य बनबैत छलीह। हुनका पानोक बड़ शौख रहैन।

आश्रम के बाहर, बस्ती (वरहमपुरा) के दिश स्कूल छलैक। अपर प्राइमरी स्कूल। राधा बाबूक बाप ई खोजबेने रहथीन्ह ओहिमे चारिटा मास्टर छलथिनह। पढ़ऽ बला धीया-पुताक कमी नहि छलैक। लग-पासक गाँव लगऽ कऽ करीब छत्तर टा विद्यार्थी छलैक। खास अही भासक बीत टा विद्यार्थी छल छोटैक। स्कूलक मकान खपरैलक रहै, तीनटा कोठली रहैक। भीत मजगूज आओर मोट। दूटा बिना बाहिक कुतौ, एकटा स्टूल, एकटा छोटकी चौकी। सामने खूब पैघ फुलकारी ओकरे बीचो-



बीच स्कूल आशक मेहराववाला रास्ता। रोनाक लाल-पीयर फूल ओतऽ एतेक अधिक फुलाएल छलैक की किछु नहि पूछु। स्कूल ऊँच जमीन पर छलैक, हमरा आशय सँ स्कूजे टा नहि फुलवाड़ीयो देखाइत छलैक। मालिक अपना यन्त्रा सभ के नाम अही स्कूल में लीखा देलखिनह, बेटीयोक। कन्या सभ तीनिये चारि जेवैत छलैक। होरा सँ की हुकाबल छोक भैया, हमरा सभ दिश जनामा पढ़ल-लिखल नहि होइत छैक। आव दरमंगीन-मधुवनी सन शहर में मास्टरनी देखाई दैत अछि। देहाती में कतहु, कतहु कन्या सभहक स्कूल देखवहक.....मयर, भैया अहि सँ की होइत छैक, जहन कन्यो सभ लड़के जकाँ पढ़ल-लिखल होय लगतै तखने अहि देखक उद्धार होतैक। एखन त बाबू भैया लड़की के अपना काजे मझि पढ़ा दैत छथिनह। पढ़ैत सुग्गा गाहक के अपना दिश खिचैत अछि। पढ़ल कन्या नीक बर के अपना दिश आकर्षित करैत अछि। अहि सँ वादक कार्य हल्लुक भऽ जाइत छैक। विवाह भेलो की पढ़-लेखन खतम। बापो आँखि बन्द कऽ लेत छथि आशोर समुरो। कतहु-कतहु पढ़ा नहि होइत होएलैक। खैर, राधा कायेसी छलाह। हुनका मनरि में लड़की-लड़का दूनु बराबरे छलनिह। यन्त्रा पढ़ैत नहि तऽ की करौ ? एक दिन मलिकाइन सँ ओ कहलखिनह अहाँ पढ़ल-लिखल रहितहुँ तऽ हम अहि सँ दुगुना काज कऽ कऽ देखवितहुँ, मलिकाइन अहि पर आँखि नचा कऽ बजलीह मैयो बाबू ई काज अहाँ के भोग हुअए। हमर जनपद ठीके छी.....लंगोटी लगाक आशोर जटा बढ़ा कऽ, बाज अएअहुँ अहाँक अहि जरखा सँ। अहाँ के तऽ माउग भऽ क जन्म लेशक चाहैत छल। बढ़ तानत होइए हमरा अहि विश्वास पर—

मालिक ईतए लगलाह। थोड़ेक कालक बाद बजलाह, बुझवैक की। जकरा खानदान में हाथीक कारोबार होइत छैक—

अहि पर मलिकनी हाथ चमकाकऽ बजलीह रहऽ दीय, हुनहु कऽ अहाँक बाप-पितामह तऽ अहिना कही तऽ अहाँ के पैहन लागत ? के मना करैए ? बेटी अहाँ के, स्कूल अहाँ के। जतेक मोन होए ततेक पढ़ा देखैक, भऽ गेल ने ? राधाबाबू-जुन भए गेला।

आव ओ हमरो सँ पड़ऽए कहए लगलाह। कहैत त पहिनो रहैय मुवा हमर जोर देखए लगलाह। मलिकाइन ई नहि चाहैत रहैथ जे हम अक्षर बोली भित्तो-पहाड़ा रटी। एक बेर हुनकर मनरि भँट करऽ अएलनिह तऽ ओ हमरा दऽ पुछलकनिह। हम ओतहि अइ मे बैसल तेसर पहर कनेक आराम करैत छलहुँ। मलिकाइन हमर प्रसंगा कएलाक पश्चात् कहलखिनह अहाँक भाई खाशेव बलचननाक विभाग खराब कऽ देखलीन्ह ? बेबकूक पतलखरी तऽ तऽ बैसैत अछि। आशोर सवसे पहाड़ा लीखि लेत अछि। एहिपर मनरि कहलखिनह—हम भैया के मना कऽ देखैत। नोकर-चाकर जतेक नासमक रहए ततेक बढ़ियाँ रहत भौजी। हमर अनिया समुरक कहय छलनिह जे छोट नाति बला के एकी आखरक ज्ञान दैत छथिनह तऽ हुनकर अपने तेज घटैत छनिह आशोर जे कयो सूझ के समुचा पोथी पढ़ैत छथिनह हुनकर पिता सभ स्वर्ग छोड़िकऽ नरके में रहक दैत लाचार भए जाइत छथिनह।

मलिकाइन अहि बात के हुनिर्वाहारीक पंहुल छुआ कऽ बजलीह—खैर ई तऽ ऊँपर के चीज भेलो असल तऽ सुवीबड ई अहि जे नोकर-चावर पढ़ि लिखि-कऽ अहाँक हंडी माजऽ नहि बैसत। आशोर तखन एकरा पढ़ेला लिखेला ई फायदा ?

अच्छा।—हम अपना मोने-मोन बजलहुँ तऽ ई बात छैक ? तै भरिसक अहाँ हमरा पतलखरी नहि कीनि दैत छी ? देखलेथै—भइतमानि हम कोना नहि पढ़ैत छी.....



हमरा बड़ अप्पोज अहि, जे मलिकाइन के नियत एहन खराब छनि  
आओर ओ कहियो भोगन खराब नहि वैत छलीह । तऽ भैया ई चोला जतेक  
जल्दी बदलि लाइक छै ततेक जल्दी आदमीक बिचार नहि बदलेक छै ।

राधाबाबू कतेक से एतेक दुभेलखिन्ह सभभेलखिन्ह तखन जा कऽ ओ  
खहर पहिरक हेतु बेगार मेलीह । जे कपड़ा ओ पहिराथ ओ मैही मुतक बनल  
रहैक । छपुआ सारी, छोटक ब्लाउज । ब्लाउज बुझलियेक की नहि ।  
अरे बैह आंगी । नव फैशन के चोलीए वुभु । हीतली शन हुनकर गेहू सुरति  
पर हरियर छोटक ब्लाउज लाल फूल भू भुरा छावल वाला सारी  
हुनका ऊपर बड़ बढियाँ लगैत छलन्हि । ओ धनीक अपक भेटी छलीह ।  
मोट-मोट साड़ी हुनका कोमा नीक लगलन्हि । मेहरी खड्डो जे ओ पहिराथ  
से बूझ जे चरक कोकक हेतु ओ एकटा सारी काज करैथ । राधाबाबू छहरला  
पैव लोडर हुनकर आँगन वाली भला कोमा से खाड़ी पहिरतखिन्ह । धीमा-  
पुताक हेतु ओ एक दिन लवड लगलीह । एकरा सभ के हम कोनो फायदा नै  
नहि मोटका कपड़ा पहिरा देवै । पैव मऽ कऽ चाहे जे ओई पहिरए, एलने  
सँ किएक जोलहा सभहक बाँजा भरत ।

भरल सभा में अंग्रेज सरकार के लखकारऽ बला हमर राधाबाबूक अपना  
घरवालीक समझाएल नुह देखिकऽ कड़ा खराब तरह से धवराथि । बाबूक  
बाहर के छूव चलती रहैत, घर के एकको पाई ने गुदामल जाइथ । एतए  
मलिकिनेक रहता होइत छलन्हि, मालिक हरदम नहले रहैत छलन्हि ।  
हुनका अपना में जे चलेत होइन्ह, हमरा पर समझाएल नहि छलाह ।  
मलिकाइन के तऽ हमरा किताब एकड़लि देखि अन्ध करैन्ह । परच ओ  
हमरा धीसर बात में कहियो नहि टोकाथि । मालिक त जैर हरदम भोला रहैथ ।

दुरागतक दिन नजदीक आवि गेल । राधाबाबू पटनास रूपया हमरा  
नगर देलन्हि । लहेरियागराव के एकटा बनिघौँ सँ एकटा सारी जमाओ  
आ ओर दूटा नरहानी घोड़ी दीया देलन्हि । हम खुदी मऽ गेलहुँ । खुदी  
सँ हमर मुँह फुजले रहि गेल । आँखर में मालिक-मलिकाइन के पैर छुविकऽ  
विधा-पुता के हुकार कऽ क तीन दीन पुन बिल्लापर हम अपना घरक लेल चलहुँ ।

धनकठनी अर्ध-तहाँ शुरू पऽ गेल छलैक । परच ओ आधा फसिल कटि  
धुकल छलैक । रौंगी धान तब धान सँ पहिले बेगार होइत छैक ।

पाकल बीयर फसिल सभ सँ समुचा बाघ पनऽ बुझाईक छल जेना खोनहुला  
गटि सँ लेवल बढ़का मैदान होइक । आइक चोचीर पौती सभ धानक  
पेश सँ फौवल पड़ल छलैक । नीचा-बीच में रखवार सभहक खोपड़ी सभ  
दूरा पाल वाली नावक सन लगैत छलैक । सभ सैत पर अनपुनी (अन-  
पुनी) मयानोक आतिरवाद (आशीबाँद) पाकल फसिलक शकल में परल  
छलैक । लोक सभहक खुशीक नहि और धूल नहि छोर । सभहक मुँह पर  
धुकी, सभहक आँखि में तकलताक मलक । जिनकर अपन फसल छलैन्ह  
ओ तेहो खुशी छलाह, जिनकर नहि छलन्हि ओहो खुशी छलाह । गिरह  
(एहस्थ), बनिहार, जन-जनो, कलहर-मिखमंगा सभहक मुँह पर आशक  
तेह छलैक । फसिल भेलैक अछि त मलरी तेहो भेटत, बनिहारी तेहो ।  
मिखमंगा सभ के भीज तेहो भेटलैक, नखण देवता के दान तेहो भेटलैन्ह ।  
आओर गिरहस सभ के की कहनाई ? मुँहन छेदन आओर सुन्नत सँ तऽ कऽ  
आश आओर चलीता तक सभ काज अही फसलक भरोस सँ चलैत छैक ।  
दिथो फसिल देखि कऽ मशान के सेहो कर्जा देब मे खराब होइत छैक ।  
गुजरी मंदिर में सभ के मोन सँ घंटो बजवैत अछि आओर मोन सँ आरती



उतारते छवि । फसिल बहिरों देख में आयल तऽ निहाल-गुहार में रोही  
 चुभीता होइत छेक । काली माई के छागर ( बकरा ) के जोड़ी, बरहम बाबा  
 के फूल-अक्षत, पितर सभ के गवाक बिड़, बाबा कुसेरनाथ के घो-दूध ई सभ  
 अहाँ सभ रखने करव जखन की खेती बहिरों होएत । समय-समय पर पानि  
 नहि बरसए आओर बाढ़ि नहि आवए तखन तऽ ठीक नहि खेती भेल चौपट  
 आओर खेती भेल चौपट तऽ लोक सभ के गाल चुकुटि जाएत, अँखि सभ  
 धसि कए अनगढ़ दिया बनि जाएत ।

अहि कमला मैयाक किरपा छलैन्ह, जहाँ देखू ओतहि लक्ष्मी  
 नहरानी धानक रंग-विरगक शीश ( आलितम ) सभ पसरल छल । हाट  
 बाजार में अही ई अनाजक भाव बहुत नीचा उतरि आएल छलैक । वू रूपेया  
 मोन धान आओर तीन रूपेया भीम चाउर छलैक । मकई रूपेया आओर महुआ  
 देव रूपेया मोन छलैक ।

हम पहिने पक्का कए लेने छलहुं कि भरि एत धन कटनी करब । धान  
 काटक बनिहारो सँ एतेक अन्न भए जाएत की चारि महीनाक कटान चलत ।  
 मगर माय कातिक में बीमार पड़ि गेल, पैरीस साँझ ओ किछु नहि खेने छलः  
 बहुत कमजोर भए गेल छलैक । गाँवक बेवसी हुहार के आओर बढ़ा ऐदे  
 छलखिन्ह । ओ तऽ खैर भेल कि संयोग सँ फूलवाधू आवि मोताह आँखा  
 छोटकी मलिकाइनक मेहरबानी भेल । एक होतल अलवर टाँनो ( एबड़  
 टानिक ) ओ तभ संगथा देने छलाह, ओइ नष्ट पक्ष-बानिक सेहो इन्तहा  
 कए देने छलाह । .....

रेवनी सँ हम पुर्खलियेक—सोरा पतवी नहि फुरेलोक कि मैया के एकनो  
 ( एकटा ) दोसकाट लिखवाक तऽ दिवै ।

माय मना कए देने छलै—ओ राजल ।

हमरा रेवनीक अकिल पर दया लागल । अहि में भला अम्मा के पृष्ठक  
 की बात छलैक ? चारि अचछुर केकरो सँ लिखवालेत आओर दीपन पर डोल-  
 टोंगल रहैत छैक ओहि में खसाइ लखैत पोसटकाट । ई तऽ ससुरारि में अपन  
 नेहरक नाम हंगारत, हे भगवान ।

परञ्च कसूर रेवनीक नहि रहै । पाछु बुझलियेक जे ओकरा किशो  
 लिखवाला नहि रहैक । छोटका मालिक सँ ओ लिखबो करिते तऽ कोना ।  
 बल्लो बाबुक छोटका माय पढ़ाई छोटिकऽ पर बैगल छलाह हुनका सँ लिखवा  
 सकैत छल परञ्च रेवनीक हिममत ओतऽ जेवाक नहि भेलैक । ओ लक्ष्मी  
 किछु बदनाम छल आओर ओकर सभहक घर गाँव सँ कनिक दूठिकऽ  
 रहैक, बाँसक बड़का-बड़का ओटक अढ़ भै रहैक । हमर जाए रेवनीए  
 गति गामक कोनो बेटी-पुतहुं छेराइत छल । बाँसक ओ छोटका जंगल  
 लूचका सभक लेल बागक बराबर छल । कतेको तरहक खिस्मा ओहि भूगुट  
 क विप्लवे सँ मुनैत अएलहुं अछि । नीके भेल जे रेवनी हमर किछी  
 लिखाबय हेतु नहि भेल ।

माय पछनहु तक कमजोर छल, तैथी ओ धनकटनी में हमर हाथ बँटाव  
 चाइत छल । हम बुझलियेक—मरिणवे, बेटा-बेटी कि पुतहु किशो बाल  
 नहि अएतौक । अपन भला तऽ दुनियाँक भला ! थड़ कटनी सँ ओ मानलक  
 फूची भरि गायक दूध रोज ओ पीबय लागलि ।

हम वून् भाई बहिनो मौलिकऽ खेत में जाकऽ धान काटी । रातक राखल  
 चीज भोरे अन्हारे में हाथ मुँह धोक खाइत छलहुं । हम जाने तक हुका  
 बीसन पीबैत छलहुं ताबे रेवनी वर्तन थापन मौजिक मुल्हा लल्ला निनी लैत  
 छल । फेर डार में हाँहू खोपिकऽ हम वून् गोटे खेत दिस बिदाह होइतहुं ।  
 दोसर दिन कोन खेतक फसिल कटतै से पछलके साँझ तऽ गिरहथ फड़ि दैत



छलखिन्हा ! मरद-ओरत, कुवान-भूढ़ सभ ठीक समय पर खेत पहुँच जाइत छथि । एक कसार में 'स कऽ अमिहार धान काटव शुल्क बऽ देत अछि । निचला खेत महक धान पाँच-पाँच छुन-छुन हाथ नाम होइत छैक : आओर खाली शीश छापि लेख जाइ छैक । हमरा दिश निचला खेत कम छल । एतऽ तऽ भैया हम जड़ि सँ कटैत छी । काटैत समय खप-खप, छुप-छुपक आवाज कान में बड़ मिठ लगैत रहै छै ।

पहर डेढ़ पहर तक हम सभ चौग बिपरि-बिपरि कऽ धान काटैत रही । हँसी-खुशीक आवाज, गीतक आवाज आओर खेत जेत धूमि कऽ लाई-सुरही बलाक आवाज, लारंगी वलाक बिलाप.....केना दूधहरक बाद देसर पहर अबैत छैक पता नहि चलैत छल । माय छैक अबैत छल तऽ घरी भरिक लेल हाँव के आराम भेटैत छलैक । आरि पर नहि खेतहि में वैत कऽ हम खाई । धानक खेत में कामक फसिलक खुशी सुलायन होइत छैक । अहाँ समहक मुलुक में गहूम, जौ, ज्वार, बाजरा होइत छैक, ओकर खुशी कऽ रहैत छैक । ओहि पर एना सुतल की बेसल नहि जा सकैत छैक । बड़का बड़का मालिक अपने खेत में नहि अबैत छथि । बराहिक, सुमस्ता आ की दोहरे नोकर-चाकर धन कटनीक देख-भाल करैल । महिला मालिक आ गिरस्त सभ अपने अबैत छथि । छोट-छोट रहस्य आओर मामूली खेति-हर बढ़ा चलाकी सँ अनिहार तँ काज होत छथि । खेत मजदूर के अपनहुँ तऽ खेत होइत छैक जकर फलिल ओ अपने कटैत । हमरो चारि कट्टा खेत छल ताहि में धान छल । अपन फसिल हम अपनहि काटि लेलहुँ ।

बचीस घोक धानक नज्दी दू बोक धान होइल । खास जन के मालिक सभ किछु बेसी कऽ दैत छथिन । ओहि बरख हम बीस वाइस दिन फावित कटने रह्यो । ओनि में छ मस धान भेल रहय । ओ तीन भासक नज्जर के

फलचनमा

है बहुत छल । यदि माय दुखित नहि परैत तऽ दू तीन मन आओर धान होइत । अपना जमीन में छ मन धान भेल छल । दू तीन कट्टा खेत में रब्बीक फसल सेहो रहय, जो बूट खेतारी ।

खरिहान मालिक के बड़कीटा रहैत साधारण भीरहूक खरिहान साधारण होइत छैक । देसर पहरक बाद धानक बोझ खेत सँ खरिहान में आवऽ लगैत छै ।

पहर भरि तऽ खाली आनहि में लागि जाइत । खरिहान कहिथो खेतक लग रहैक तऽ कहिथो दूर । फसिलक बोक एक पर एक रखैत जात तऽ टाल बनि जाएत । टाल या खेप दिन ताकत तऽ गरदिन दूटि जाएत । हमरा बस्ती में एहन गिरहल्य चारिए टा छलाह जिनकर उपज हजार मन सँ बेसी होइत छलन्हि—बड़का मालिक, महिला मालिक, छोटका मालिक आओर बस्ती बाबू । महिला मालिकक उपज डारै हजार मोनक, बस्ती बाबू डेढ़ हजार मोनक । बाकी हजार मोन बला छलाह । ई भेल निफ धानक उपजक बात, रब्बी आओर भवई के उपज अहि सँ फराक छल । से-डेढ़ ते मोन ओहो मऽ जाइत छलैक ।

खरिहान में दाउनीक काज भास-फागुन तक चलैत रहैत छलैक । फागुन में रब्बीक फसल तैयार होअए लगैत छलैक । गरिसो, तीसी, खेलाही, बूट .....खेत में जौ, गहूम, मसुरी आदि ।

हम अपन धान फाड़ि-पीट कऽ तैयार केलहुँ । अनिहार समहक संग कहाँ खेत आओर कहाँ खरिहान, कहाँ बरद आओर कहाँ हर-फार ? मनियार क्काक श्रोतऽ सँ बड़की छखड़ि लए अनलहुँ आओर ओकरे डोंड पर सभ धान हम धाड़ि लेलहुँ अहाँक दिस तऽ एना नहि होइत अछि ने ? छखरि केँ बरा दैत छिएक, शीशक धानक डोंट राम केँ ओहि पर जोर-जोर सँ पकैत छीऐक ; शीश सँ मड़ि-मड़िक केँ धानक दाना सभ नीचा खसैत

फलचनमा



जाइत छैक। माइत डोटि सभ के कात कइ रखैत जाइ आओर दारा माइत जाइ। परब ओहि प्रकार तँ सो मोन धान नहि माइत जाइत छैक, ई तऽ दु-चारि मोन धान बलाक दंग छैक।

मिता-जुता कऽ देखू तऽ छः महीनाक खर्चा घर मे छल। चारि परानी खाइयो वाला तऽ रहल होएत। कोन दस दिन तऽ रहि गेल छल गोना के।

माए अल्ही बढियाँ भए गेल। कोय-मुँदि कऽ ओ घर के चिचान बना देलक। कात के सात हाथक चार चढ़वा लेलहुँ हम। ओकरो मुँह आँगे दिश छलैक। अँगनक बाहर घरक भग्ने दुमि दलैक, ओकरा छील-छाँटि कऽ हाफ कए लेलहुँ।

ओर-बिदूर आओर सगल क चीज सभ लऽकऽ लुबी हमरा सासुर मेले आओर गोनाक लेज हुनका सभ के तैयार कए आएल। ई एक प्रकारक रसम-रिवाज छल।

हमरा सासुर के सरना पाँच-सात बरख मेले होएथेन। ससुरक दित सँ हिरागमन इशारा पवके शाल भेटि चुकल छल। माय सुदि पंचमीक दिन निश्चित भेल। लुन्नीक माय ओकर दरवाजी, माउत आओर भाबहुक अवरजार बढि गेलै। किओ.....क हेतु वेगन पीनऽ बैसल, तऽ किओ नीपल-पोतल घरक टाट मे चोरा हाथीक गुरुत खिचैत अछि। तेल मे सितदूर धोरि कऽ ओहि सँ कवेको अण्ड गण्ड-तण्ड चित्र खोचल गेल। आओर हम ई सब देखि कऽ ईसी। घनवन्ती काकी ( लुन्नीक माय ) हमरा देखि कऽ ईहँत कहलनि—तोरा किएक पतिव्रत अएलौक बोधा। दरभंगा पटना घूमल दई, हम सब तऽ जाहिल चपाट ठहरलहुँ। हम कि जानऽ गेलियेक जे फल पड़ी कोना बनौल जाइ छैक। अपना घर वाली के पटना लऽ जइहऽ, ओ सीध

लेतह...घनवन्ती काकी जखन ईसयि तऽ घर अँगन हुनकर ठहाका सँ गुंजि छै। ओहि काल हमर लाज शरम हुनका ठहाकाक नीचा धनि जाए। लुन्नीक घरवाली भुसकी मारय। लुन्नी हमरा सँ चारिए माथक जेठ रहए। ओकर घरवाली बात-वात मे हमरा सगे शराबत करय। पछिला फरुषा मे एक लोटा रंग नवे रंगी पर डारि देलक आ बकी काल तक हीरी करैत छल परंच हमसँ की छोरि देखिएन। थोरेक कालक बाद बबोर लऽ अथलहुँ रानीजी मथाला पीतै छलीह जइसी सँ हुनका दवा देलहुँ आओर गालपर आधा बाय अवीर रगरि देखिएन। थोरेक काल तक माय माय करैत रहलौ। बुझि गेली जे बालचन्द के गंग बदमासी करय मे की फल भेटै छै।

कोशी क किनार दिस छोकर नइहर रईक। विडम्बाम गंग क मुँह रई आँखि नाक बढियाँ रहइ, चेहराक काट-छाँट खूब बढियाँ होइ तऽ कि जनाना खूबदूरत कहाओल, नहि बहएतै। ओहि पर तऽ तन्वुस्ती बढिया रहै तऽ ओकर सुरति की कहय। कोरा मे ओकरा एकटा खड़ाई साल क बेटी रईक। मतिपार ककाक मनोरथ ई रहैत जे पोताक मुँह देखकऽ मरी। रोज बेचारै नहाकऽ पीपर के अङ्गि मे लोटा भरि अछिञ्जल लड़ावधि। परञ्च ई तऽ अपना नशक गप तऽ छलैक नहि।

हिरागमन सँ दू दिन पहिने ममा आवि गेला। तैयारी सभय तऽ चुकल रईक। घर-आँगनक जिम्मेवारी माए पर रहैक। नगदीक इन्तआम हम कए लेने रही। ई, एक खंड तारी आओर मंगवाकऽ पड़ल।

हमरा मोन नहि अछि जे अकरा सँ कहियो विवाह भेल रहए ओकर शकल-सुरत केहन होएतैक।

बाढ़ि बला धार मे देलेत काल जेना कयो थाकि कऽ आँखि सुनि होत अछि आओर थोकर काल देह के कोहिना छोड़ि जैत अछि ओही तरहें हम

बालचन्दमा

अजचन्दमा

१२५



सपना चिन्ता के भार से थोड़ी धी धी चढ़ व निम्न आधि जाय/.....

माया, चुन्नी आ हन.....तीन गोटे जँ दुरागमन करऽ गेलहुँ ।  
पैदले जाए पड़ल, ओहि दिन मे रेल नहि रहैक । जेहेरी सँ दू कोस आओर  
दक्षिण-पश्चिम, गाँव के नाम रहैक शीतलपट्टी । बस्ती कीनो पैस नहि  
रहैक, एकदम मामूली । चारि छः घर राजपूत, पक्कीर-सीस घर सार,  
एकचास एक घर कुलहा । गाँव न कोस भरि पश्चिम जीबल नदी क  
पटान रहैक, भदवारिक दिन से ओही बाटे कमलाक पानि सँ फविल इध  
लाय छैक । ओहि सँ खराबो नहि गिरहस्त के लामे छैक । राजपूत  
बिचला दंगक कास्तकार छैक बाँकी छोट-छोट खेतिहार । जमीनदारी  
शुम्भा खोदी राजपूत जमीनदार रहैक । बनिहार होइक या खेतिहार,  
साधारण गिरहस्त रहै चाहे कास्तकार—शीतलपट्टी पलाक जिनदमी ओतेक  
कठोर नहि रहैक जतेक कि हमरा गाँव बलाक । ओकर दोसर बजह ई छइक  
जे ओतऽ के जालहा खेतीक अलावा आओर समथ अपन तानी भरनी आ  
करघाक सहारा गुजारेत अछि । ओहिठोल मे दस टा करघा चलेत छलैक ।  
बरमंगा, समस्तीपुर सँ रेल लऽ कऽ चाबर जँ शोछा, नाहमव, खँगी, चरखना  
आदि तैयार कऽकऽ घास-पड़ीसक हाट सम पर मे बेच अलेत अछि । बीसो  
जुवान गुलाहा दाका आर फलकता रहिकऽ जवन गाँवक खुशहाल के वड़ा  
रहल छल । सत छुछू तऽ ओ कुलहा सम ओहि बस्तीक डाँचा बर्दात  
देने छलैक ।

ओतऽ हम एक दिन आओर एक राति भरि रहलहुँ । हमर आतिवसा  
सभ ओतऽ एक साधु के पोसि रखने छल । ओ अपर ( दर्जा चारि ) पात  
कऽकऽ पहिने कर्मसक मोलटियर ( सेवक ) आओर बाद मे रसता  
ओगी बीनि गेल छल । आव हमर तीसक लगभग रहल होएतैक । याद

खलचनमा

महात्मक प्रचार सेहो करैत छल । शीतलपट्टी मे ओकर पोती रहैत छलैक  
निपुणो हेबाक कारणे माइनजमके अपन डीह-डावर सौंप भेल छलैक । बण्ह  
घर बाबा जगदासक आश्रम बनि गेलैक हिनकर नाम पहिने कारीराखत  
छलैन्ह । ओ हमरा तीन गोटे के ओहि मॉडकऽ भाग पिया देलैन्ह । हमरा  
किछओ नहि बुझल अछि कि ओहि राति समुसारिक खीगन सभ हमरा सँ की  
की रिवाज करबौलक ।

भारे मे गोनाक लगन छलैक । महफा आओर चारि कहार बेह सभ  
ठीक कऽ रखने छलाह । खीगन सभ फान-काल मोहरि करऽ लागल गोना-  
पालीक व मानु कटे फूटि गेल छलैक । पीयर साड़ी आर लाल चोली पीठ  
दिस नूआ पर हाथक लाल-लाल धप्पा पड़ल छलैक । तरवा मे महाबरक  
नाम पर आलक रंग अपन साढ़ लालीक शोभा दऽ रहल छलैक । लॉचर मे  
धान-दूभि धानक पात आओर सौंठ सुपारी आओर हरदि बाँधल छलैक ।  
हाथ मेंहेदोक घेन्ह देखाई पड़ैत छलैक ।

रिवाजक तौर पर थोड़ेक दूर तक महफा मे हमरो रहऽ पड़ल । शौमक  
बाहर मे उतरि गेलहुँ । दूबोदमीक थोक चारि गोटे केना दो सकैत ? आओर  
लाजक भारे ओकर गर्दन सेहो टूटि जइतैक ! थरे ईसैत छी ! नव-नवेलीक  
शील-चंचोच सँ तोरो तऽ पाला पड़ले होएतऽ, आ की नाइ पड़ल ? भूँड नहि  
बाजु मेया !

कनियो के अपन आप नहि छलैक, पितृशोत भाए संग मे गेल  
वलैक । दही, एकवान, केरा आओर समधिनक लेल साड़ी लहडो...एक  
आदमी सीक सभ घर ई सभ नेने छलैक, पटई क सहारा सँ । बीच मे दूबेर  
ओहार लडा क महफा मे हुलकी, एक बेर नजरि मिलवे सुस्कुण पड़ल  
आओर दोसर बेर नीन मे भरत छल बेचारी । पहिने-पहिने येह हम ओकर मतलक

खलचनमा



पेसलुं । अरे देखने तऽ रातियो कऽ ऐक परबच सार सभ की पिया देमे उल्लेक, सुधि-बुधि सभ बिसरि गेल छलहुं । एखन मगर होश मे छलहुं । आहा ! बुचबुचक माएक ओ मुँह आई तक नहि बिसरि सकलहुं मैया ! छोड़ो की बिसरक वस्तु छैक ? जोस-मुँह, बशमी आँखि, छोटकी नाक, पाँत सन कपार, कारीलेहर केश, पातर डोड़, कानक सन छुड़ी, सुरेक गर्दन—यह सुन्दर लागल ओ । पहिले दर्शन मे ओ अहि मोन मे भँसि गेल, सत कहइ दी भैया । सीध मे मिट्टरक घनगर रेखा, कपार पर चकमक खुदिया शमा सभ सँ लिगार कएल छलैक । गर्दन मे सुन्दर ईगुली छलैक । बाँहि पर बाजूबन्द, कनका मे लाह नुड़ी । पैर मे गिलटक काड़ा । दहिना हाथक आंगुर मे पीतरिक झँगुडी—माए नहि छलैक तँ की, आप सँवार मे कोनो कजरि नहि रखलकैक । मसूली खेती करऽ आला छल बेचारा । हमही कोन नवानक नाभी छलहुं ? सत पूछू तऽ हमरा सँ हमर ससुरक हालत केँ गुना बढियाँ छलैक ।

आजक दिन अहिना छोट होइत छैक । हम पहिनहि सँ थाकल-टेढ़िल छलहुँ, ओहि दिन तँ आओर चूर-चूर भऽ गेल छलहुं । कहार तऽ मागू बोक्ते चलेत छैक ।

नव-नवेली बहू-बेटी अगर पालकी मे रहलैक तऽ फेर तऽ ओकरा सभ के फेर मे पाँछि लागि जाइत छैक । हम आओर चुन्नी कहार सभ के ममा कए दियेक—एतेक तेज नहि चल मामा होरा सभहक संग कखन तक दोड़ सकताह ?

एही पर अरेर बयसक एक टा कहिया तमसाय कऽ बाबल—हम तऽ पहिनहि सँ इ जनेत रही तँ चौड़ी भरिचढ़ा जयलहुं, हुँ.....हुँ ।...आब काछुक चालि चलू हम सभ । मामा इपटि कऽ कहलखिनह—बदमाश कहीं

के । छोट जातिबलाक अकिलो छोटे होइत छैक । चल, जतेक तेजी सँ चलवाक छव,.....छोड़ि दहक बालचन्द, बोझु ससुरे ।

कहार—मे से जे सभसँ कम उमरि के रहै ओ काकी मल आदमी आओर खुश भिजाम रहए । कनेक बखार सँ बाजल मारि देब अहाँ ?

बाँकी कहार हमरा दिश घुरि-घुरि कऽ ओकरा तामत पर आओर शान चढ़ा देलकै ।

मामाक देहरा पर पैर सँ लऽकऽ माथ तक बुढ़ीती आबि गेल रहैन्ह । केश बढियाँ जकाँ उज्जर भए गेल रहैन्ह । एखन ओ तरहरा पर तामकुक मलैन छलाह । स्वार सभ केँ एक तऽ कोष-अवेत नहि छै जँ आबि जाइत छैक त प्रलय भऽ जाइत छैक मैया ! से, मामा भमकि उठलाह; आगू बढ़ति बजलाह—तऽ की कऽ लेबेऽ हमर ?

पहिने तऽ कहार सभ ओहि जवान के रोकि देलकै । चुन्नी एमहर मामा केँ बुझेलक । बीच-बचा करैत हम बजलहुँ—अहि मे तमसाएक कोन बात छलैक ? कहना हम चलथ तैयो साँफ तक घर चलिए जाएब.....

एतेक कहि कहार सभ दिश हम नगरि घुमेलहुँ । मामा दिश देखिकऽ हम बजलहुँ ई बेचारे कहाँ तेज चलेत छथि ? अपन—अगत चालि जँ ई चलि तऽ देखावधि तऽ अलहा—उदलक घोड़ा सेहो हिनकर सभहक मुकामला नहि करतनिह !

दूर दिशक कोष ठंडा भऽ गेल । हम गाछक अड़ मे मामा सँ काते लऽ जाक बुमा देलियेक ओहि नव-जवान कहार के । तू सभ अपन चालि चलि सकैत छइ परबच छेड़-छेड़, दू-दू कोसपर हमरा सँ भेट कऽ लेल करबऽ, बस !

अहि पर ओ खुशी भऽ कऽ कहलक—हँ मालिक, कनहा पर भारी बोझ रहए तऽ फुरतीए फुरती चाही । ओहन हालतमे कनीको सुस्ती कोड़-करेज



के खखोरि-खखोरि कस खा जाइत छैक ।

हेहम बाह कहलक ओ ? छली ने लाख सपवाक बात ? आधा रस्ता पार करएक पश्चात् हम चढ़ी भरिक लेल खाएक हेतु बकलहु । सड़क के कातहि मे इनार रहेक । कलमी आत्मक बड़का बगीचा । पीपर के भारी गाछ । बेबीक मंडील । स्कूलक खपरेल भकान । इंजनक लोटी सुनाई पड़ल ।

हम लीनू गोटे चूरा भिलबइय छलहुँ की फेर लीटी गुनाई पड़ल । अहि बेर मामा पास सँ हाथ उठाक पुष्टलनि कोन टीशन छैक बालचन ?

सकरी—हम कहलअनिह । चुन्नी तेही अपन मुँह खोललक—जहाँ बैसल छऽ ममा ओ कोन गँव छैक, से जमैछहक ? अपन बचावक हेतु ममा मुँह बाधि बेलनिह । चुन्नी छठि कऽ दही परसलक । मेररी मे मून सकैत बाजल—ई बहोरा छैक ममा, कतेको बेर एमहर हम आपल छी; हम बड़का मालिकक कुटुमेती मे एही गँव आएल रही । आओर पनौडीयाँ मे । एतक सरसुखी ( सरस्वती ) लोक आओर मेहराक चउवरी लोक भुलुक भरि ने नामी छथि ।

हम पहिला कर घोटैत कहलएक—हमहुँ इमहर सँ गेलहुँ है चुन्नी । भाग । तू कखन एमहर अपलौह ? ओ डपटलक तऽ हम कहलएक—बाबा कुस्सेगरनाथक दरसन करऽ के जाइत अछि ओ तिमहर सँ जाइत अछि ? आव चुन्नी के मानऽ गड़लौक—हँ, एमहर सँ कुस्सेगरनाथक रास्ता गेलौक अछि ।

हम चाव गोटे चूड़ा-दही खएलहुँ । कहार सभ खूआएले चूड़ा कैवलक । हम मामाक अधीन छलहुँ, आओर ओ एकरा लेल कखनो तैयार नहि भेलहुँ कि थोड़े दही कहारो राव के बेल जाइक ।

सवार के सेही ओतहि खुआएल गेलैक । हम नजरि बचा कऽ ओ थोड़ेक समयक आरसे पालकी सँ निकलल सेहो । एमहर हम हुकका गुड़-गुड़ावति रहलहुँ । मामा हुनका संग लऽ लेने छलाह । खेती हुनका एतेक पसंद नहि

छलैन्ह जतेक हुकका पसंद छलैन्ह । कहैत छलखिन्ह—बाभन सभ बे संगति सँ समाकुल खएवाक लति पड़ल; बार-सरिकऽ मुँह गन्हाइत छैक ।

रसखरा सँ डोली उठल त एकदम पंडील चलि गेल । कोनो, बेदे कीस तऽ पड़ैत छलैक । मामा सेहो टनमना गेल छलाह । राजक सकलक नगीच सड़कक काते-काते बड़का-बड़का गाछ छलैक, मामा ओतहि लुह सँ घेत भेलाह, तऽ हमरो बैसऽ पड़ल, नहिलऽ हम कनी आनू थकि कऽ हाटक गाछी मे बैसकऽ सुस्तेबला छलहुँ ।

चुन्नी गेल, मामाक बान्से ओतहि पानि लऽआएल । अहि बेर समकुलक संवर छलैक । तरहखी पर हम्पाकू चून ठोकल गेल । थोड़ेक समय मे चुन्नी तैयार भेल । चुन्नी आओर मामा ओकरा अपना-अपना ठोढ़क तर मे दबएलनिह आओर चलि पड़लाह । हम बीड़ीक भक उठलहुँ, एकटा चूँकिकऽ आधा दुकड़ा दोसरक सेहो खतमकऽ चुकलहुँ, तखन छठि कऽ विदा भेलहुँ । रास्ता मे एक-दु-बेर ओहि जवान के तेही हम बीड़ी देने छलएक, बिलकुल स्वार्थ सेही कोन कायक भैया ? सस्ता-महंग आओर खुलल तंगी कऽ जिनगी भड़ि चलैतक । जीनाई छैक संग्राम अन्धा, जीनाई छैक संग्राम । चुनने छी ने कहियो ?

एक ठाम सड़क बिचित्र तरह सँ खराप छलैक । ओतऽ सवारी केँ डोली सँ उतरि जाए पड़लैक । डिस्टिक्ट बोर्डक पुल की जानि कहिया सँ टूटल पड़ल छलैक । ओहि साक्षक भवधारि मे ओहिठाम सड़क पर कईएक खाधि भनि गेल छलैक मगर अखन तक मरम्मत नहि भेल छलैक । ओतऽ अथिते हम के सवारी छोड़त गइत छैक । हम गोन मे विचारि लेलहुँ कि राधा बाबू सँ कहबनिह बोर्डक चेयरमेन हुनकर दोस्त छनिह.....

राम-राम कऽक आनू बड़लहुँ । रइमाक लग एकठान आमक-मरगर



एहन सुगन्ध आवल की मिजाज भस्त भई गेल। माथ बीस दिन बीच चुकल छलैक। आम के मजरक समय आवि गेल छलैक। कहैत छैक, आमक बोर चूति-चूति कऽ कोइसी अपन तान के तेज बनबैत अछि। गन्ध ओ भीक लगला सँ माथा तऽ अपन लाठी डेकिठ ठाढ़ भए गेलाह। चुन्नी बाजल सार गाछ। मानू लिठिवाकऽ थोराएल अछि, एहन मस्त सुगन्ध तऽ बार कतहु नहि भेटल छल आई तक।

लगक आड़ि पर एक आवसी ठाढ़ छल। एक हाथ मे दू टा कुसियार दोसर मे, टटके छोडल मटरक सागक मूड़ी। ओ गुन-गुनाइत छल :

रखि हे मजरल आमक बाग।

कुटू-कुटू चिकरए कीइलिदा,

झीगुर गावए फाग।

कन्त हमर परदेश भगइ छथि,

बिसरि राग अनुराग।

विधि मेल वाम, लील मेल बेरी,

फूटि गेला ई भाग।

रखि हे मजरल आमक बाग—

इम सभ गीत सुनि लेबए चाहैत छलहुँ। मगर चुन्नी सँ नहि रहल गेलैक, ओ बीचवे मे टोकि देलकैक—खूब मजर छैक, कौन आम अछि बाहुँ? करपुरियाक दू गाछ छैक, ओ बहिबेर थोराएल छैक—उत्तर भेटलैक।

तखने तऽ—इम आओर चुन्नी बंगहि बाजि उठलहुँ। मामा कभे जोर सँ कहलखिनह—करपुरिया आम खाए मे अहिना गनकैत छैक। बाबू, ककेंर कलम छैक।

शकल—दुरत तऽ नहि, परबन कपारक लाल-टीप आओर छाती परक साफ थोरा कहैत छलैक कि ओ बराहमन अछि। ई सभ सीको-साम सब के चिया-चियाकऽ बजैत छथि। ओ कहलक—बाबू छथमनि ठाकुरक।

मामा दोहरा बेलखिनह—छतरमइन ठाकुर। बड़ अकवाली आइसी होएताह।

हँ—ओ बाजल—अपने तऽ ठाकुर परतापी छलाहे मुदा थैटा दुनू अवूरमान निकललेन्ह—

हम कहलिऐन्ह—छोड़वां कह मामा, डोली बहुत बागू निकलि गेल। पाकऽ लगतैक तऽ अहि आमक औंठी लऽ जायब, चल्।

औंठी किएक, दू चाड़िगोट आम भेट जाएत—बराहमन देवता बजलाह—जसर अविहऽ; असाढ़ मे—दू तम कोन आबम छह?

अदुबशी—चलैत चलैत चुन्नीक मुँह सँ निकललैक। सोमहर माए आओर रेबनी आओर डोल-पड़ोसक मर्द-मेहरारू सब हमर बाट तकेत छल। शालि-भात, सरकाही, बड़ी, अचार, नेथो आओर औंठाक चटनी—सभ किछु तैयार छलैक। दुलहिनक लेल खीर बनल छलैक।

डोली पर गुलाबी रंग साड़ी लपटल छलैक। छोड़ा सभ दूरे सँ देखि लेलकैक। गौंस सँ बाहर पोखरिक मीड़ पर रेबनी आओर चुन्नीक आउज एम सेहो ठाढ़ भेल छलैक।

हमरा खोज लागल। मामा सँ बजलहुँ—औंठा चल् मामा, हम बिला-फराकत सँ निबहिकऽ एखने अएलहुँ—

चुन्नी मुस्कराकऽ नजरि मारलक। खग जानए खगक भाखा। हम ओकरा इशारा सँ डौंढि बेलिएक, लजाएल के आओर लजाकऽ की कएदा। मगर एहनो लोक होइत छथि जिनका भिजल पर पानि छींटऽ मे बड़ मोन



लगेत छनिह । मामा आगू बढ़लाह त चुन्नी के कान मे हम कहलियेक—बड़ लाल लगेत छनिह बार, किएक तू हमरा पाछू हाथ धोकेस पड़ल छै ?

एहन मौका पर सभ के एएह हास होइत छैक । चुन्नी हँसिक कहलक—  
दिस आओर अपन दहिना हाथ सँ हमरा बायाँ गाल पर एक चमेटा लगा देलक.....ओही गालक चलि गेल । नगर एहि, रिवाजक मुताबिक हुलहा आओर हुलहिन दूनु के एकहि डोली पर चढ़ि कऽ आंगन मे उपस्थित होएवाक चाही ।

मालिक हथेली सँ दक्खिन कलम छलेक, ओहि सँ दक्खिन रास्ता । पच्छिमक दिस हमर घर छल । फलमक लग हमरा डोली पर चढ़ि कऽ जाइ परल, ओ घुंघट चढ़ौने छल । ओकर हथेली पर अपन आंगूर सँ गोदि कऽ हम खिसिधावक कोशिश कयलहुँ परंच ओ तऽ कनेको नहि समझायल, कटुआ गेल छल ।

सभ बशीरक जमानी गीत गाबए लागल । मोट आओर मेही, शंख सन भोपुक आवाज सभ मिलि कऽ खूबीय रंग अनेत रहए ।

शौगमक मुँह पर पालकी राखल गेलैक । गेल-वासी जरा कऽ काछुक खपरि मे राखि कऽ दीप बना लेने रहए । परिछन केँ ओ चीज हमरा एखन तक मोन अछि । हमरा दूनुक माथ पर धान छोट कऽ सुँह, बाँहि, झाती डेढ़ुन सँ बही छुआ क जुमाओन कऽल गेल, अस !

देरी तक जनी जाइत जागल रहए । हमरो छुट्टी भेट गेल रहए । किछु छाऽ कऽ हमहुँ सभ सुति रहल रही, मामा भरिस्क देरी तक जागल रहथि । कहारक लेल अपन चुन्नी अपन बथान दय देलकैक । ओ ओरहि अपन आसन जमेक । ऊपर चार तऽ रहबे करैक । पाहुन दूनु नथका भरैया मे ठहराएल गेला । टिमिया, हुफा आओर पोवाक तम्बाकुक इन्तजाम

रहबे करै । आव-मगतक भार चुन्नीक छोटका भाए पड़ रहै ! गारजियनक काज नमिधार कका करैत छलाह । एहन लगैत छल जेना की होले विराद्री हमरे काज मे जुटल अछि । जुवान भाई मेहमान के मोन बहटऽबैत छलाह—  
सार, तू जुलहाक वेढा छऽ ! सोहर नामी हमरा पड़ोसक रहथि...सुसहइ हमर पड़ोसी रहए.....

मेहमान तऽ बउके भऽ गेला, संगे जे आदमी आयल रहिन्ह ओ बजलाह तै तऽ आहाँ सभहक देहो सँ डोकाक गन्ध अबैत अछि...

हुनकर सभहक ई चलिने रहिन्ह आओर इमहर हम खबुरक पटिया पर सुति रहलहुँ ।

जनेछी, कतेक राति बितला पर रेवनी हमरा ककमोरि कए हमर निन्न होरि देलक । शराबी जकाँ गुर्छा कऽ हम ओकर कम्भा एकड़ि कए कहलियैक—  
की छै ? भीतर चल् भैया । बाँहि पकड़ि कऽ रेवनी चढबैत बाजल—  
जल्दी चल्, पट्टू माय बजबैत अछि ।

नीन्न मोकि आएल तऽ हम करे सुति रहलहुँ । रेवनी हारि कऽ थुरि चलि गेल । थोड़ेक काल बाद माए आएल आओर पीठ पर हुलार सँ एक थापड़ धीरे सँ मारलक आओर बाजल छऽ बासो, छऽ, भीतर चल ।

बिदुआ काटि कऽ, कान मे काठी मोकि कऽ माय हमरा पछाईवे देलक आकाश मे चन्द्रमा नहि छलनिन्ह । आई पंचमी छैक की नहि ? पाँचे घड़ी इजोरीया रहतैक ।

कतेक राति बितल होएतैक ? माय सँ पुछलियैक आओर हाकी केलहुँ । माय हमरा आगू धकेलैत बाजल—दुपहर राति बीति गेलैक वेढा । हमरा मछिलकाक राति सँ निन्न नहि आएल, पलक पर पसेरी पड़ल अछि तहिना भुझाए । चल सुति रह । हमहुँ सुति रहब.....



घर में भस्मिल देलक माए। पोआरक सेज पर बोरी ओछाओल रहैक।  
कनियों एक दिन नवकल रह्य आओर सुतक बहाना केने छल। फाटक में  
धकेलि कऽ छन्वर सँ घर के भन्द कऽ देखिएक।

बीप आगा में जरैत छलैक, बची काकी तेज छलैक। किरासनक भभक  
सँ दिमाग भारी भऽ गेल। रानीजी सँ एलवो नहि भेलइन्ह जे बची कम कऽ  
दितऽथिन्ह।

फेर बेचारी पर दया लागि गेल—फाँता कऽ लेल गेल चिड़ैये तऽ अछि।  
दोसरक घर में की खुशए, की नहि छुबए। केकरा सँ की कहैक किनहर कि  
देखैक। महीना दू महीना तऽ बेचारी केँ अपन अधान पहचानइ में लागि  
जएतैक...

अपने बीप आला सँ उतारि लेलहुँ आओर ओकर मुँह खोलइल। बची  
पर आँगुर देते छुप। मिठा गेलइक साली, घल तेरी।

जे सुतक नाटक रचने छल ओकरा सँ नहि रहल गेलइक। खिल-खिला  
कऽ 'हऽ लागल'...

दिवरी छोरि कऽ हम ओछाउनक दिश गेलहुँ, ठिकिया कऽ ओकरा बौंह  
में कलि लेलहुँ तऽ हमर मुँह ओकरा कनपटी पर पड़ल। हड़बड़ी में घुसफुसा  
कऽ हम बजलहुँ—'वषाय तऽ तू इ बहियौ निकाललएँ मुश एतेक ओर सँ  
हँसव डीक नहि छलइक, माए आओर रेवनी की कहैत हरतैक अपना मोन में।

हमरा अन्हार में अनुभव भेल कि बेचारी लजा कऽ काठ भऽ गेल अछि।  
चुम्मा लइत हम कहिएक—छेर, कौनो बात नहि। कनी दियासलाई  
कहाँ छैक बता।

ओ उठल। सिरहाना सँ मानोस निकालि कऽ छुपचाप अरोलक,  
दिवरीक दाती सँ लीली केँ छुश कऽ फेर ओकरा मिठा कऽ दोसर टाग केँक

देलकैक... रोशनी के कम कऽ दिवरी केँ आला पर रखइत छलइक तखन  
पेललियेक, मुँह भारी भऽ गेल छलइक। माँटि सँ रगड़िकऽ जखन अपन  
बाँगुर हम साफ कए लेलहुँ तखन उठिकऽ ओकरा अपना लग बैसलहुँ।

फिकिर कथीक।—हम बजलहुँ—अपना घर में येह दू परानी तऽ छइह,  
बाकी हम झी आओर आव तू अएलै है। दोहर खिलखिलाइत सुनि कऽ नाए  
बड़ा खुश भेल होएतैक, आई ओकरा मोन सँ चिराक सिग उतरि गेल  
होएतैक। देखिहै, बहिया के आई सँ बहियौ नहि अएतैक। रहल रेवनी  
से ओ बड़ मुधा छैक। ओ दोहर अहि दीठपनक कतहु लिकिर नहि  
करतैक।

आप ओकरा मुँहक ताधिक खुरखी बापत भए गेल छलैक। बात-बातक  
करक छैक भैया, एक बात आदमी केँ कना धैत छैक आओर दोसर बात  
ओकरा हँसा ऐत छैक। सोलक-रगड़क बैस, मेहराइक जाति आओर  
सुरारिक पहिना राति—लाज आओर डर के भला की पूछनाई।

हम कहलियेक—घरक नाम तऽ बता। फेर लजा गेल। दोवारा  
पूछलियेक तऽ नहि सँ बाजल—सुगनी।

सुना तऽ तू छैह—इहो उठा कऽ ओकर मुँह केँ अपना दिश कएकऽ हम  
बजलहुँ—यह सुन्दर नाम छीक। हमहुँ अही नाम सँ तोरा कहबौक।

इनकारक तोर पर ओ माथा हिललैक।

किएक?—हम पुछलियेक।

कबड केँ एक खूँट केँ अँगूठा में फपेटैत बाजल—ई हमर नइहर नहि  
बलि, एतऽ ओहि नाम सँ बजाएब तऽ तब हमरा खँ उवाजत।

तऽ असंगरे में सुगनी कहिकऽ बजएथौक, खोल ने मंजूर।

अहि बेर ओ सुरुराइत छोड़ आओर नचवैत नजरि सँ भंजुक कएलक।



अहि बीच कण्ठेर हाफी लए चुकल छल । हम कहलएक—सुति रहऽ  
आओर, हँ.....इ रहलहु तीहर मुँह.....बजावन.....

पाँच रुपया जेब सँ निकालि कए ओकरा हाथ पर हम धए देखलएक ।  
जे रिवाज नेहर मे नहि पूरा भेलैक, ओ—आखिर ऐतए पूरा भेलैक ।  
ओहिराति बाबा जोगदास भांग पिबा कए मति गति हमर हरिलेने छलाह ।  
अहि लेल ई रुपया माए हमरा देने छल ।

बाप सुगनी के रजाई देने छलएक, हम बेइ थोड़ि कए सुति रहलहु ।  
बेचारी के अउंछीयो लगैत छलैक आओर बात-बात मे लजा जाइत छल से  
कात । हम ओकरा सुति रहए देखलएक । हमर सास्ती जीवनक ई पहिल  
मौका छल । ओ हमरा बहुत लजकोटरि आओर शान्त बुझाए पड़ल । बिना  
माए के पाँच-सात साल बेचारी नहि जानी कोना कटम छल ।

७

७

हिरागमनक बाद हम निश्चय कएलहु कि गाँव नहि छोड़ब आओर दूर-  
अहास जाऽ क नोकरीओ नहि करब । अहाँ कहब, नव कनियोंक मोह लगैत  
अछि । हँ, मेया, से तऽ छलैक । मूठ किए कष्ट जनानी हमरा बड़ सुनान्ती  
भेटल ।

जहिआ सँ ओ आएल, केना समय धौतऽ लागल, किछु पते नहि चलए ।  
अगिला बैसाख मे हम रेबनी के बिदा कऽ देखलएक, माय के दुःख जरूर भेलैक  
मगर रास्ते तऽ दोसर नहि छलैक । आदमी हमरा बहीन के सेहो बढ़ियाँ  
भेटल छलैक । ओ पटना मे एक होटल मे काज करैत छलैक । पुरान  
आओर बढ़ियाँ नोकरी छलैक । खाऽ पीबकऽ पाँच रु० महीना बेसीए होइक,  
रेबनी बहुत कानल छल, माय सेहो । बन्नी काकी बूकेलथिन—जखने बेटी मऽ  
कऽ जनमलह तखने आव अनका कर्मक संगक नत्थीव जोरेलह । कैदिन  
नेहर रहब ?

सुगनी माए के एतेक आराम पहुँचावलगलैक जे पूछी नहि । घरक  
काज कोनो टा ओ बुढ़िया केनहि करऽ देत छलैक । दुएहर मे खाए के  
पश्चात् आओर रातिकऽ सुतए काल सुगनी मकली मे सेल लऽकऽ माए के पैर  
लग बैस जाइ छल, आओर जातऽ लगैत छलैक । इनार, पर जा कऽ नहा  
रैत छलैक । छालक-गोबर छेत मे देबाक रहिते तऽ अपने दऽअबिते । माए



के काज झरोक मलिकाइनक आहिठाम जायस गिरहरीक छोटा-छोटा काजकड सेव । दुकान सँ लोहा लऽ आनव, खेत सँ लागस छिन्नी सोरि आनव, हमरा मजदूरी करैत काल खाएक पहुँचैव ।

ओही सुगनी के बड़ दुलार करएऽ लगलैक । पाई—रूपैया अपने नहि राखए । मलिकाइनक ओहिठाम कानो बढियो वस्तु हाथ लगइ तऽ असगरे नहि खाए । कनियों समय पर खाए, समय पर चुटए । माय के एकर बड़ ध्यान रहैत छलइक ।

अपने खेत मे हम सब काज करऽ जाई छलहुँ । पहिने किछु दिन तक माय सुगनी केँ खेत मे नहि जाए वइत छलइक । परउच पाछु ओ मानि गेल । गरीब के ओहिठाम भइया नखरा-बाजी चुँघट पर प्रथा नहि चलइत छलइक । पुतोहुँ होअए या घेटी, खेत मे काज करऽ जाइये पड़ैत; माल चरवाव पड़ैत । सिंगार पटार मे बरबाद करऽक हेतु समय गरीब घरक स्त्री केँ कहौँ भेटतइक भइया ? पइय जातिवला चाहे केहनो गरीब होथु, सुदा हुनका घरक स्त्री रोजी-धंधाक काज मे पुरुषक हाथ नहि बटा सकइत छन्हि । हुनका ओहिठामक स्वीगणक बेकाज बइसल रहैत छइक । जतेक पइय खानदान होएतइक, सतेक बेसी बेकाज पएबइक । हमर स्वीगण सब मेहनत मजदूरीक दाना खाइत अछि । की हम कूसि कहैत छी भइया ?

रेबनी सायुर रहए लागल तऽ अपन तीनू बकरी घेस लेलक, दस रुपैया केरतइक । चरवाह नहि अछि तऽ आन माल-मवेशीक खातीर नाक पर रहैत अछि । बकरी सब साली आओर परेशान कए दैत छैक । माझिला मालिकक भारि तुमऽ पड़ल छल एक बेर आब को रेबनी रहए जे ओकरा पर नजरि रखैत ? दू बकरी रहए, से भूइयाँ महाराज केँ बलि मढ़लन्हि । मानल रहैन्हि ।

ओहि साल रबीक फसिल खूब बढ़ियाँ भेल । आमो खूब बढ़ियाँ

पड़ल छल । खड़ी बाबू कतेको बगीचाक मालिक छलाह । हुनकर एकटा छोट गाछीक रखवारीक काज हमरा भेट गेल । दिनकऽ माय अंगरैत छल । पच्छीत टीत टा गाछ रहैक, ओहि मे आभत गाछ दूइये-तीनटा रहैक बाँकी सब गाछ क आम बड़ मिठ, रसदार, गुदगर खूब । ई खूब खेजहुँ, बेच्यो खूब कएलहुँ । तेसर हिस्सा भेटैत छल । पाँच हजार सँ कम आम हमरा हिस्सा मे रहि पड़ल होएत, लगभग एक मास रातिकए गाछिण मे सुतलहुँ, लग-पास गाछिमे गाछी रहए जाई मे हमरे जहाँ पच्छीयो रखवार राति-दिन ओगरेत छलै । संदुनीयोक मोन कहियो कहियो डबि जाइत छलैक परख छल तऽ आखीरकमाज जनानी, दिन भरि काज करैत आओर रातिकए खूब तानिकए सुति रहए । एक राति हम रामजेलावन केँ अपना बइसा गाछी मे राखि देखलइक, आओर अपने घर आवि कए सुतलहुँ ।

हम दुनु परानी नीलि अपना खेत मे मरुआ अक्षाई तीन भौम अन्दाज उपजएलहुँ ।

धानरोपक समय आवि गेल रहै । हम दू जनक काज करऽ लगलहुँ । मतलब जतेक दू तीन जन करिलैक ओतेक हम असगरे करैत छलहुँ । आठ सेर धान बोनि भेटैत छल एक गोटेक भोजन सेहो घर पर अवैत छल । चालीस दिन मे अस्सी आधमीक काज कएलहुँ । माए मना करैत रहै दुःखीत परबैइ । किएक एतेक खरैत छै वेटा ?

जबाब मे हम कतेक हँसिदैत छलहुँ आओर बीड़ी धूकैत अंगना सँ बहरा जइतहुँ ।

भादव, आसिन, कातिक आओर जाघा अगहन साढ़े तीन मास पहिने ओतऽ कोनो कार्य नहि छलैक । अर दिन मे किओ पुन भर नलि अगैछ, तिलीगुडी, दिनाजपूर, तथा ढाका दिन । किओ कलकत्ता दिस चलि जाइत



तः किओ घरे पर अरैत अछि एहन लोक भोधीक पठिआ हुनैछ, मन-माथे की मूजकडोरो बँटैत अछि आने तऽ मौछ भारत यला टापी, गौज वगैरह तैआर करैछ ।

लेकिन हम कतहु नहि जाइत छन्हि बीरी पीबैत छलहुँ तथा बाघ गोटी खेलाइत छलहुँ । ईमानदार तथा मजबूत काटी छलहुँ, एहि सँ मास पाछु पाँच-सात जनक योनि हमरा भेट जाइत छल । हमरा बऽ इ सोरझा छलैक जे वलचनमा छूब मन सँ काज करैत अछि । एक जनक तथा जन अछि ओ । कतेक लोक उलहन दीत—गथा अछि, अकिलक छुति नहि छैक । ओहि जन्म तेहीक बरत छल होएत ! अच्छा भाइ, हम बरद रही, गथा रही । परंतु होरात्मक वेदमान तऽ नहि ने छी, काम चोर तऽ नहिने छी, कोटी तऽ नहि ने छी..... असल बात ई छै भैयाजे काज करैत काल हम केहुनो काज कऽ राखि दैत छलैएक । जाइ तरहे अपन कार्य करैत अछहुँ तहिना दोसरक ।

दोसर दिस सँ जे खराब अन्न देलौ जाइत छल तऽ हम फेरि दैत छलैएक । गारि तऽ हमरा सँ एकबने नहि सहल जाइत । मूठ-पुसक जो इज्जती हमरा हेतु जहर माहुर अछि ।

परंतु क हथो-कहिओ भुक्तहु परैत । आय ओ जमाना नहि जे खाजो ईमानदारी सँ काज निकलि जाइत । चालाक आर चौइ समक चालवाजो तँ बंचक हेतु चलाक रहब जरूरी भऽ जाइ छैक भैया ।

भात, रोटी आ' एक मुट्ठी धान फाँकि कऽ कोनो तरहे गुजर करैत छकऽ । माइयो खुशी छल, सुगनी सेहो खुसिये छलै आ' हम तऽ खुशी छकोहँ एहि तरहे गिरहस्तीक तीन वरीख बीति गेल । बीच मे एक बेर बड़ बाढ़ि देल छलै मुदा हमरा शौचनिक जेत नहि देखल, छपजो जलवा बहिने होई छल ततया भेधे कएल । मुदा एक बेर बड़ जोर भूकम्प भेल । ओहि बेर महतमा

गांधी सेहो एलाइ, राधा बाबू मोतिलाल भऽ गेलाइ । हम तखन ई सय किछु नइ बुझिदे । ई भूकम्प जे भेलइ से एकनो ओहिना मोन अइ आ' ओकर मोन पड़िसे रोइयो डाढ़ भऽ जाइये । माघक मास छलइ । करीब २ बजेक समय । बड़ आसमर्द हुअ लगलइ । हमरा घरक चार हिलऽ लागल । हम पुआर लग बइसल रही हमरे लग चुन्नी ओठठल छल । हम दूनू गोटे गप्प-सप्प करहल रही । हम तऽ किछु नइ बुझलिरे मुदा चुन्नी बाप-बाप चिचिआय लागल । हमहर सँ मनियार कका चिचिआइत अँगना दिस भागऽ लगलाइ ।

हम चुन्नी सँ पुछलिथे की बात छइ ? ओ हमरा मुँह दूसइत कहलक, देखइ नइ छिनिन घर केना हिलइ छइ । जल्दी सँ घर सँ निकलि जो तहुँ बड़ धुरिबक छै । ई मुनिवहि हमर तँ जो हाथ हेरा गेल । चुन्नी अपना घर दिस भागि गेल जा हम अपना घर दिस ।

सुगनी भीतर मुतल छल, माए ओकरा जा कऽ बाहर निकालि नेने छलइक । अन्द्र-बीरा मिनट तक घर ओहि प्रकार डोलइत रहलइक । हाथी पर चढ़ने छी कहियो ? नहि ? अरे, रेलगाड़ी पर तऽ खूब चढ़ने छैने ? सोनपुर सँ जे रेलगाड़ी पहलेजा पाद तक जाइत छइक ओ कोन प्रकार डोलइत हिलइत चलइत छइक ? वल, देह बुझि लियऽ । ओहि सँ किछु अधिक भैया ।

माय आओर सुगनीक दिल सँ कीकिरि भऽ कऽ हम फेर मनियार काकाक मकानक दिस दौगलहुँ । हुनकर दू घर भीत बाधा छलन्हि, दू ठाम भीत मे हस्तुक दरार पड़ि गेल छलन्हि । बरेरी थोड़ेक अलग भय गेल छलन्हि । भीत के साथे घर सँ । वल, मनियार काकाक एतने मोकसान भेल छलइन ।

खैर, भगवान मालिक छथिन्ह सबहक । हमरा मुँह सँ निकलल—कि शोभहर सँ रामखेलावनक छोटका भाई सुबधा शोभल आयल । हँकति-हँकति ओ बाजल बाढ़ भाई, महिला मालिकक इनार पानि फेंक रहल छैक, बज्जवा



पानि । आओर मालिक सभ के कण्टा मकान खसि पड़त रहैन्ह, भरिसक क्रियो दबियो गेलन्हि.....

हम आ चुन्नी दोरलहुँ नालिकक हवेली दिस पहिला बेर पहिने बड़का दिग मेलहुँ एतऽ बहाकार मचल छल । डिप्टी साहबक नयकी घर वाली दोसर महलक नीचा मे सुतल रहथि । ओही वर्ष हुनकर दुरागमन भेल रहन्हि । निम्न टूटलन्हि तऽ जयसंगलाक मामा के पैरक आइट सुनि कऽ घरे मे रहि गेलीह । ईटक पुरान दिवाल रहैक भरभरानऽ खसलह से ओकरा नीचा मे पीका कऽ भरि गेलैक । लोक कहुना ईटा बाहर ईटा कऽ ओकर अचेत देह के बाहर निकाललक । तुलसी चौड़ा लग उत्तर शिरहना मे सूता बेल गेलइक । जयसंगला आओर ओकर माय भीकारि त्राहि कऽ चिन्चियाय लागल । सब के ठकमुरिया लागि गेलइ ।

मइपुराक खान बहादुर केँ मकान सेही खसि पड़ल रहन्हि । बहो बाबूक मोटिया थोड़ा दबि कऽ सर गेल रहैक । जोखार् पोखरिग उत्तर थोड़ैक दूर हटि कऽ जे मैदान रहैक ओहि मे खाधि भए गेलैक आहि नैसीरी अमातक बाज्जी धँलि कऽ भरि गेल रहैक ।

हमरा जशार मे बहुत हर्ष भेलइक । दश कीत पश्चिम, सीतामढ़ीक दिस तऽ एक तरहे पलये मचि गेल । सैकड़ों जान माब चुक्यान भेल, पक्काक तकानक दस्ती पर पहनट पड़ि गेलइत । सरकारी बंगला, पोस्ट आफिस थाना, कचहरी, जहल, अस्पताल, इस्कूल (स्कूल) बेकार भऽ जैनइक । सड़क फाटि गेलइक, सरकारक मानू नाड़िए डूबि गेलइक । जे जहाँ रहए से सब खोतहि डेव भय गेल । देवी-देवताक मंडिल ( मन्दिर ) तक साधित नहि बचलइक भैया । आओर की कहू । एमहर सीतामढ़ी कोनहर सुशेर तक देखी धका पड़लइक ।

बाबू सरकारी सम्हरि गेल । सब दोइलाह । राजिन्दर बाबूक ज़िहाई भेलन्हि । गवाहरखाल तक भोलन्टियर बनि कऽ सीतामढ़ी आवि गेलाह । बम्बईक सेठ खैराती होटल आवि कऽ खोलि बेलकैक । कांग्रेस चन्दाक लेल अपील निकाललक तऽ करीब तीस चालिस हजार रूपैया जमा भए गेलइक ।

पानि धौवऽ वाला पानीक स्वाद, ठेकेड़ी जगह खराब भय गेल रहैक । अजीबे गन्ध अवैत रहैक । पहिने छोट सोह सँ साली नाके जथाय वैत छल । जंगली खाधि मे भरि चोथासा घास-फूस, लत्ती-पत्ती नहि जानि की की मड़ैत छल, ओकरा लग सँ जायब तऽ नाक मून्दि सेयर पड़त । गूठ आओर सोनक पोधा केँ पानि मे राखि वैत छै । किछु दिनक बाद निकालति छिदैक तऽ ओतहु बड़ विकट गन्ध उठैत छैक... भूचाल ( भूकम्प ) जहि इनार केँ खराब कऽ देने छलइक ओकरा पानि किछु ओहने गन्हाइत छलइक । हाय-हाय रुचि गेलइक । सब सँ जहरी काज इनार सुखोनाई भए गेलइक ।

कांग्रेस जे रिलीफ फण्ड खोललकैक ओकरा तरफ सँ इनार खुनइवाक लेल लाखोंक रकम वॉटल गेलइक । हमरा इलाका मे रकम वॉटलक काज फूल बाबू के हाथ सँ भेलन्हि । एमहर के गाँवक लेल हुनके अक्सर बना कऽ गठाल गेल छलन्हि । रामपुर भारी आओर नामवर गाम ठहरल । बाल-बच्चा, रंगीमण पुख, धनिकगरीव, कुल मिला कऽ दू हजार आदमी बसैत छलैक । परंच भूकम्प सँ अहि बस्तीक एको इनार खराब नहि भेल छलैक । कुल बीस इनार छलैक । सुनलहुँ जे कि रिपोर्ट मांगल गेल छलैक, छोटका मालिक आओर अलौ बाबू, सुन्शी विपिनबिहारीलास दास सँ राय आत कऽक जिला कांग्रेस कमेटी के लिख देने छलखिन्ह । चारि इनार खराब भए गेलइ आओर बीस एक परिवार एहनो छत रहल होएतैक जेकरा थोड़ बहुत मरैत भेटक चाही ।



किएक अपने खति पड़लोक मकान सम के छेर ठाढ़ करके होकर बेचारा सम के नइ छैक ।

कुल बाबू महुवनी लै ठमठम पर थपलाह, सोमो जाकअ थपन फूकाक पर जतरलाह । कहि देने छी, हमर छोटका मालिक हुनकर फूका खरैत छथिन्ह ।

एक्के दिन ओ हमरा बस्ती मे रइक छलाह, हम जानि-बुझिक हुनका सँ नहि भेटल । मालिक समक ओतए आओर बमनटोली मे एक चकर लगोरने छलाह ओ, संग मे ई भोलिधर रहैन्ह ।

जनेत छी, ओहि दिन फूस बाबू हमरा बस्ती मे किछ कए आएल छलाह ।

रिहरीक फूस विश सँ भगवान जानी कतेक रकम अहि गामक लेल हुनका भेटल छलैन्ह परकच किछु दिनक बाद मुन्शी जीक बेटा सँ जे हमरा परा लागल वैह आहाँ के बुझा दैत छी । अहि सँ अहाँ के एतेक अन्धान अछर होयत कि लाखोंक ओ रकम लोक सम मे कोन प्रकार बाँटल गेल होएलैक । लीख सुनि लिख भैया :-

१—बधुअन पाठकक

क रकम लिखल

नाम पर	६०	खलैक २०)	भेटलैक १
२—दामो ठाकुर	४०)	२०)	२०)
३—मोसममात जानकी	३०)	१५)	१५)
४—तारनन्द का	३०)	१५)	१५)
५—छोखाई मिसर	२५)	१०)	१०)
६—चंदरानन चौधरी	४०)	२०)	२०)
७—पचकौड़ी सा	२५)	१०)	१०)

१४६

बजचनमा

क रकम लिखल खलैक ३)

मिफलैक

८—जैबल्लभ मलिक	२५)	१०)	१०)
९—बमोल का	२५)	१०)	१०)
१०—बचवे मिसर	२५)	१०)	१०)
११—मनिवार गोप	२५)	५)	५)
१२—चकौड़ी गोप	२५)	५)	५)
१३—कपिलेश्वर मझ	२५)	५)	५)
१४—तीरी अमात	२०)	६)	६)
१५—जलार केवट	२०)	६)	६)
१६—मोसममात कुन्वी	१५)	३)	३)
१७—बुद्धु चमारक नाम पर	१५)	३)	३)
१८—शेख अकबल	२५)	५)	५)
१९—करीम बरुश	१५)	३)	३)
२०—मसमात हमीदा	१५)	३)	३)

बुझहुँ भैया, बीत आइमीक नाम सवा पाँच सौ रुपयाक खैरात लिखल गेलैक परकच लोक सम के भेटलैक तिरिफ दू सौ छ रुपया । ईनार-मुधारक नाम पर एक हजार रुपया भेटलैक । एक-एक के बलम-अलग बला कए बज्जी बाबू आओर दास जी रुपया बाँटलन्हि । लोक सम अकासी आमदनी भूमि कए दसखत कए देलखिन्ह, अँगुठाक छाप दए देल कैक । जेकर जेहन भूँइ, जेकर जेहन छायास, ओकरा ओहिना रकम भेटलैक । हमर मनिवार ठाका चुपचाप लेने छलाह, कुन्नी जैराती रकम लेबक खिलाफ अपन राय भगद कए लुक्ल छल । मालिक हमरा भाए के सैथी पाँच रुपया देनए पाहैत छलाह । पूछआएल त हम डाँटि देलिहक । मोसममात कुन्नी कुंगल सामंतिक विधवा रजो छलैक, ओकरा खैरात भेटल छलैक । पूछला पर

बजचनमा

१४७



बाजल बबुआ वाली, मुद्रकन ई की भेलैक, बड़का लोकक वास्ते आमदनीक एक टा आओर रास्ता निकलि गेलैक...

हनुआ छल हाथ में; घाल काटस जा रहल छलै। नमीच आवि कए हमरा कानक दित गुँह कए कऽ पुसकुवाएवऽ ई तब हुलूम करैत छथि बेटा, दैत छथिनह दू ओर कागज पर चढ़वैत छथिनह दल। इमान-धरम हिनका सम के हूथि भेलैन्ह, तैल जरैक तेलीक आओर कटैक मशासनीक। छोटका मालिकक सरबैटा आएल छल अफसर बनिकए खौरात बाँटए। हुअए नहि हुअए, हजार पाँच सो ओ जरूर मारि केने होएतैह... पता लगविहै बेटा हमरा नाम के छपवा चढ़ल अछि।

चाची अहाँके भेटल वक्तै? हलुकै हाथ सँ छाती ठीकि कए कुन्ती बाजल—हाथ गोमंदवाँ सीने सऽ भेटल अछि।

हमरा ताबे तक कोनो खाल बात लीपातक बारे में कहौं पता लागि सकल छल। मूडो हिलबैत हम ओहि अनाथक दित ओहि फाड़ि-फाड़िक देखल लगलहुँ। छैन भरिक बाबू बगलहुँ—जाए दीक्षोक चाची, की होअएत आव पता लगा कए? राकसक घेठ में जे गेल से गेल।

फूल बाबू केँ एहि बात सँ हमरा आओर घृणा भऽ गेल। काग्रेवक विषय में लोचऽ लगलहुँ जे स्वराज भेलाक पश्चात् याबू-भैया सभ अपना से दही-मोछ बाँटताह, जे सब एखन मालिक बनल छथि सोह सब ने भितरिया माल उरीताह। हमरा सबहक हिस्सा में तऽ सिट्ठी परतैक।

राधा बाबू पर अज्जा बड़ि गेल किएक तऽ ओ सोसलिस्ट भव गेलाह। बरहमपूरा में जावऽ चारि दिन हम हुनका संगे सेहो एहि बीच रहि आएल छलहुँ। ओतैक पैघ लीडर तँ दाहखीत भला हम की करितहुँ, परञ्च देखलहुँ जे आव ली धोती-कमीज पहिरए लगलाह अछि, दाढ़ी तेसर दिन पर बहमऽ

लगलथि अछि। एनल्लिएक जे आसरम छोरिक शहरे में डेरा जमजोताह।

रूपलाल किछु समझदार छल, बाबू वएह राधा बाबूक संग रहैछ। ओकरहि सँ पता चलल जे कापेतक अन्दरे हीनका समक गूठ छैन। एहि दल में बूढ़ लीडर नहि छैक, सब युवके छैक। गाँधी महात्मा तँ कोन बात में सोसलिस्ट गेल नहि रखैछ? अंग्रेजराज ने कांयसे चाहेछ ने सोसलिस्टे। परंच गाँधी महात्मा कल कारखानाक बिल्ड छथि। ओ एकरो खिलाफ छथि जे सेठ जमिनदार, राजामहाराजा तँ अमीन-जयदाद, धन-संपत्तिके छीन कऽ अन्य लोक में बाँटि देल जाई। बूढ़ भरि लहू नहि ओ बड़का चाहे 'थ। मारि खाएव ठीक मारथ नहि ठीक अछि। इन्डिअ-क्यूकिस जेना होए तेना अपन बात बनाथी। सचाइ पर रहव तथा अपना गाँव पर तऽ एक दिन जातिमक मोन अवश्य पिघल तैक... गाँधी महत्तमा तुमसान ककरो नहि चाहैत छलाह ने गरीब के ने धनीकडिक। ओ अंग्रेज सँ सेहो कराइ वार्ता नहि करथिन। हुनकर कहव छलैन जे एक दिन अंग्रेजक मति फिर अओतैक, तखन ओ अपनहि ई देश छोड़ि चल जइताह, हुनका अधिक परेशान नहि करिअवन।

एहि, पर भैया सोसलिस्टक की कहव? हुनकर कहवई रहैन जे दू चारिटा साधू महत्तमा के कलपला सँ अंग्रेजक हुअ कथमपि नहि घमसैक। सब सँ जनता जखन भेद माथ छोड़िक डार होएतैक तखने अंग्रेज हटत। पाँच जनता आपसी भेद भाव कोना छोड़त कोना कऽ एक होएत? लोक के जखन बिश्वास भऽ जएतैक जे जमींदार महाजनक फाजिल भन ओकरहि भेटतैक तखन रोटीक प्रश्न तऽ रहिनइ जएतैक। बालबच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ... बड़ावक फिकिर... खान पान तथा रहन सहनक ठौर ठिकाना... दवाइवाइ पथ पानिक इतिजाम... एहि सबक हेतु सभटा हलुक भऽ जएतैक, दरभंगाक महाराज होथि या पटनाक लाट साहेब—सुपत में अन्न किनएहु नहि



भेटतेन...सभ काज करब आओर सभ धाम पाओत...कुछ अपहु, कुछ बेकार सभक जिम्मेवारी सरकार के उठय परतैक, पाइक बल पर किछी ककरो खरिदुआ गुलाम नहि बनतैक—सोसलिस्ट भाई, जकर हर-कार तकर धरती ! जकर हुनर जकर हाथ तकर कल-कारख ना !

खलाल कहलक—हँ बालचन्द्र कमाय वाला आएत...एकर चसले के होठ !

सोसलिस्टक विषय मे ओहि दिन जे किछु हम बुकलिये क एखन ओतबहि सँ हमर हृदय उछलत लागल । कहू ने भैया केहन बढ़ियाँ मय छलै । फूल बाबू पटना मे एक बेर मून बनाबऽ काल खूब पिटाएल रहथि, तैओ गाँधी महत्तमाक पंथक गप हमरा बूझऽ मे नहि आएल । एहि तरहे अहूँ पिटाइते बेदम भऽ आएब, परचण्को बात बुझऽ मे नहि आएत ।

राधा बाबूक पहन सभ, बात विचार मे जे केर पार मेलैत अछि ओहि सँ ओ हुनकर स्त्रीओ खुशी बुकि पवैत छलीह । घर आवऽ लगलहुँ तऽ बाबू कहलनि—की करैत ओ गाँव मे बैसि क ?

बामा हाथ सँ ओ हमरा दहिना कान केँ नहूँ नहूँ मलऽ जगलाह । हम लजाकऽ टाढ़ भऽ चुनहुँ । जेन भरिक बाब ओ कहला—दू मासक पश्चात हम महपुरा हाथवाक खबरि देखौक तऽ जरूर भौंटा फरिहै । हमारा सँ हम ई कहि चलि अयलहुँ ।

ओही मास गाँधी महत्तमाक अयाइ रहनि । हम चुन्नी तथा रामखेलाबन हुनकर वरशन करऽ मधुवनी पहुँचलहुँ । भारी मेला छल पञ्चाल हजार लोक आवल रहथि महत्तमा के देखऽ । फूल-फूल, केरा, अरसेबा ( पपीता ), हाथक काटल सूत, सुगन्धित धानक गाछ, लजमनि, भंडा.....सदाबक हेतु नइ कहि कोन-कोन किसीक चीज वस्तु लोक लायल रहऽ । कहर भंडारक

लगक मैदान मे ऊँच जगह बनाएल गेड़ रैक, ओही पर गाँधीजी बैसल रहथि । हम सीसोक गाछ पर चढ़लहुँ तखने हुनका भरि आँखि देखलहुँ । रामखेलीना गाछ पर नहि चढ़य जगैत छल तँ ओ उर्चाक-उर्चाक कऽ हुनका देखनि आओर अपनहि पर तमसाए । परैच एहि मे हमर कोन कसुर छल पलथा मारि कऽ बैसल छलाह महत्तमा हुनकर बोली हमरा कान तक नहि पहुँचैत छल । दहिना हाथ उठा-उठाकऽ अवस्थे किछु बेर-बेर धुमबैत छलनि, से साफ देखाइ दैत रहै ।

पर अचैत अचैत राति भऽ गेल रहै । माय खाऽ कऽ सुति रहल छल, सुगनी हमर बाट तकैत छल । एहिना होइ छल । लाखो समझावी बुकाधी पर ओ एहि बात हेतु राजी कहाँ रहथि जे खाय पीबाक हेतु हमर बाट नहि जाकै जरकाला तऽ छलैह भात डिगुरिक चाउर भऽ गेल रहै ।

खाओकीकऽ निचेन भेलहुँ तऽ सुगनी केँ सेहो गाँधी महत्तमाक विषय मे बुझोलियेक । ओरु ने ठहरल । फौरी भरि यदि कोनो नव विषय बुझाए तऽ ओहि मे सँ लौटि कऽ बेचारीक कान मे जरूर खोटि कऽ भ देवाक चाहियेक, की विचार अछि आहाँ केँ ?

पवित्रा बैसाख मे छोटकी मलिकाइनक बेटा केँ उपनयन भेल रहैत । खूब भोज भात खूब रमन चमन । हम और कजर दू गोटे मिलि कऽ आमक एकटा गाछ कटलहुँ ओहि मे दू तीनटा डारि वलैक फारि कऽ हम डेरी लगा लेलहुँ बीच पचीस मन सँ कम नहि छल होइते । मालिकक पराना रहेक । काज परीजनक दिन छलइ । मालिक असगर मे हमरा सँ माफी मांगि लेलनि । ओहि वर्ष हमरा बहीनक संग ओहन व्यवहार कएलनि ओहि सँ जर मोन फारि देने रहथि । फोन मुँह सँ अपराधी हमरा सँ क्षमा माँगलक तँ तऽ बंग रहि गेलहुँ । मलिकाइन पर हमरा ओतेक कोप नहि आएल जतेक

पलचनमा

पलचनमा



एहि पल्लि पर.....उपनैक दिन हमरा गुलाबी रंग सँ रंगत दूटा धोती हमरा नलिकाइनक हाथ सँ प्राप्त भेल । माय के बारह हाथक लाठी भेटलैक सोलह टा तऽ खागरे मरल रहैक । चारिटा खस्मी पीटल गेल रहै । चारि दिन तक श्री खुवेली महुआइने महकइत रहै । जगवतीक पिंडक सामने देवाल पर खूनक फुहारक चिह्न तो एखनो तक देखवहक । हमर तिरहुतिया ब्राह्मण के जे समाय रहैन्ह तऽ वेटाक उपनयन खूब धूम-धाम सँ करै छथि । डोल, डाक, रसनचौकी, नटुआ, रंजीक नाच, कीर्तन, थिएटर, मैझाक लड़ाइ अर्को पंडित समहक सासवरार्थ ( शास्त्रार्थ ) की नहि होइत छैक ? सब होइत छरक भैया । सब सम्बन्धी बत्ताएल जाइत छथिन्ह, सम्बन्धक स्त्री सब के सेहो लिआउन होइत छहक । गामक बिस कहियो-कहियो पछोती गाम समहक बिरादरी के मंगाओल जाइत छैक । छोटका जातिवालाक कम मे हुनकर बरठ आओर बांचल खुचल या अगिये पड़इत छनिह । एही बएह भेलैक अति भैया ।

फूल बाहु आव भाड़ी लिडर भऽ गेल छलाह, साइकिल सँ अपलाह, मैदवा पर थोड़ेक काल बैस कऽ जमेवक ( उपनयनक ) रसम रिवाज देखेत रहलाह आओर उठलाह तऽ घेर-घेर कऽ नलिकाइन जखनै करएलछिन्ह ।

फेर श्री लगले चलि गेलाह । हुनकर माय के लिआवन भेल छलनिह श्री पाँच छः दिन रहल छलछिन्ह ।

फिज्जु आओर खेत हम बंटाई पर लेने छलहूँ । फूदन मिसरक विषया जानकी अपन सपनाक जमीनक एक भाग हमरा बंटाई पर दऽ देलनिह । ई प्यारि कट्टा जमीन छलैक । जहिवा सँ मिसर मरलाह तहिने सँ छकोरी जाला आहि खेत के उपजबैत आयल छलाह । सुखत होइक चाहे महीनो भरि मेघ बरसैक, ई जमीन कहियो पोखा नहि दैत छलैक । कट्टा मोन धान होइते

छलैक, समय साल अगर बढ़िया भेलैक त फेर पूछू नै, तखन त आठ मोन छँ कम उपजिते नहि छलैक । अगर दु-तीन बरस सँ ई छकोरी नाचा सँ समुरि नहि रहल छलैन्ह । दू जवान लड़का बंगाल मे नीकरी पर छलनिह । काज चलवक जोग बपया पठवैत रहैत छलनिह । अपन उमर उत्तर पार कए गेल छलनिह बेचारे कए बेर रास्ता छैकि कऽ हमरा कहलनिह तऽ हम तैयार भए गेलहूँ बात ई छलैक कि हमर बाप गाढ़ समय पर छकोरी के काज बापल छलछिन्ह । माय बाँधल छलैक । सावनक माघ, रातक समय करैत आवि कए बेचारी के डति गेलैक । जहर नस-नसमे पसरऽ लगलैक, गाय रहि-रहि उठैत छलैक । छकोरी ताड़ी पीकए ओहि दिन बेहोश पड़त छल । स्त्री बाल-बच्चा तऽ कए नशहर गेल छलैक, माएक सराध मे..... भीर होइते-होइते अभासल जीवक प्राण डूबि गेलैक । छकोरी के गोबधक परामर्शित लगलैक । वैह पण्डित बबुशन का पचास-बपया लेलछिन्ह तखन जाए कए पड़िया लिखल गेलैक । सिमरिया घाट ( मंथा ) जाए पड़लैक, मय टीक केश कटवऽ, पड़लैक, बालू-गोबर खाए पड़लैक, दान-दच्छिना करवए पड़लैक, घर तौट कए ससनरायण भगवानक कथा सुनलैन्ह । बिरादरी क आओर समाज के तखन जाए कऽ छकोरीक कुशल पान-परसाद गरहाज ( पास ) भेलैक । आओर भैया, हमर बाप एहन समय पर तै टाका नहि देने होइतैक तऽ छकोरी चाचा रामपुर छोड़ि-छाड़ि कऽ भागि गेल रहितथि । बाबू हमर दाका सँ दू साल पर आएल छलाह । छकोरी आधि कऽ हुनका पैर पर खसि पड़लैन्ह आओर कनेत बजलनिह—सालवन, जे चाहऽ से लिखवा लिहऽ । नहि नै करीहऽ नहि तऽ कपार फोड़ि लेब आओर मरि जाएव, तोरे सामने । चलिकऽ अहि पाप सँ हमर उद्धार कए देह ।... बाबू चुपचाप भीतर अएलछिन्ह, सैय टा रूपेया तए कऽ ओकरा हाथ पर



देखलखिन्ह—दायीक मुँह सँ ई सभ हम दुनूने छी । ते छकोड़ी आव ओही उपकारक बरता चुका कऽ अपन माथा के हस्तुक कए लेलखिन्ह । ओना ई कर्जा ओ हमरा बाबू के जीविने जी चुकता कए देने छलखिन्ह ।

पाँच कछा खेत बागी ठाकुरक हमरा पास ओहिना आवि गेल छल । बटाइयो लोक ओही खेतिहरके देखए पसन्द करैत अछि जे मेहनती आओर ईमादार होईक । ठाकुर गँम मे आ तल पाछू ध ओ महीना नहि रहैत छथि । घर वाली नइहर गेल छलैन्ह, ओतऽ हेजाँ फेल्लोक तऽ ओकरे तपेट मे आवि गेलोक बेचारी । दस सातक एक घेठा छलैन्ह ओकरा कतऽ-कतऽ होत फिरलखिन्ह । हारिकऽ ओकरी मनहाल मे छोड़ि एलखिन्ह । जमीन जाल मामूलिए छलैन्ह । एएह पाँच कछा भिडा खेत, घर-आँगन-बाड़ी, बंस-बारि, कलकतिया के छ-सात गाछ, वग । लोक कहैत छनि, ठाकुर दाखओ पीवैत छलाह । हम कहियो नहि देखलखिन्ह, ई भांग ओ जलर पीवैत छलाह । एकबेर की दिन मे दू-दू बेर ।

हमरा घर खूब खुशी छलाह । पाछू चालिकए अपन घर-आँगनक रख-बारीक भार हमरे देखलखिन्ह । बाहर सँ अविबध तऽ हमरा लेल कमीज-कुर्ता या बनिपानि जरूर लवितथि । एक बेर हम कहलखिन्ह—ई की देत छी मालिक, पीती दीअ ।

पहिरल के छुबि कऽ बजलाह—गाढ़ रंगक ई तऽ हमरा पसन्द आवत नहि तक केर सादा निकालि कए राखब, तऽ लीहऽ काहिह ।

अगिला दिन फस्ट किलासक एक धोनी ठाकुर देखलखिन्ह तऽ हमर बाँहि फुलि गेल, मोने-मोन बजलहुँ—एँ एहन बढ़िओ धोनी पहिर कऽ त निकलब ?

ओ हमरा छूट दए देने छलाह—चाहे जेतक बाँस काटिलियोक मुश्त अपने मतलब के दोसरक लेल नहि, आओर ने बेचए बलाक लेल । हमई रात

भरि मे मुस्किल सँ चारि-पाँच सँ चेसी बाँस कटैत रहल होएबैक ।

उपजक अपन हिस्सा ओ नगदे लेनाइ पसन्द करैत छलाह ।

राधाबाबूक खबरि लए कऽ एक दिन महपूरा सँ एक बुढ़ पासी आएल तऽ हम ओतए गेलहुँ । ओहि बखतीक डाक्टर रहमान इलाका भरि मे मराहुर छलाह । राधाबाबू हुनके ओतए महरल छलाह ।

जमींदार खान बहादुर सादुल्ला खाँ छलाह । रैयत हिंदू-मुसलमान सभ जातिक छलोक । ब्याठ-दस मौजेक मालगुजारी अवैत छलोक । ओ खुद डाई तीन सौ बीघा रखने छलाह, बाकी हजारो बीघा जमीन मनखप लागल छलैन्ह । मनखप बुझलियए भैया ? नहि ! अरे भाई, उपजक कोलहम-बीसम या दसम हिरमा मालिक वसूल करैत छथिन्ह ।

महपूरा के छोड़ ओकातक तीन सौय खेतिहर खान बहादुरक हजार बीघा जमीन पुस्त-बर पुस्त सँ हुँडा जोतैत आएल छलाह । आव काँधेसी अमल (शायन) आवए बला छलोक । तरह-तरहक अफवाह फैलैत छलै । खान बहादुर पहिने सँ चोकर भए गेल छलाह । ओ अइ कोशिश मे लगलथि कि एकक ओतक खेत दोसरक नाम सँ बन्दोबस्त होइत चलि जाई । गुप्तचर बारि छ बन्दोबस्त भइयो गेल छलोक ।

खेतिहर मम मे कुनमुनाइट अपलोक । हुनके दिस सँ डा० रहमान जिलाक काँगेभी लीजर सभ के पास पहुँचलाह । मुदा महतमा जीक चेला लोक कहे रहमान साहेब केँ शानि आर संतोषक शर्वन पिया कऽ चुप बैस रहलाह एए खान बहादुर नहि बेमन रहलाह, भीतरे-भीतर जमींदारी टोव-पेंच लुकर बढ़ि गेलखिन्ह । गरीब-किसानक ई जमीन अपना-अपना नाम चुपचाप लिखा हो छलाह । बड़का-नकिला किसान जे अकसर हमरा दिश के मज्जण भूइहार, शेख आओर सूँड़ी महाजम होइत छलाह—देह हइएए



चाहेन चलखिन्ह गरीब समहक सुठो व सुठो भात के । डाक्टर रहमान कहाँ तक बेसल रहित, गरीब लोक हुनका बेस दिनेह राधा बाबूक संग हुनकर पटना कमर जहलक दोस्त छलैन्ह। पहुँचलाह सोमे हुनका पास । ओहि दिस सोल्लिस्ट सभ मे वड गमी छलैत भैया । ओ जे किछु कहैत छलखिन्ह ओकरा करक ओहिध हुनका दिस तँ होइत छलैन्ह । गन्धर्वक बुझलाह होइत चाहे किसान समहक आन्दोलन—सोल्लिस्ट भाई ओहि मे आगू बढि कऽ हिस्सा लेत छलाह । से, राधा बाबू डाक्टर रहमानक वात मोन लगाकऽ सुनलखिन्ह या खान बहादुरक खिलाफ लड़ाई भुल करक रास्ता बता देलखिन्ह । किसान समहक संगठन अखबार मे जमींदारक जाली काजक प्रचार, कम से कम पच्चास मोल्लिट्टर समहक बहाली, किसान-वचनोस मोन अनाज आओह वेस टा रूपैया, इलाका भरिक किसानक एक भारी मीटिंग...

डाक्टर रहमान महदुरा भूमि अदलाह आओर किसान सभ के सभ किछु बुझा देलखिन्ह । लोक लगले राखी मए गेलैक । ओहि जाखन जमींदारक मुकाबला असगरे तऽ कियो कए नहि सकेत छलैक ? ओकरा पीठ पर शानाक दर्ोगा साहेब छलखिन्ह, दरभंगाक कलहुर साहेब छलखिन्ह, इलाका भरि के जमींदार, पण्डित आओर मोलवी साम—खान बहादुरक पक्ष मे छलखिन्ह । पच्छिमक दस सकेत जवान, नेपालक पाँच खुबरी बहादुर... तऽ ताकतवर छल—खान बहादुर । असगरे के ओकरा से भिक्षितेक परख तैय टा लाडी एक ठाम भऽ जाइक तऽ ओकर एक भारी वीर बनि जाइत छैक । अपन-अपन धरतीक हिकायतक लेल किसान एक होअर लगलाह । पहिने हुनका दिस सँ रहमान साहेब जमींदार के कए धेर बुझा चुकल छलखिन्ह, आय कोनो रास्ता नहि छलैक । रेपत समतयक लेल के कि लाश खसए तऽ खसए, मर अपन खेत दीपरक दखल मे नहि जाए देबैक ।

यलचनमा

कितान क दिस सँ बहुत अधिक बेआरी भऽ चुकल रहैत ओ इलाका भरि मे लोडिब बँटि गेल रहैक । राधाबाबू मिटिंग सँ दू दिन पहिनिहि आयि छटलाह ।

हमरा देखितहि बजलाह—एहि बेर हमरो जहलक खिचरि खास परत । एतेक कहि राधा बाबू सुस्करलाह आओर नजर मारि कऽ एक टा मुँह गर आवसी दिस हमर ध्यान खिन्नलनि । फेर कहलखिन्ह—ई रहल वक्तचनमा रहमान साहेब एकर नाम लीखि लिखोक स्वयंसेवक से ।

खादो क उज्जर पैजामा, चरिजाना कमीज । मोछ रहैक परंच शही साफ । केश झँटिया रहैक । ओहि समय हुनका हाथ मे बन्देबाक रहै पैजामा जाइ छलाह होएत । खूब दिसकऽ आस-पास मे सोरमचा कऽ कहलनि की लीखि दिओक नाम ?

कहि तऽ देलहुँ एक बेर—चरमा खोलैत राधाबाबू हाथ मे लेत बजलाह जाच पोखरि दिस सँ भऽ आइ तखन । धोतीक कोर सँ जो चरमा साफ कएलनि, ओकरा नाक पर बैसबैत बजलाह—तीन दिन तक सोरा हम अपनहि संगे रखबोक, फेर छडी । जो आभय देखि आ ।

तऽ की एतहु आभय छैक ? हम चौकिर एम्हर-उम्हर देखऽ लगलहुँ । पास परोस मे ताफ सुयरा मकान रहैक । छोट-छोट । रास्ता पर दू तीन जगह सुर्गा देखाइ देलक, दू एक सुर्गाओ छलैक । कनीक हटिकऽ भीतक ओहि कात कारी कुत्तिया पीयर हड्डी चिबबैत छल । प्रधान पर नादि मे चारि टा मस्त बरद मुँह लगेने भूसा तानी खाइ छल । दोसर दिस गोला रंगक पोछी बान्हक छल । भूमीक डेरी दू एक टा शर । बेतक मे दू गोठ लुगो । एक टा साधारण असमीरा बन्द । तखना पर दबाइक गोली भरल किछु शीशी, रबरक नाली (आला) आओर उज्जर डिब्बा खूटी मे टाँगल छल क



भैया आखिर डाक्टरक बैठकखाना छोड़ के कीने ? अपन-अपन ओजार ककरावर नहि रहे छैक ?

जे हमरा घर सँ नज्वाय अमने छल, वएह सऽ अमलक अधि आसरम दिस । गाँवक एकदम बाहर, बगीचाक लग ।

दूरे सँ देखलियेक जे बाँसक छोर पर भंडा फहराईत रहैक । लग जाकऽ नजरि ऊपर कऽ कऽ देखलहुँ तऽ लालकंडा पर दूइ इशियारक चिन्ह देखाई परै लागल— एकटा निशान छलै हाँस आओर दोसर हथोरीक... ई सुआक सूख पेट पर हथोरीक माथा ।

आभम की छलै, फूस घासक टेम्परेरी झोपड़ी रहैक ! खाकी अधिया आओर लाल हाक कमीज पहिरने दूइ टा नबलवान बैसल रहै । हेटक चुल्हा मॉडिक हाड़ी मानेस बजैत छलै खुद-बूद खुद-बूद खुदबूद, खुदबूद । बुढ़ बाकल वापक बिना वेटी जंभा आमक सुखाएल डारि, फाटल सुखाएल बाँसक संग जरैत रहै ओकर धुवाँ सेहो ओहने कड़ा रहैक ।

स्वयंसेवक भइया सँ बरी कालतक बात करैत छलहुँ । हुनका संगे हम जहिए छिल मिली गेलहुँ । वो रोखी रोटीक लड़ाई मे बहादुर छलाह । सोसलिस्ट पार्टी हुनका दरभंगा पठओने रहइत । हमरें जेका ओही सब गरीब भाय-बापक पूत छलैक । एकटा ब्राह्मण दोसर गोआर । अवस्थी जतेक हमर ओहिसे कम ओकर सभक नहि छलै । ओकरा मे ओतऽ जाति-पाँतिक भेद-भाव नहि छलै । एकक नाम दिनेश छलै दोसर के सुरजा । दिनेश हमरा चूरा फाँकऽ क हेतु देलक आ कहलक—भूख लागल होएतो क कामरेड । एस ले ताबे तक पेट मे किछु ।

कामरेड—ई शब्द तऽ हम कहियो सुननहुँ नहि छलियेक । राजक खातिर ओहि दिन ओकर मतलब हम बुझि नहि सकलहुँ, परंच दू दिनक बाद

एता चलल जे कामरेडक मतलब बुढ़क लड़ाईक साथी । एके मोर्चाक दू फौजी जवान एक दोसर के कामरेड कहिक शोर करैत । अपना हकक हेतु लड़ऽ बला हमरा गरीबक लेल कामरेड सँ बेसी कोनो लबज ( लफज ) नहि अछि ।

थोड़ेक कालक बाद हम राधा बाबू लग घूरि चलि अएलहुँ । हुनकर धोती कमीज के साबून लगाकऽ खींच देलियेन । बाहर कपड़ा पसारिते रही कि इम्हर भोजन हाजिर भऽ गेल । बरहमपुरा आभम मे केवळो मास रहि चुकल रही, मुसलमानक संगलाइ मे परहेज तऽ नहि रहै मुदा डर रहै जेकाँ कोनो बेरादरी देखि लेलक आओर इ खबरि गाँव घर मे पहुँचि जाएत, आओर एकटा चखेरा बेकारे उठि जाएत । तँ-थारी चढाकऽ गौडकखानाक अन्दर बला कोठली मे चलि गेलहुँ, ओतहि खएलहुँ खेसारीक बालि आओर भात रहैक, तरकारी छोड़क रामफिसनी ( तोरइ ) क । भइया मुसलमानक ओहि ठाम जेहन मानस होइ छइक तेहन कतहु ने ।

भाय के खबरि देबक हेतु छुट्टी मंगलहुँ तऽ बाबू कहलथि—हँ ! हम जनेत छी जे तू ककरा खबरि करक लेल छुट्टी मंगै छै । हम लजा गेलहुँ आओर ओहि नीचा कऽकऽ बिदा भऽ गेलहुँ अपना गाँव दिस ।



मिटिंग में चारि सौ के करीब लोक आएल रहथि। आश्रमक संग बला मैदान में सभा भइये नहि सकै छए, यमीचो में नहि। खान बहादुरक मनेजर ओतऽ एहन सभा पर अपना कटित सभके जमा कऽ देलकैक। आम की छुकाऽ की आय मिटिंग नहि होएतैक। नहि, भेलइ। आओर शानदार मिटिंग भेलैक।

अधेड़ उमरक एकटा आदमी लोक के ललकारि कै कहलकैक—ओ अछि हमर खेल, पाँच कइका दुकरा छैक। ओहि में महआक गाछ लहलहा रहस छैक...आब भइया, ओतहि मिटिंग होयतऽ आब महआक काटिकऽ ओतहि बैस-वाक जगह बना लइत छी...विजलीक दुर्ती सँ ओ आगू पहुँच। देखिते-देखिते पचीस-तीस टा हॉलओ आबि गेल आओर लोक गाछ काटस लगलैक। किसान में भारी जोश उभरि गेलै। बाघ घंटाक अन्दर समूचा खेल साफ भऽ गेलै। पीपीवीच तखतपोश थऽकऽ लोडरक खेल जगह बनाएल गेलै आओर मिटिंग के कार्य शुरू भऽ गेल।

मेआ ओ कोन आदमी रहै जे अपन हरिवरे फसिल बरबाद कऽकऽ मिटिंग हेतु जगह बनौलक ?

ओकर नाम लतीफ छलै। मेहनती, गरीब आओर ईमानदार। कुल डेढ़ बीघा जमीन ओ ओहै। पैच-पैच नेताक त्याग तपस्याक खिस्सा व

खुलने होएअह, परंच महपूराक गरीब किसान के एहि त्याग के भला कोन वर्ण देखत ? हरिवर फसिल कटधाक समय हमर तऽ आँखि छल-छला गेल भैया ! हम तऽ सपनो में एहि तरीकाक गप नहिहोचि सकै छलहुँ।

लीडर पाँच गोटे आएल रहथि। पटना सँ स्वामी जी, गया सँ शर्माजी, मुजफ्फरपुर सँ निसिरजी, कतहु के एक टा आओर बाबू छलाह, जमशेदीपुरक गंगा बाबू आओर राधा बाबू। स्वामीजी भूइ कद के कनीक पिङ्गवास रंगक आदमी छलाह। कनका गेल्ला रंगक रंगल। बाजऽ काज एना बुकाइन मानू खापड़ में मकइक लावा फूटि रहल हो।

भोजन फल, दूध भरा। हुनका लेल पाँच सेर दूध पाकल केरा एक बेर आओर पथिया भरि संतोला-नेत्रु आएल रहैक। खादती खूब रहथि गोपिंदर बुझलिय। खास बैसला तऽ एके बेर एतेक खंतीजा खाऽ गेलाह जे सामने में सीठी ओर छीलकाक डेरी भरि छाती लागि गेल। सुदा, मिटिंग में स्वामी जी चिचिएला सेहो खूब। मय खान बहादुर, मय दरोगा जी, मय एस० डी० ओ०, मय कलठर ओ तम के लेखकारलखिन्ह। महाराज बहादुर के एहन रंगकलकैन्ह, की बताउ। सरकार के सेहो खूब छोछालेवर केलखीन्ह स्वामीजी। पटना सँ दूटा अफसर रिपोर्ट जैवए आएल छलैक, ओ स्वामीजी के लेखकरक एक-एक अच्छर लिखैत छलाह—खान बहादुरक डेबदी सँ हुनकालेल देहल आएल छलैन्ह। हुनके लेल किएक, दू कुर्सी आओर एक डूल (स्टूल) आओर सेहो मंगवाओल गेल छलैक ? कुरमी सभ पर एस० डी० ओ० आओर डिप्टी कमिश्नर दे गेल छलाह, डूल पर खजौलीक दरोगा जी।

स्वामी जी किसान तम सँ कहलखिन्ह—“बाहरी लोडर सभ के भरोसो नहि रहू, अपन नेता अपने खुब चतु। मंगनी आओर छपार के बाहरी नेता



बहुत देखतहूँ, मगर किछु भेद-बेवई नहि। मानलहुँ कि जेता बदल-लिखल होइत छथि आओर अहाँ अपढ़-अनजान छी, परञ्च गहूम-चाउर, बूध-धी, लिलहन-दूर सभ किछु अपने उपजबैत छी, लोडर लोक तऽ अहाँक कमाईक इकुआ खाए कऽ लेखर देवऽ आबैत छथि आओर अपने दिमाग व देरक ववहअभी भेटबैत छथि। अहाँ अपने अधिक सँ एतेक तऽ जनिने छीएक कि लेखर चाहे लाख देल जाईक, हुनका सँ ने एक दाना चाउर उपजाउल होइत छन्हि, ने गहूम आओर ने धीवें दूध। लेखर मुनि कऽ भूख-रपास नहि मिटैत छैक। अहाँ सभ लोडर सभ सँ लाख गुना बढिथो छी। अहाँ सभ किछु उपजबैत छी तऽ अपने लोडर ऐहो अपने अहिठान पैदा कर। जे अहाँक आदमी होएत वैह अहाँक तकलीफ के बूझत, जाके पर न कटी बिनाई से की जाने बीर पराई। ..... काँपेय अहाँक दुख दर्द की बूझत ? ओ खादी पहिर कऽ आओर गर मे माला पहिर कऽ जमींदार सभ के जहल पठप-राक नाटक करैत छथि। पाछु जहल सँ निकलल वैह जमींदार काँपेसी अहाँ सभ के राति आओर संतोषक पाठ सिखबैत फिरैत छथि..... खनारि! भाई, एहन लोडर सभके फेर मे कहियो नहि पड़य..... अहाँ अलगरे नहि छी, करोड़ोंक ताबाद अछि अहाँक। अहाँ जखन डाढ़ भए जाएय आओर एक कंठ भए हुंकार — करखेक तऽ जालिम जमींदार सभ के कलेजा दहलै लगतैक। ओ छथिए कतेक, दाखि मे नून के बराबर। ओ अपने बल सँ, सरकारी अफसरक बल पर हुकुम करैत छथि। अहाँ तिमै तीन काज कर— संगठित भए कऽ एक भए जाब, जान जाय तऽ जाय मगर अभीन नहि छोड़, आओर अशान्ति—कचहरीक ईद गिदें कहियो नहि जाब..... किसान सभा अहाँक मदत करत, बाहरक किसान लोडर अहाँक बीच अवेत जाइत रहताह। किसान भाई, जाय अहाँ जायि गेल होएत। खान बहादुर होयए

चाहे महाराज बहादुर कियो अहाँक हक नहि छीन पाबैत। अहाँ अपने तागत के चिन्ह, बाबू सभ मिलि कए इन्किलाब—”

गिन्दावाद !—लोक सभ मिलि कऽ अवाज लगलकैक। सभ के मुँह पर तेज वर्तमान छलैक, आँखि चमकि रहल छलैक। स्वामी देर तक बाजल छलाह, किसान सभ दस साधि कऽ सुनलन्हि।

खानबहादुरक मनेजर लोक सभ के बीच चारि छः बरमाश सभ के बैठा देने छलैक। शुरू-शुरू मे ओ सभ ‘महत्मा गाँधी की जय,’ ‘भारत माता की जय’ आओर ‘स्वामी जी बैस जाव’ वगैरह किछु आवाज लगलकैक तऽ किसान सभ के बड़ तामस भेलन्हि, पैरिह पकड़ि-पकड़ि कऽ ओ सभ गुन्हा सभ के बेमा देलन्हि। लोक सभ के नराजी आओर कड़ा रुख देखि कऽ फेर हुनकर हिम्मत नहि भेलन्हि।

स्वामीजीक वाद शर्माजी उठलाह, गया बला। लम्बा कद, पिरसियास सूरत। बेतरतीब केश। देह पर कमीज, कुर्ता या गजी किछु नहि छलन्हि। अदार् नीन सभ कपड़ा, डीढ़ सँ लटल गेल छलन्हि। ओ कहलखिन्ह—

रहिमन चाक कुम्हार के मोरे दिया न देय

बिल मे डंडा डालि के जो चाहे गड़ि लेय

“किसान भाई, मंगला सँ किछु नहि भेटय। अपने तागत सँ आहाँ अपने हक पाबि सकैत छी। अहाँक तागत की अछि ? एक्के अछि आहाँक तागत, हंगठम। घर मे कनेत-कनेत अलगरे हाय हाय करैत करैत हजारो साल बीति गेल। सरकार के अहाँक रत्तिथो भरि परबाह नहि छैक। ओ अहाँ सभ सँ नहि, चोर डाकू सभ सँ धवराइत अछि। हुनका पकड़ मकान (जहल) मे हिराजत सँ रसौत छैन्ह। खेनाई बीनाईक, पहिरब-ओढ़य, दवाई दाख के हुनका खेल सभ हस्तजाम सरकार फेरैत छैक। मगर गहूम बातमती अपना कऽ



दोहर सभ के लुटवऽ वाला अपने खुद मरेत छथि । सरकार के आर्थिक कनिजी फिक्र नहि छैक । ओ मानु खुद प्रशारा करैत छैक किसान सभ, चोरी कर आओर डाका दे तखने सोहर गुजर होयती है”.....

शर्माजी बुझवैत कहलखिनह—“जमीन्दार वङ्ग प्रपंची, वङ्ग जालिम होइत छैक । अरुअल (अरुअल) तऽ पहिने तोरा अन्दर अपने मे इट करवाक कोशिश करैत होयलोक, नहि, तू सभ अपन जमीन पर छटल रहि गेलें तऽ ओ पैसा बचा के संग करतैक । अफसर सभ तँ निजि कऽ ओ तोरा सभ के जहक मेजक कोशिश करतैक... लभन, मोठिम, बारट लगाय सभ भऽ सकैत छैक आर खबरदार, अपना खेल सँ नहि हटय छलावा मे नहि पड़य आओर कचहरी जा कऽ गलही नहि करय । पुलिस आओर हाकिम सभ सँ संपाद कहि देखैक कि अही खेत सभ के जहल बना दियोक, इन पड़ल रहय, भागय नहि । ओहि जहल मे तऽ जेबाक अछि तऽ सभके लऽ जमियोक... बाल बच्चा, जवान बुढ़, मर्द औरत, गाय-बरद, भेड़-बकरी, कुकुर-बिलाहि, चूहा-कमी, ...हमस सभ बन्धु सभे जायत । सखने इन जहल जा सकैत छी नहि तऽ एम-सं-मय नहि होयब... के करवाक हो, एतहि कर । आओर अगर पुलिस बल खानला पकड़इ चाहए तऽ हूँ, दया मर्द औरत एक दोसर के बड़िया जहाँ पकड़ि कऽ रहि जाय पड़त । सैयो आदमी के लऽ जेबाक हेतु हजारो सिपाही आओर पचीसौ लारी (बल, टुक) ताही... फेर देखैक के अहाँ सभ के केना कनय तऽ जाइत अछि । आर आहाँ हमर ई बात मानि ली आओर छटल रहक निश्चय कऽ ली त फेर आर्थिक खेत पर सँ आर्थी के इटवय वाला ताकत अहि दुनियाँ मे नहि छैक । जमींदार, सरकार, पुलिस गुन्डा... सभ थानि कऽ घेठ जायत ।”

एकर बाद मारा सभलेक—कमाव बला खायत... एकटा जलते जे किछु

होइक । इन्किलाव... जिन्दावाद । जमीन केकर... जीवए... बीअए... होकर । जमीनी राय... नाश हो । जमींदारी पर्थी... नाश हो । किसान सभा जिन्दावाद । सल मंडा... जिन्दावाद । इन्किलाव... जिन्दावाद ।

फेर वौकी लोहर बजलाह । अन्त मे डाक्टर रहमान महपुरा जमींदार खानबहादुर लखनवाली के अगाह करैत कहलखिनह कि ओ अपन जालिनामा जालि सँ बात नहि अओवात तऽ इलाकाक एक-एक किसान आगू बड़वैक आओर हुनकर होत ठीक कए देतैन्ह... दरोगा आओर एस० डी० ओ०... सेहो डाक्टर रहमान साइब कहलखिनह—एकी दून्द सुनि (यून) खसलैक तऽ ओकर जिम्मेवारी अहाँ पर होयत । किसान के समकाय सँ पहिने अहाँ खान बहादुरक लठैत सभ के रोकलोक जे खुलेआम गारि बकैत घूमैत अछि ।

राधा बाबू रहमान साइब सँ पहिने जिला के अकसर सभ के पटकगारि बुझल छलखिनह । तीन घंटा तक सभा चलइत रहलैक । खतम होयए सँ पहिने एक मौजवान भीत गओलक—

दुर्दिनमा केसक हरान रे, फिकिरिया मारतक जान ।

करजा करिके खेती केलुं हरि गेलई सभ धान—रे फिकि०

बरद बेचि रजवा के देखुं, छोड़ए नहि बइसान

जमींदार के छलुम रोकऽ, चेकऽ भाई किसान—रे फिकि०

गाँव के गरमा कऽ लोहर लोक अगिसे दिन जसि मेलाह ।

हमरो बस्तीक पन्तह-बीस किसान सभा देखऽ आवत छलाह । किसान

सभाक गाँगी रामपुरक लोक सभ मे सेहो किछु आवय लगलैक । सुन्सीजीक

बेटा थोड़-बहुत अंग्रेजी पढ़ि लिखि कऽ बेकार बैसत छलक । ओही लोहर

रातक भाषण सुनि आवत छल । आओर राधा बाबू सँ किछु बात सेहो ओ

कएने छल ।



महपुराक किसान सब भितरे-भितर भिड़च कएने छल श्री के लपना नाम सँ सेत लिखा लेने अछि ओ सेत सब के आवाद करए तऽ करय दिवोक, परंच फसल हमही काटव । परंच जमींदारक तरफ सँ कोनो किसमक खेत आवाद नहि कयल गेलैक । लोग बुझि गेलैक जे फसले पर धाया मारऽ चाहेत अछि ।

हमरा बस्ती के मालिक के सेहो कान ठाढ़ भए गेलैन्ह । एक-दुनक एतहुँ हेर-फेर शुरू भेलैक । सबे के समय मालिक के परदादा आओर बच्ची भाबूक दादा किसान सब के ओतक हजारो बीघा जमीन के बंशत के तोर पर बँक करा देने छलखिन्ह । हुनका वाला किसान दले-पौंच छलाह अनिका काश्तकारी इनक सयें मे कायम रहल छलैन्ह । आम किसान एक लगोन देन आमज छलखिन्ह परंच रसीद लेबक जरूरत ओ कहियो नै बुझलखिन्ह । बान टूटैत छलैक त कहितथिन्ह—मालिक बईमानी धोड़े करताह ।

पौंच-एक सौ बीघा जमीन छोड़ जात बला के संग एहनो छोटक जेकर दर मोनहुंछा छलैक । फी बीघा बान दू मोन रबी खरीक एक मोन । रसीद एकरो नहि भेटैत छलैक । अलावा एकर किसान हजारो बीघा बंटाई सेहो जोसेत आएल छलाह ।

मालिक सब रूढ़ दर रूढ़ मे बेचारा किसान सबहक खूब लुटैत छल छन्ह । अनजानक छोटोदा रुपैया जमराजक समान अछलैत छलखिन्ह । मगर आव किसान महपुराक दिश नज्द लगौने छल आओर मालिक सब के नजरि सेहो उभरे छलन्ह ।

अगिला अगहन मे फसलक जे खीना-कपटी भेलैक ओहिमे एक किसानक लाश खलल छलैक । गंजास जे मारने छलैक ओ खान-बहादुरक कोचवानहि छलैन्ह । पुलिस टुडुर-टुडुर ताकैत रहलकैक आओर हरपारा लापता भए गेलैक । अग्ले दफा १८४८ के तोकक नाम पर दू-तीन दर्जन किसान तब

के गिरफ्तारी भेलैक । हुनका सब पर कए प्रकार के मुकदमा चलाओल गेलैन्ह । फसल परंच किसान क घर पहुँच गेल छलैक ।

धान काटक दिन छलैक, अही सँ हम मलोसि कए रहि गेलहुँ । नहि तऽ चारि छः दिन महपूरा रहि कऽ किसान के संग दितिक । आओर संयोग देखु भैया कि ओही मास मे सुगनी के बच्ची पैदा भेलैक ।

चमाइन आओर नाइन के इनाम-तिनाम देवण मे, बड़ही आओर पड़ोसिन सब के सेल सिंदूर देवण मे पंद्रह-एक रुपैया लागल होएत । बेसी खर्च करक हमर ओकावे कहीं छल ?

बच्चीक जन्म लेला सँ भाय कनिक उदास भय गेलैक परंच मनियार काफ़ा कहलखिन्ह—हमर विरादरी बराहमन क, भूँइहार, खजूतक नहि अछि कि लड़की क माँग मे तिवूर पड़नाई मुश्किल भए जाएत । कथिक सोच, कथिक किकिर ? एक रेबनी सेत तऽ दोसर रेबनी आबि गेल ।

ई बजैत चाचा आँगन अएलाह । सुगनी रोद मे बैसल छल चिलका के लेने । ख्यास सुनिवे ओ प्रोष के कनिक तरकाड लेलक । बुड़ब बायु आबि कए बजलाह—हुँगी भवानीक दरसन करए अयलहुँ अछि ।

भाय ओसारा पर धान उसनति छल । चट सँ ओ सुगनीक नगीच छठि अएलैक आओर बच्ची के अपना हाथ मे लए कऽ मनियार कका के सामने कए देलकैन्ह, अपन मुँह फेरने रहल किएक तऽ बाबू हमर उमर मे मनियार कका सँ साक्षमरि छोट छलखिन्ह ।

बच्ची क कपार पर अठन्नी साठि देलखिन्ह कका आओर कहलखिन्ह—चेहरा-सुहरा बिलकुल बालोक सम छैक ।

साएक सामने ओकरा हम भरि आँखि कहियो नहि देखलियेक । साज लागैत छल । परंच असगर मे देरी तक ओकरा देखैत रहितियेक । केहन



बढ़ियाँ लगेत छल । सारा मुलावी कमजक समस्त भजेत छल, ओकरा इन अपना छोड़ सँ, नाक सँ, पपनी सँ कपार सँ हलुके दवागल करैत छलैक—  
जहि सँ भारी संतोष होइत छल । छाती मे या कि कपार मे कहियो चापन धरि कस लगने छी अहाँ ? हँ, तऽ वस बुझिनीअकि ओही प्रकारक तरावट—ओहि सँ किछ बेसीए कहियोक दबनी के धूपए सँ भेटैत छैक । संतान कोनो नानूली चीज नहि होइत छैक भैया !

मियो वता केने होएतैक, एक बेर एवारा गाबए बल पँवरिया अछिअ, दू आवसी छल । हुनकर छैलक सुराहीदुमा छलैन्ह । पठर भरि ओ सोधर भजेत रहशाह । छेड़ बोधा आओर दू सेर धान लेसनिठ सखने छठलाह, बड़ लगार होइत छथि ईहो सभ । बाबू लोकक हवेली तऽ नहि जानी बहैक समान लडा लाग जाइ छथि ।

हम किछ नहि बुझि सकलहुँ । पूछलैक—की छोक र ?

बरे शुलुम भऽ गेल ! कहयो तऽ करै किछु ! हम खज्जका कऽ भजलहुँ तऽ ओ फूला-फूला कऽ काम मे कहलक—जयमंगला ( जयमंगला ) के लहेरिया-संजवला दरतीवा सराकऽ लऽ गेलै ।

आश्चर्य सँ हम ओकर मुँह दधा देखलैक । इएह चारि पाँच दिन पहिने हम ओकरा पोखरि पर ठाढ़ देखने रहलैक आखिर दू भेलै कोना ?

चल, रस्ता मे कहबौक—रामखोजानन कहलक ।

कमीज पहिरी कऽ ओहरे देह पर धऽ झेलहुँ आओर घर सँ बाहर निकललहुँ—हाथ मे लाठी छल । पता चलल जे पहिले लहेरियागंज, फेर मधुवनी दरभंगा आओर जयनगर ( जनकपुर ) तक जाय पड़त.....

रास्ता मे रामखोजानन सँ जे किछु वता जलल, से वता दिअ ? त लिअ, सगु—

हमर बड़का मालिक बाबू गोरीशंकर चौधरी के बेटी, बेटा इएह जयमंगला । बूढ़ा मालिक के कतेको वर्ष पहिने स्वर्गवास भऽ गेलैन । जेठका बेटा बकील आओर छोठका डिप्टी मजिस्ट्रेट । बेटी जहिआ सँ भतीमात भेलैन तहिआ सँ बापे लग मे रहऽ फगलैक । श्याम सुरति, बड़की आँख, गोल-मटोल मुँह । देखऽ मे बहुत सुन्दर छलैक । अवस्था छल हेलैक चौवरील-पचीस के ।

लहेरियागंजक एकटा नवलवान दर्जी हवेलीक सभटा कपड़ा सीधैत छलैक । खूब गुरत सुलमान । ओकरा मामा के मधुवनी मे तिलाइक दोकान छलैक । बूढ़ा मालिक ओकरहि सँ अपन कपड़ा सिबबैत छलाह । ओकरा सँ सीख कऽ ओकर भागिन लखन तैयार भेलै तऽ नाप लेबाक हेतु अनामी कपड़ाक हथेलीक अन्दर आवऽ जाए लगलैक । इएह इदू तीन वर्ष सँ भतीम तऽ कऽ ओ लहेरियागंज मे रहऽ लागल । बीच मे दू तीन बेर एना भेलैक जे कपड़ा कतेको तरहक आओर बहुत गिनावक छलैक, किछु कपड़ा किमतीओ छलैक । नवका दर्जी बड़ बढ़ियाँ गिवाई करै छलै, बच्चे रहै तहिए सँ मलिकाइन ओकरा जनेत छलखिन । त, बैसक मे जलगे एकटा कोठली तऽ अन्दरे गिवाई करवाक हुकूम भेटलै । चारि चारि, छः छः दिन दूदतीन बेर ओ मालिकक ओहिठाम रहि चुकल छैक । मसीन अवद आओर जाइ ।

दर्जी के मजूरी भेटै छलै भोजनो भेटैत छलैक आओर नास्ता पानी सेहो... रहि बीच दूनुक नजरि चारि भऽ गेलैक, दूनु दिल अपन रास्ता सेहो निकालि गेलक । बाहर ककरी बूझल नहि छलैक आओर भीतर लोहिया मे गुर-पकैत छल । एहिधेर दर्जी आएल तऽ साल रफू करय अहिना आइल, मशीन बनवाक तखन काजे कोन रहै ? दू तीन दिन रहलाक परचात ओ राति के गैब भऽ गेल, जयमंगला सेहो गैब रहै । खानदानक नाक कटि गेलै भैया ! मा लाठी लऽ कऽ लोला मंजु के लाकक हेतु नीकललहुँ । लहेरियागंज मे जे



कोठली बर्तों में रहने फिराया पर लकरा ओ वू मास पहिनहि छोड़ि देने रहैक । मधुबनी में ओकरा भाभा सँ पृथलिके तऽ हुइया अपना छोटे, छोटे दाढ़ी पर हाथ फेरऽ लागल, फेर कान झूलक आओर बाधल.....तो... वा ! तो .....बा । ई की मुनबऽ आएल अछि हमरा ? या इ लाही ।

किछु हकि कऽ ओ एकटा गूता निकालि लेलक आओर ओकरा बूझाव लागल एहन सन् काम लेना करौं बीडऽ बला होइ । फेर बीच में आवि बऽ बाजल—मारक खाल खींची लेबैम, आधारा कही के । दू तीन मास सँ गेव अछि, मतीन बेचि कऽ खाऽ गेल ।

इस ओतऽ सँ हटि गेलहुँ । मिलेनमें वूमन-धूमन टीसन पर अएलहुँ । सेर तीन-एक चूरा देने छलखिन मलिकाइन, रामसेलाइन, ओकरा खोलिकऽ खाय लागल आओर हमहुँ । बड़ीओर में चूख लागल रहै । थोड़ेक-थोड़ेक खाय लेलाक पश्चात् नून हरियर मिरचाइ मोन परल । खाय कऽ टीसनक बाहर सँ दानि पीबि अएलहुँ ।

थोड़ेक कालक पश्चात् गाड़ी एलइक । हमसब एखन तक टिकट नहि कटएने छलहुँ । एकाएक हमरा लुलल बेकारे हम सब भटकल । जयमंगला अहिना नहि नीबलल रहै, पाँच हजारक गहना सेहो अपना संगे लड़ाक लऽ गेल रहै । ओकरा झुँह में धाम या महुँमक बाइल हँसि ओहि तरति जोराक पैरि भला के पाओत ? छोड़ि देइ ।

तमूचा दिन आओर समूचा राति हम मधुबनी में काटि देलहुँ, ओ गाम गेलहुँ । रामसेलाइन जाकए बड़की मलिकाइन के ताकऽ देखक नतीजा कहि देलकनि ।

भूठ किएक कहू, हमरा कोनो खास लक्षणीक नहि रहै । देइ के तागति छल, कतिपय काज करै छलहुँ । पन्द्रह कक्षा के लगभग जमीन हाथ पर

दानि गेल छल, पाँच कक्षा अपन अलगे छल । संतोषी भाग छल, फरमाइस पूरावऽ वाली घरवाली भेटल छल, हिलति डोलति, बजति-भूकति सोनाक मुँति छन बचची भेटल छल । आओर की चाही ? पाँच-एक टा बातक जरूरत छल भइया । कहियो-कहियो ठाका कैचाक तंगी जरूरी बुझाईत छल । पाँच र० महीना जँ कतहुँ सँ आवि जाइत तइओ बालचन्द्र राउत वदेखर भइगइतथि । भूठ किएक कहू भइया ? समांग नीके रहय काम-काज भेटइत रहय, परिवार छोटे रहै, नीयत खराब नहि होइ । भीम में दल-धोसक लेल जगह होइ आओर की चाहीएक ? तऽ पाइक तंगी कोना भेटा तकइत छलइ भइया ?

एक तऽ हम ठीक केशवुं एहि बेर कुसियारक खेती अवश्य करव । दोसर बात के तोचि तोचि कए पक्का कएलहुँ सँ छलईजे बड़का पत्ता बला तमभू क खेती करक विषय । हमरा घर सँ दक्षिण पंचकोरी बाबूक थोड़ेक जमीन भरइत छलइक, ओकरा ओ बे—आबाद छोड़ि देने छनखिन । खाइत—पिबइत आवसी छलाह, बेटा राज में तहसीलदार छलखीन । सतराज खेलाक मारी चोखीन छलाह । एहि में पंडितजी हुनकर जोड़ीदार छलखिन, एएह पंडित शौशन पाठक ?

पूछलाक पश्चात् पंचकोड़ी बाबू कहलन्हि उम्माकू नहि, आबू उपजा एकइत घऽ तऽ ठीक । नहि त नहि ।

बच्छा सरकार—! हम वापस लएलहुँ । कतेक दिन तक सोचइत छलहुँ ओ जमीन लीअए या नहि । घरक बिलकुल लगमें छल । हमरालेल इपह मारी गुण छल । भांग आओर चकोड़क गाछ छलइक ओहि में, दू एल-भार धूर मेहो छलइक तैत । खैर, भइया तम्बाहु बला बात तऽ उड़ि गेल । कुसियारक खेती करवाक जरूरी छल ! दामे ठाकुर बला खेत सेहो ओकरे योग ।

बलचन्द्रमामा

१७१



पंछिजा साल एक बरस हाथ लागल छल ।

कूचम मिहिरानक घर वाली के एकटा पुरान गांव छलैनह । साल बेर तऽ ओकरा हमरे सोझा मे वच्चा भेल रहैक आओर मरल रहैक । आव ओकर किन्ह बस यैह बरद मिहिरानिक घर मे छलैनह । इमहरक कतेको घरख तऽ बेचारी अवस्थ छल । बरदक सेवा ओकरा सँ पार नहि लगैत छलैक । भेलै ई जे चारि दौतक लवान बरद बेहद कमजोर पड़ि गेल छलैक । जराबधला तऽ कपो रहैक नहि, दिन-राति बेचारा खुट्टा मे भान्हल रहैत छल । मसोमात एक बेर दिन मे ओकरा लोकेत छलैक, सेहो एहि लेल जे लगक पोखरि मे सँ पानि पीआवए दू मुठ्ठी पुआर मोरे आओर दू मुठ्ठी सॉफि कऽ ओकरा आगु कऽ देल जादत छलैक । ई पुआर खादत-खावत बेचाराके भुल भोल भऽ जाइत छलैक.....ओखि मे मीची, कनपट्टी लग नीचाक दिश मोड़क चिन्ह । हाऽ पंजर पर रोआदार चमड़ी मढ़ि कऽ कोनो तमशायल देवता मागु अंहि जीव के दुःखित बरदकबेडोल आओर बदसुरत शकल सेने होई । खुटाक चारु कात थोलेक जगह छलैक जे मूल गोबर सँ हरदम नील रहैत छलैक । दूरे सँ सरक सुझामल, नील पुआरक अजीब गैल सोरा नाक के छेदत अंदर चलि जइत । तीन दिश कूप के भीमीदार टाठ छलैक । अपन धुधुन सँ ओ बेचारा नहि जानि किएक टाठ के सामने छेद कए सेने रहैक । ठीक ओतवे जेहेक ओकर माथ निकलक हेतु काफी छलैक । गलाक रस्सी भरिसक भाप के आओर आगु जाय सँ रोकेत छलैक । से भैया मिहिरानि के दुःखित बरद टाठक ओहि छेद सँ माथ निकालि आबए जाय, बला दिश एक टक सकैत रहैत छल—लाचारी तथा शून्य निगाह सँ । ओहन नजारा हम कहियो नहि देखने छलहुँ.....महिनी भरि बेचाराक विषय मे सोचैत रहैत छलहुँ । बीच-बिच मे जाकऽ ऐलि अवैत छलैक—ओ अवसरस्ती जीव रहल छल । देशाती

दुनियाँक लाचारीक एक डेराउन साइन मोड़ जहाँ हमरा लगैत छल । आखिर एक दिन एना बुझाएल जे आव जै ओहि बरद सँ ओखि चारि होयत तऽ माथ फटि जायत.....पधिया भरि घात लऽकऽ सॉफि खन हम बरद लग पहुँचलहुँ, बास सामने दऽ कऽ ओकरा हम कहलियेक नहि वेदा हम तोरा एहि तरहे नहि मरऽ ह्योका । बस, बहुत भऽ चुकल ! आई सँ हम तोहर आओर रो हमर.....

ओ धिरे-धिरे घाल खाय लागल, बिनमाय उठोओने खाइत छल । हम मिहिरानि के नगीच पहुँचलहुँ । ओ आंगन मे सितलवाती ओछा कए मेवजाक सहारा सँ सुतल छलीह । भादवक गर्मी छल । बौसक खपची सँ चलल बिअनि हाथ मे छलैक । आइत पावि कए उठि बैसलीह आओर आवाज किन्ह कऽ बजलीह—की खी रे बलचनमा ?

किछु नहि मालिकिन, घात अने छलियेक थोड़े—हम कहलियेक ।

दऽ देलहिक बरद के आगो कऽ ?

हँ मलिकिनी, दऽ देलियेक ।

अच्छा.....

अच्छा नहि मलिकिनी—निसाए लऽ कऽ हम बजलहुँ—ई बरद आई सँ हमर भेल.....

मसोमात हँसऽ लगलीह । हिनका लग मे जे बलचनमा दिन भरिक धाकल अछि, ईसो-ठड्का गप कऽ कऽ मोन बहलायह आएल अछि । किछु नहि फुरलैक तऽ बरदेक बात उठा छलैक । बिअनि के मुँठ सँ पीठ नोचैत बजलीह दूर छुरहा । माझी वेद मास की ई बरद बाध काटि सकै ? मरलैक तऽ अगिला जन्म मे तोरे हर बहलैक । घास खुअने छहीक, मोन नहि रखलैक ? ही-ही-ही-ही-ही, हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ होर.....



ठहका मारि कए हसलीह भिमरनि हम मुदा मुम-मुम छलहुं । ओही की हँसैक बात छलैक मर्या ?

हँसि-हँसि कऽ जहन हल्लुक भेरीह तऽ बगलीह—के लऽजायत अहि बरद के ? चारि बग्याक खाल तऽ निकलत, हम बुधुआ ( बुद्ध चमार ) के बजबहि वाली छी । ओ आदिहए खोलि कऽ लऽ जाए देकरा, जावे तक जीअए तावे तक सबूर रखए पाछु....

नहि मलिकिनी, हम एकरा एखने खोलि कऽ लऽ जाइत छी—एतेक कहि कऽ हम छलहुं तऽ ओ मुँह लटकायऽ तंजलीह—किछु भए गेलैक एकरा तऽ नाहक भे तोरा सउवधक परामर्शित नहि लागि जावक । बाप, हमरा तऽ बड़ डर लगैत अछि ।

डर कथिक मलिकिनी ? हम कहलएक—भगवान करवाइ तऽ चारि महीना मे एकर दाँचा बढ़लि जयतेक । अहाँ किछु फिकिर नहि करब... ओ हमरा धोखा दइए, नहि मरैत अछि ।

अहि पर ओ बहलीह—से तँ जान ! किछु काँक कऽ बहलकैक—काहिह सवेरे लऽ जाइह, एखन राति केऽ डीक नहि होयतोक ।

हम कहलएक—अच्छा मलिकिनी । ओहिगति कऽ खुशीक मार हमरा नीद नहि आएल छल । एहन लगैत छल कि बहुत बड़का काज कए अएलहुं अछि....

सवेरे अगिला दिन बरद के अपना ओहिठाम लए आएल छलहुं । महीना भरिक सेवा बेचाराक सुरत...शकल बढ़लि गेलैक । दू महीनाक बाद तऽ ओ मैदान मे दीइस लागल । भादो, आसीन, काठिक आर अगहन.....चारिमासक बाद ओकर एकदमे काया पलटि गेलैक । ब्राह्मणी के ऋतेको आदमी दुमेलकैक आपस कए लीअ अपन बरद की ओ बलचनमाक बापक छैक ? जालीस-

पचचास रुपैयाँ सँ कम नहि लेब, हँ....

मिलरइमि ककरी बातक ध्यान नहि देलखिनह, हमरा सँ एक दिन कहलन्हि—वाली, बाय ई काज लेबए लायक भऽ गेलह । सभौरी हमरा खेत के तोरा जिम्मा कए देने छह, ई बरबो तूही राखऽ बाबू—हमरा ओहिठाम आएल तऽ फेर एकर उपर दशा होएतैक ।

ई मसोमान जानकोएक दया छलैक जे तोडर दोस्त बालचनद राउत बरद बना कहाए लगलाह ।

एकटा बरद रामखेलावन के सेहो छलैक । हम ओकरे सँ अपन भोज भिड़ौकहु । हर ओकरे छलैक । एक दिन ओ जीतैक छल, दोसर दिन हम । हमरा संग अपन जमीन तऽ नऽ पूछए छल । अक्सर हमर हर-बरद दोसरक जमीन मे काज अघेत छलैक, एकरा जेल चारि आना रोज बतोर भाड़ाक भेटैत छल ।

कुसियारक खेतीक लेल हमरा चुन्नीक समान ज्ञाता भेटि गेल । चुन्नी सम-वर्ष चारि-बऽ कड़ा कुसियार जरूर गोड़ैत छल । किछु मिल मे पडबैत रैयाम आओर किछुक पुई बनाबैत छल । जेद दू सो नगद भेटिए लाइत छलैक ।

बामो ठाकुर वाला जमीन बुढ़िया पोखरिक करीब पड़ैत छलैक । साठ दस बेर जोति कऽ हम खेल तैयार केलहुं । दू बेर पोखरि सँ पानि साबए पड़ल कीन हांगा कऽ । मूलला पर फेर जोतलएक । डेप सभ के भुरभुरा देखिएक । तखन जाए कऽ सोझ रेखा मे खंडी-खंडी कए कऽ कुसियार गोड़ैत गेलाहुं । हाग छलाहुं, रामखेलावन आओर चुन्नी छलैक ।

मादद देबक बाद, डाढ़िक बीच-बीच थोड़ेक-थोड़ेक पानि आओर देल गेलैक ।



महीना भरिक बाद पेंप निकललेक तऽ खुशोक सारे हम नाचि गेलहुँ । घर आबि कऽ बहुत देरी तक बरची सँ खेलाइत रहलहुँ । कुमियारक खेती है जे हम शुरू केलहुँ, अहि सँ सुगमी सेहो कृषि नहि समाएल । ओ ठेठ एकलक बेटी छल । ओकर नैवर हमरा घरक जकाँ निपट्ट उमड़ल नहि छलैक । भूलो सँ जहिवा कहियो हम बाहर जाकऽ नाकरी करक बात छवैत छलैक तऽ ओकर भौह दुलेतीक समान बनि जाइत छलैक । आओर जखन कहियो हमरा मुँह सँ सेतो-बाड़ी मे कोनो नव बात निकलै तऽ सुगमीक मुँह थलाकमलक समान खिल उदेत छलैक ।

बोलाख अवैत-अवैत कुमियारक गाछ डार तक लहराए लगलैक । अहि वर्ष समठाम कुमियारक खेती बढ़ेबाँ छलैक, कोनो रोग नहि, ने कोनो भीड़ा ।

सुन्शीजीक बेटा महुवनी-दरभंगा जाइते रहैत छलैक । एहिबेर वापस मे ओ एक नव समाचार सभोलक कि अगिला साल कांग्रेसी लोक मिनिस्टर बनि जाएताह, अंग्रेजक अमलदारी रुटि जणतैक आओर जमींदारी सेहो नहि रहि पओतैक.....

जमिंदारी छलैक ओकर नाम, परन्तु जुलाह सँ लोक बचू करैत छलैक । जाहि दिन ओ दरभंगा सँ आएल छल ओहि रातकऽ हम ओकरा सँ भेंट केलहुँ आओर पुछलैक—बचू, मिनिस्टर, कलक्टर तऽ सब के बूकऽ मे अवैत छइक, ई मिनिस्टर की होइत छैक ?

मिनिस्टर नहि, मिनिस्टर ! ओ हँमि कऽ बाजल कानून कायदा के अमल मे लाबएक लेल मामूली हाकिम सब के देखभालक लेल आओर सुलुकऽक सरकार के चलावए के लेल मेम्बर लोक अपनो मे जोड़ि दस पाँच आदमी सब मे मुखिया चुनैत छथिन्ह बेह मिनिस्टर कहबैत छथि । सब मुहुक मोट दऽ

६५ लाखी करोड़ो मे सँ पैकड़ो कें मेम्बर चुनैत छैक । सैयो मेम्बर अपना मे ई दस-बीस पर सभ काज चलाबक जिम्मेदारी लैप देत छथिन्ह केर हुनके प्राइमरक मुताबिक लोक सब किछु करैत छथि ।

आब हमरा समझि मे आबि गेल कि मिनिस्टरक की मतलब होइत छैक स्वामी जी कहने छलाह कि जमींदार लोक कांग्रेसी बनि कऽ किसान सब के ठकैत फिरैत छथिन्ह । हमर भाषा ठनकऽ लागल की पैह जखन मिनिस्टर भए जयताह तऽ गरीब सब के भलाई रहैतैक अहि सँ वा बड़का बड़का बाबू लोक सब के ।

बचू सँ इहो बता लागल की कूल बाबू सेहो मेम्बरीक लेल डाढ़ होए-ताह, कांग्रेसी अही इलाकाक लोक सब सँ भोट दिया कए फूल बाबू कें सभेभलीक मेम्बर बनावए चाहैत छन्हि ।

हम सोचए लगलहुँ, भए सकैत अछि कि मेम्बर बनि चुकला पर हमर छोटकी मलिकाइन के पैह भतीजा बाबू मिनिस्टर सेहो भऽ जाइथ; तखन तऽ भेल । भूदड़ोलक बाद रिलिफ फण्डक रुपया लए कऽ ई बाबू ताईन हमरा बस्ती मे जेहन खेरात बोटल गेल छल तेसर साल, से बाहीं के चताए चुवल छी भैया । एहन मेम्बर सँ तऽ हमरा ईलाकाक बंटबारा भऽ जाइत, तऽ पानि मे आगि लागि जायत.....

गाँव मे रोज दू एक टा अखबार आवऽ लागल । पटना सँ सात-आठ दिन पर निकलऽवला अखबार 'काँति' किसान आओर मजदूरक विषय मे खुलि कऽ लिखै छलै । ओकरा पौंती-पौंती सँ असन्तोषक चीन्गारी नीकलद छलै । दू रुपैया पठाक ओ अखबार पहिले बचूपू भंगवाएक हुनर कएलक । ओ कहकैक जे महपूराक किसानक विषय मे क्रांति मे कइयो बेरि छपि गेल छैक । कांग्रेसी अखबार वा सेठ जमींदारक अखबार एहन खबर, जे बिह-



रिश्ते का मद्द्द खपवैत छथि।

'क्रान्ति' मंगल का नीकलेत छैक। हमरा बस्ती मे विरहस्पति आओर  
लोक कू समक रई डाकपुन केँ अएवाक। बचू केँ ई अखवार विरहस्पतिक  
मेठि जाइछले। ओइदिन सौंसक ओचरा बैठक मे मेला जुटेत छलैक।  
लालटेन जरा कऽ बचू हमरा हमकेँ क्रान्ति के विषय मे सुनवैत छलाह।  
हूनस बलामे पाँच छ गोटे सऽ छला तारानन्द बाबू, बंभोल का, रमकेलोन,  
तीरी अमाए, कपिलेश्वर मङ्ग आओर हम। कहियो कहियो चुन्नीओ शामिल  
भऽ जाइत छल। तारानन्द मासूजी रहस्य छलाह, कर्ज-वर्ज नहि छलै। बंभोल  
का केँ छलनि पहलमानिक लोख... भागस बढियाँ करे छलाह, खानकऽ गोम  
आओर माँझक। घरक गरीब छलाह, दरभंगा—गुलफरपुर रहि रहि केँ  
धीक-धीक मे होइतक नोकरी आओर जमींदारक ओहिठाम कुस्तीक दावपेच  
देखबैत छलाह। तीरी, कपिलेश्वर आओर रामखेलान हमरहिजेका ज़ापा  
खेतमशूर आओर ज़ापा किसान छल। बचूक बाप चुन्नी बिहिन बिहारी  
लालबास मधुबनी इस्टेट मे एकाउन्टेन्ट छलाह। बढियाँ आगहनी छलै।  
तऽ हमर ई मंडको मन लगाकऽ बचूक मुँह सँ एखबारक एक-एक पॉति सुनत  
करे छल.....

किछु दिनक बाद बचू कतहु मरिसक रहमान साहेब क पास छँ, किसान  
समाज रसीद छडाऽ अनजक इकनी दस अथकटी लेह, बस आइ तँतो किसानक  
मेम्बर बनि गेलह।

अपना टोल मुहला मे हम दस आवगी मेम्बर बनेलियेक। मसोमात कुन्ती  
सुनलेनिह अपने आबि कऽ इकनी दऽ मेलीह आओर रसीद सऽ मेलीह। कहलनि  
बाला देवताक इसादक हेतु इ चूडकी नरि चिक्कस हमरे करीबीनी के।

मसूचा गाँव मे पचास-एक मेम्बर छलाह होएत। महाराज किसान केँ

मुहारेक इएह अवसर छलै। मालिक आओर पेय-पेय किसान केँ छोड़ि कऽ  
पौकी सभक दिलचस्पी मड़ोसीक दलाकाक आन्दोलनक तरफ रहैक। मनियार  
काका हँ शेखअबदूल तक, तारानन्द बाबू सँ लऽ कऽ तीरी अमाततक आओर  
हूदर मिलीरक मसोमात सँ मेभीन मसोमात हमीदा तक... सब मेम्बरी रसीद  
लेलनि आओर एक-एक आना देलखिन।

महिला मालिक तथा बस्ती बाबू अपना खिलाफत आन्दोलन केँ ओना-  
मासी धंग बुझलाह। छलैहो बात ठीके। हीनका सभक खुद दर रूत पर जमला  
एवाह भऽ गेल छल। एक टाका बप भरि मे छेद-गोमे दू टाका आओर एक  
मन धान मास-बूह मास मे छेद मन भऽ जाइत छलनिह।

छोटका जमींदार तँ आओर कलाह होइत छैक, एक सऽ करैसि फेर ओहि  
पर नीम चढ़ल। किछु नहि पछू भैया! मझिला मालिक भारी कंजूर  
छलाह। तो देखतहुन सऽ कहि उठितह दायराम, मैस बोली पीयर-बौस... इएह  
हेदलाख टाकाक बाधनी छथि?

ई भैया, इएह छेद लाखहुक मालिक छथि बाबू जसोवर चौधरी...  
आओर बिहिनो बाबू केँ जगानी भीरानी लगभग पचास हजार टाकाक छल  
होएलैक। मझिला मालिक केँ अपन खेत छलैन चारि से बीघा।

मालिकक चारु पट्टीक छेद हजार बिघा काइत जमीन धेनीपट्टीक जलवीक  
छलैन, जकरा ओतेक किसान मुशोभित कएने छल, आओर हिनका सभकेँ  
मालमुजारी भेटैत छलैन। एतऽ अपना ओहि ठाम छेद सेह बीघा जमीन रैयत  
ओसैत छल, मनहूँडा। दोसर दिस जालफरेब सँ छोट किसानक भरोसी जमीनक  
अधिक हिरता मझिला मालिक पहिनहि हरपि मेने रहथिन। किछु बाबू  
केँ जमीनक छेदरे चौघाह हिस्सा बेइमानीक प्रलाद छलैन। हूनकर परबादा  
भारी पंडीत छलखिन, पच्छिम सँ खूब कमा कऽ अगने छलखिन। दादाक



पाँच हजारक सम्पति पोताक अमल मे आवि कऽ एक लाखक भऽ गेलइन ।  
 दस एक हजारक बचत तामुरदु मे हाथ लागल छलैन बिल्ली बाधू केँ । स्त्री  
 एहन मागमंती के नाय-बाप केँ एके सन्तान ।

ओ एहि विषय केँ सोचिओ नहि सकै छलाह केँ कि मालिकक मुकाबला  
 केल जाय सकैथ । महपूराक किसानक लड़ाई सँ हमर ओखि खुजि गेल हम  
 इ तऽ कऽ लेलहुँ जे बिल्ली भरि जमीन आव मालिक केँ हरपऽनहि देखै ।

गाँवक पड़िठम, एकदम करीब, खेतक एक टा बड़ियाँ टुकड़ा छलइक  
 नब्बे बीघा केँ । एहि जमीन मे सब किछु उपजैत छलइक । धुनी, मरुआ,  
 सरिसोओ, कुतियाओ, तिसीओ, राइडिओ, अब गहूम सेहो, ऊड़ीद सेहो, दुधौ  
 सेहो । इ जमीन तीस-एक सुपलमान चार आओर मलाह समक अधिकार मे  
 रहैक परँन चलायकी सँ मालिकक परदादा एकरा अपना नामे चढ़ाया छेलखिन ।

ओहि तीसो किसानक नाम एक दिन एकाएक अदाशतक सम्मन अएलइक  
 तऽ गाँव भरि मे बिजली दौड़ि गेलइ । कागज देखला सँ पता चललइक जे  
 चारि वर्ष पहिले बैसी मालगुजारीक नालीस कऽ देखलइक मालिक ।

परेशान करवाक ई एक टा बड़िया बहाना छलैक, किसान मालगुजारी  
 सालक साल देत आयल रहैक ।

हमर विचार भेल जे सम्मन तऽ ली परंच कचहरी कियो नहि जाइ ।

तीसर दिन बरहम स्थान मे लोक जमा भेल । हम महपूरा जाय डाक्टर  
 रहमान केँ बजा अनलिबनि पचास-एक किसान मिलि कऽ उपथ खपलहुँ  
 जमीन नहि छोड़व, चाहे किछु भऽ जाय । बचू केँ ठिकरेटरी बनाएल गेलैक  
 हम बगलहुँ उपवेशकक मुखिया—कौथ सँ पहिनहि सरदारी चुनल गेलाह ।

मालिक सब केँ रुपयाक बल रहैक, दरोगा, एल० डी० ओ० आओर  
 कलक्टरक बल छलइन । ओ सुरु मे एहन चालि चललाह जाहि सँ किसान

हिममत दारि कऽ बैसि जाथि ।

फसिल तैयार भेलइक तऽ ओहि पर दफा १४४ लागि गेलइक । दू सोरी  
 मिलेटरी आएल । जमीन नजदीक बला धगीचा पर ठम्बू तानि गेलइक ।  
 खेत पर पहँडा पलइ ।

एहन मोका पर मनोभाव हमोरा बड़ बहादुरी देखलकैक । जकर ई जमीन  
 रहैक ओहि किसानक ओहि ठाम तँ दस-पन्द्रह टा जनाना केँ बना कऽ लऽ  
 गेलैक आओर चारि कछा तैयार फसिल धान काटि लेनक । जारक राति  
 शकड़ जरि रहल छल । क्यूटी बला दूनु सिपाही गाड़ पर ओठगल सतत रह्य ।

महपूराक किसान खुशाम दिन दहारे फसिल काटय चाहलकैक, जाहिमे  
 एक आधमीक खून सेहो भऽ गेलैक । अपना ओहि ठाम हम सब बदलि गेलहुँ ।  
 जमींदार जोर सरकारी अफसर दुयोधन ठहरलाह हुनका पुबिधिर, परास्त नहि  
 कय सकै छलखिन भैया । पिटाइ पर पिटाइ खावथ आओर भेड़ बकरी जँका  
 जेल चलि जायथ बहादुरी नहि । एहन सीधाई सँ पूजा होऽ तँ जमीन मुइयोक  
 नाक भरि भेटबाक नहि रहै ।

दरोशा पड़ोसक सुसहर के फसल काटयक हेतु तैयार कएलक तँ हम, बचू  
 तीरी बगैरह हाथतारि कऽ समझोलियइ । बड़ सोझ सोझ आओर ईमानदार  
 होइत छथि । हमर मध्य मानि गेलाह—बनलाह हमरा मुखिया सँ कारिह  
 मालिक कहलकैक दूई बीघा हम तोरा, आओर बाँकी आधमी के घर पिछु दऽ  
 कछा क खेत लिखि दैत दिऐक, कतेक घर छै तौ सब इ..... मुखिया साक  
 कहलकनि नहि सरकार दोसरक पेट काटि कऽ देव तऽ नहि दिय । हँ, अपना  
 खेत मे तँ देखए चाहैत छी तऽ डीक छैक...ते हम तोहर फसिल कोना कऽ  
 कटवइ ।

सुसहरक गुँह तँ सहानुभूतिक बात सुनि कऽ हमर भीना आरी चोड़ा



अस गेल भैया ।

अफसर सभ सोच विचार में परि गेलाह । किसान के एकता सोरवाक चालि सेहो चलल गेल रहैक । मालिक दिस सँ आओर बिहारी बाबू सन पैसा बिद्वान दिस सँ सेहो किसान सभ पर दबाव डालल गेल रहैक । मजिस्टर आबोद एम० जी० ओ तऽ बीच बीच में अखिलहि छलाह । मालिक अपना मुन्शी बला हिसाब भीरेनहि छलाह । मिलेटरी वाला फमिल कटवा कऽ कौभक लग हेरी कैल गेलहक ।

माय के आओर सुगनी के मलिकारन अलग-अलग सँ बेता कऽ दुधल-खिन आओर कहलखिन बिद-बालचन अपना हरकत के नहि छोड़ल तऽ घर फूँकवा देबोक.....

एकदिन नोङायल आँखि सँ माय आबि कऽ बैसल । हम धौलती में ठुफा पीचि रहल छजहु । पूछलियेक—की लोक माय ?

ओ कहलक—मलिकारन तोरा पर बड़ तमसावल छथुन कहलखून जे जे संच मंच सँ नहि रहत तऽ घर फूँकवा देबोक ।

घर फूँकवा देती—हम कहिक कऽ बजलहुँ—हुनकर चापक घर छैन्ह ! जो बैस...नेल की कर छलेह ।

कोरा में गरमा कऽ मूंगरिया सूति रहल छल, मूंगिया हमर मुनी । अश्वारह नामक बेटी । हमर कहकल आवाज सुनिह ओ जागि गेल आओर कानऽ लागल । ठुफाक खोली हम टिका देलियेक । माय अन्दर चापिस चलि गेल तऽ बाजल—बागल कहीं केँ । घर ककरो फूँक देब लोक बाह छेक ? हमरे की जमीदारक घर चलत जे ओ सभक घर फूँक देथिन ।

मुंगिया केँ लऽ जा कऽ हम सुगनी लग दऽ अएलियेक । लाठी चढलहुँ आओर कलि परलहुँ आखामक दिह । सुगनी चलैत काल मना कयलक तऽ हम

स-हलियेक दत् एतेक बेरावे किएक छै ।

आखरम बरहम स्थानक लग सिसवोनी में छलह । शेख अन्दलक अपन मामा आओर ससुर शेख सकदमक चिरासत में ई जमीन भेटल छलह पन्नेह ठा । आखरमक हेतु समूचा सीतवोनी शेख दऽ भेलकैक । अचू आओर ममोल आ बॉल देखलिनह । चूली बाप के तमसाएक घर सँ दूब ओक नार देखकैक । हम ताबेक सेर भरि जोर ।

हम ओतऽ पारी पारी सँ सूतेत छलहुँ । ओहि राति हमर पारी, अचू ममोल भा आओर शेख डेढ़ पहर राति तक रहलाह—चीन में अलाब छलैक । एकान्त में चारु बीस बैसकऽ रोज राति तक विचार कएल जाइ छलहक । ओहि राति एकटा नव खबरि हुआएल—रेयाम कोठीक चीनी मिलक मैनेजर पर अपन पीसा (छोटका मालिक) केँ कहला पर फूल बाबू बवाब देखलिन अखि जे कि रामपुरक फला-फला किसानक कुसियार महि जेन...

हमरा सभक हेतु भारी मूसीबत आवि गेल छल । हमरे सन बीसीक कुसियारक फलज तैयार रहै—बड़ निमन फसल । तब भरि सँ एहि फसल पर आश लागैने छलहुँ । एक-एक किसान अपन मोनी भरि करीब पसीना मुखेने होयत तहन आकऽ कहीं ई रत भरि घर तैयार गेल । ककरो सय, ककरो दूह सय, ककरो पाँचसय तक भेटऽ वाला छलैक, पही पैसाक बल पर जाकिम जमोन्दार केँ सेहो हम सभ पखने सँ अँठडा देखवैत छलियेक ।

धानक सैकड़ी मन फसल मिलेटरीक कब्जा में एले आओर कुसियारक एहि खेत पर एहि तरहक संकट महरा रहल छलैक... ओ सभ चलि गेल छलाह । हमरा अजी काल तक निन्न नहि गेल । दूई स्वयंसेवक—कहिओ-कहिओ चीन, चारि, पाँच तक—ओतऽ दिन राति लोक रहे एल्लेक परस हमरा सेहँ एक-केँ पार सँ बेरादेरीक ओतऽ सूतव जल्दो रौक । ई दूनु स्वयंसेवक भाइ



देकुल से पठाएल गेल छलाह । ओतु जमीनारक खिलाफ किसानक मोर्चा  
बढ़ गजबूत रहै । एतहु जोरदार अंदोलन होबक हेतु छलैक, एहि हेतु  
किसान समाज खिलाफ-कौन्सिल गुरु मे दू नवजवान के हमरा बीच पठा-  
लक । तीधा-सामीथी, साग, सब्जी, नून, तेल, लकड़ी, फटा, धी, हाड़ी  
थड़ा सब इतनाम आसरम में हमरा समदिस से छलै । ओ भोर साँझ हमरा  
नवजवानक आगू-आगू नारा लगवैत फिरैत छलाह—गाँवके अन्दर ओओर  
सगरा बासी जमीन क चौगिरी से हो । कहियो-कहियो पास-परोसक धस्ती  
मे जाक ओलोक एतुका हाल कहि अविश्राम, आ सगे सुट्टीया अनाज सेरी  
सुलुलैत अविश्राम । इफ्त मे दूदण बेर परोसक गाँव मे नीकलितथि ।  
तेओ खुब प्रचार भऽ गेल छलैत ।

मोर्लाटियर भाइ सूति रहल छलाह आओर हम चिन्ता से सूति नहि सकै  
छलहुँ । पोआरक मेलावट पर परल जहर रही । मठपूराक एक किसान जान  
से मरल छल, एतहु ककरो पास खति तकै छलैक—हम सोचैत छलहुँ—ककरो  
किएक कतेको के पास खति सकैत छइक । ओहि मे हमहुँ भऽ सकै छी ! पैजा-  
प्लेग एकरैत छैक तऽ ओहि मे आदमी तरपि तरपि कऽ मरि जाइत अछि,  
विपथर साँप कटे छइक ? नाथी हमेशाक हेतु हूँ जाइत छइक, चीनाता मे  
कोली महारानी कि कजला मे राताराती कतेको के अपना घेठ मे तय लइत  
छथिन, बिजलका ले के छइ आओर बेजर ( बज ) खसैत छइक तऽ ओहि मे  
ककरो जानो चलि जाइ छइक—बचीक गोल-हंसीक चेहरा नजबि पर नाक  
तागत—सूपनीक खिलखिलाहट काम मे अंजि छलैत—मायक हाथ तरहरथी  
गाल पर फिरैत धुकाएत । सोचैत-सोचैत माया इन-इन करय तागत तऽ हम  
छडि गेलहुँ । गंजीक उपरका जेडी मे बीरी परत छल ओकरा निकालहुँ बाओर  
बाहर पतानी मे आबि कऽ बैसलहुँ आँगूर से छटा कऽ देखलहुँ तऽ अन्दर

आगि छलइ ।

दू सुट्टी पुआर ओछाओन मे सँ खीच अनलहुँ घूर से चीनगारी निकासि  
झुकि-झुकि कऽ पुआर धक्कयलहुँ आओर बीरी सुलुलहुँ ।

आब ऊपर आकाश दिस सँह कएलहुँ, एकटा बड़का बूढ़ शीशोक माथ  
झुकि आयल रहैक ठीक हमरे माथ पर । इनोरियाक तेरस रातिक दूपहर  
छलइक । गाँव-घर, खेत बाग, बड़, पीपड़, तार सब फक-फक । सब धोल  
सभ लउधर, मभ साफ, ! धक-धका कऽ वेतुव पहल धरती पर सन्दूमा भरि-  
भरि मूष दूध उल्लिखत छलथिन । बच्ची बाबूक बेमक बला नथका खपरैल  
मकान हाले मे चूनेटल गेल छलइ, ओ तऽ समसँ अधिक लउधर लगइत छलइक ।  
ऊपर नामूली खपरा एक पौति छलैक तऽ दोसर लउधर खपराक । ओइ  
मकानक चार एत तऽ पगने नजरि लोचैत छलैक परंच एखन बड़ा गजब  
करै छलैक । पास-परोस मे चारि छ कोम तक ओहन खूबसूरत मकान आओर  
कोनो नहि छलैक । अपन मइया भला कोना देखाइत ।...मकिया मालिक  
आओर बच्ची बाबूक मकान लग पोआरक तीन-चारिटा टाल रहैक तार जिका  
उँचाइक गोत धर बूझ । दू हुँ हुनका जमीन जायदादक सभ से देव गवाह  
इएह छलै कोनै ?

जखन-जखन कूकरक आवाज सँ रातिक सन्नाटा टकरा जाइ तऽ हमर मन  
अपना खोल मे लोट अविश्राम । बूढ़ शीशोक झुकल माथक छौह से हिल के एक  
प्रकारक तलछी भेटैत छल, तगे छल जे अपने कोनो पुरखा आशीर्वाद दऽ  
रहल होऽ—एना माथ पर झुकि कऽ । जाहि नर रास्ता पर हम रैर बढे  
लहुँ अछि ओहि पर चलि जायक हेतु एतेक माक इशारा पाबि कऽ हमर रीढ़  
एकदम सोझ भऽ गेल । सीमा तनि गेल छल बाँहि कैलाक किछु काल तक  
अपन छाडी देखैत छलहुँ.....



आब दिमाग हलचुक भऽ गेल छल पैर अपने आप आश्रमक मड़ैया दिस  
बढ़ि गेल। अन्दर आवि कऽ गोआरक ओहि पंचायती ओटाओन पर दूति  
रहलहुं, टटोलिकऽ गरांत डिकिया जेतहुं ओ अपना जगह पर ओहिना पड़ल  
छले.....

आश्रम मे नूकाकऽ हम सभ एकटा गरांत रखै छलहुं। मालिक के खुनी  
नीगाह सँ हम नवाकिक नहि छलहुं। बच्चू, बम्भोल, रामखेतावन, अब्दुल  
आओर हम—हमरा पांचो गोटे के पुलिखी फंसवऽ चाहैत छल, मालिकी  
हमरा अपंग बनएवाक मनसूबा बन्दैत छलाह। खुनाब मे कायेसक भारी जीत  
भऽ गेल छलैक। अचेज हाकिमक बदला आव स्वदेशी गिनीस्टरक हुकुमत  
कायम होमऽ जाव रहल छलैक। सन् सेतीम (१९३७ ई.) के शुक्र होई  
होइत कायेसी जमींदारक भाई बन्धु आओर सार सहर मूँध पर ताब देबअ  
लागल छलैक।

कायेसी जमींदारे के कायदा करतैक—स्वामीजीक ई बात हमरा रग-  
रग मे समा गेल। हम पुलिखी के चिन्हैत छलियेक आओर जमींदार लठैती  
के—जमींदारक सह पावि कऽ पुलिखवला हमरा तरह-तरहक मूकदमा मे  
फंसवय चाहैत छलाह। मालिक कनी नजरि मुंशीक हीनाबी नजरि एलैह।  
जमानाक रफ्तार के परखवाक अखिल हुनका मे कहाँ सँ अस्तित्व। हुनकर  
खयाल छलैक जे प्रस रामपुर में पांचे आदमी के कायू मे रखवाक काज छैक—  
नहि आवऽ कायू मे तऽ नारपीठ, जेल, सुन.....जेनाहोए रास्ताक कांठी  
हटावी। राति दिन आठो पहर अपना दिस, अपना जनताक निगरानी दिस  
हमरा दिस सँ चौकसी रहलैत छलैक। इ गरांत ओहि चौकसीक एकटा सङ्कट  
अछि।

दूनु स्वयंसेवक देखवरि छलल पड़ल रहथि, एकक नाक बजैत छलैक, फो

करै.....करै...फो...फो...क.....

आमा बाहिक सिरमा बनायक हमहुं ओहि बन्द कएने छलहुं। नीके  
आबि रहल छल की चोरबत्तीक तेज रोशनी बांखि पर पड़ल हम भरपड़ा केह  
छठि बैसलहुं। एक हाथ सँ गरांत सम्भारति कहिक कऽ बजलहुं—कैह  
तोहर बाप—आबाज आएल एहन—मारि देऽ गार के, लगा।

स्वयं सेवक के भक-भोरवाक समय नहि रहल। हम गरांत कऽ कऽ खिपकी  
लहुं बाहर। दस हाथक दूरी पर दूटा कारी मंजीठ आदमी देखब पड़ल दूनु  
तेयार टाढ़ छल। “चोर-चोर” चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो  
ओर “दोर चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो चोरो  
ऊपर मोछ फसवऽ बला जाल केकलक। हब ओहिना हला करैत रहलहुं। हाथ  
पैर एकदम जाल मे फसि गेल छल गरांत बेकार छल। एकराबेदाद। हथक  
ऊपर चारिटा लाठीक भरपूर वार पड़ल। गरांत सँ जाल के केहरिपहोआम  
काटि जहर देलियेक परंच ओहि सँ हमरा कोनो मदद भेटल होए केबल सँधि  
एतबहि मे मारिक दोसर दोरि शुक्र भऽ गेलैक। वो होइतपनि नहि  
रहै ओकरा पाछू ओओरो कलेओ आदमी रहै जे पलानी के अन्दर धूमि मिश्रित  
इम्हरका एक मुँह सँ निकलले—बलचनमा, माफी मागि चली। मालिकक  
निष्कारण कऽ जाव  
ओहि ठाम।

दोसर आवाज अल्लैक—ने ने एना नहि कर! चालिक माफी मागि चले तऽ  
सहर मंथुर कऽ लेत आओर पाछू निपत्ता भऽ जायत सार।

हम कहलियेक—हम तोहर की बिगारलियह अछि। तूँ मेहनति मजूरी  
कऽ कऽ पेट पाले छह आओर हमहुं। जाल हटालैह आओर बांनिह कऽ तऽ  
चलऽ जहाँ तऽ जयवाक होऽ.....

ओकरा भरिसक बाजब मना कएल गेल रहैक। डीलबोल, काफ़ी मोटाएल



जप...

DATE DUE

श्रीहि मे

सँ एक गोटेक हाथ अपना लग पावि क हन जाकरा कब्जा मे दति काटि लेलियेक । बाप-बाप करति ओ ओतहि खसि परल तैओ ओकर कब्जा हम नहि छोरलियेक ।

जीवन अनमोल चीज छेक भेबा । परंच एहन गौका पर अपन कीमति की होइ छेक । कहिओक जे हे ।

श्रीहि कास मृत्यु के सोझा मे देखिकऽ चिरनी जँका हमर दिमाग नाचि रहल छल बेटी, घरवाली माय, कुसियार क फसिल पलानी मे सुतल भोल्टियर जिनका मुँह में भरिसक कपड़ा ठूलि देल गेल रहैक आबोर कमाएवला खाएल, एकर चलति जे कि किछु होई.....घरती ककर १ जे जोडए, बाचन करए तकर । किसानक आजादी आकाश सँ लतरि कऽ नहि अएतैक । ओ परगट हएत नीचा—जोतल घरतीक भूरभूरा देव के कोरि कऽ.....बुढ़ा शीतो एखनो तक हमर माथ धुमेत छल.....।

की एतथहि मे आश्रमक पलुआर सँ एकटा आदमी आरल ओकरा हाथ मे नेपाली खुलरी ( तरुआरि ) छलेक ।

हम बान्हल छलहुँ । जाल सँ सभ अंग ओझराएल छल । हँ दति सँ एक गोटेक कब्जा चपने रहियेक ।

पहिलका हमरा माथ पर जोर हँ लाठी मारलक एक दहि, दोसर बेर... हम बेहोश भऽ क जमीन पर लुढ़कि गेलहुँ !



Mai-256



MAI-256  
87-1-473

08/12/2008